श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

# कुब्जा सुन्दरी
और
# दूसरी कहानियां

[श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य की सोलह मौलिक
कहानियों का संग्रह]

अनुवादिका
श्री. शान्ति भटनागर, एम्. ए.

१९४६
सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

# लेखक की ओर से

ये कहानियाँ मूलतः तमिल में लिखी गई थीं और विभिन्न तमिल पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थीं। इनका अँगरेज़ी अनुवाद मेरे पुत्र स्वर्गीय डाक्टर सी. आर. रामस्वामी ने किया था। उसीके आधार पर श्रीमती शांति भटनागर ने इनका हिंदी रूपान्तर किया है।

ये कहानियाँ सन् १९२५ से लेकर अबतक भिन्न-भिन्न अवसरों पर लिखी गई हैं। यहाँ वे तिथि के अनुसार क्रमबद्ध नहीं की गई हैं।

नई दिल्ली,
दिसम्बर, १९४६

—च० राजगोपालाचार्य

# सूची


| | पृष्ठ |
|---|---|
| १. अर्द्धनारी | १ |
| २. कुब्जा सुन्दरी | १३ |
| ३. मनहूस गाड़ी | २८ |
| ४. पुनर्जन्म | ६० |
| ५. स्पर्धा | ८७ |
| ६. भविष्य-वाणी | ९५ |
| ७. पश्चात्ताप | १०१ |
| ८ मा | १०७ |
| ९. शान्ति | ११७ |
| १०. देवयानी | १३३ |
| ११ चुनाव | १४७ |
| १२. देव-दर्शन | १५९ |
| १३. अबोध बालक | १६४ |
| १४. सीताराम | १६८ |
| १५ पटाखे | १७५ |
| १६ जगदीश शास्त्री का सपना | १८३ |

मा-बाप का देहान्त हो गया था । अब वह बीस साल की थी और अभी तक क्वारी थी। जब कभी गोविन्द राव अर्द्धनारी के घर जाता तो पकजा भी उसके साथ जाती थी। अर्द्धनारी भी गोविन्द राव से मिलने आया करता था। इस तरह उसे और पकजा को एक-दूसरे से मिलने का अवसर मौका मिलता था। गोविन्द राव को भी यह देखकर खुशी होती थी कि ये एक-दूसरे को चाहते है। वह अक्सर अपने मन मे सोचा करता—"क्यो न इन दोनो का ब्याह कर दिया जाय और ये यही बस जायँ ?"

एक दिन गोविन्द राव ने अपनी बहिन से पूछा—"पकजा, क्या तुमने कभी अपने ब्याह के बारे मे भी सोचा है ?"

"इस बारे मे मेरी कोई खास दिलचस्पी नही," पकजा ने उत्तर दिया।

"तो क्यो न तुम्हारा ब्याह अर्द्धनारी से कर दिया जाय ?"

पकजा ने इस प्रश्न पर कोई आपत्ति नही की, लेकिन उसने इधर-उधर की चर्चा छेडकर बात टाल दी।

कुछ हफ्तो बाद जब अकस्मात् यही चर्चा उसके सामने फिर छिडी तो उसने अपने भाई से कहा—"तो क्या गोपू, तुम मुझसे ऊब गये हो ? क्या मै तुम्हे भार मालूम होने लगी हूँ ?" यह कहकर पहले तो वह हँसी, पर बाद मे फूट-फूटकर रोने लगी। लडकियाँ, खासकर वे जिनकी मा मर चुकी होती है, बडी भावुक होती है।

"पगली कही की ! जी ऊबने और भार मालूम होने की क्या बात है ? मुझे तो बस इतना बता दो कि तुम ब्याह करना चाहती हो या नही। अगर तुम नही चाहती तो इससे मुझे बडी खुशी होगी, क्योकि उस हालत में तुम हमेशा मेरे साथ रह सकोगी।" यह कहकर गोविन्द

राव ने पकजा के आँसू पोछ डाले। कुछ रुककर उसने फिर कहा—"माँ तो अब रही नही, पकजा! इसलिए व्याह के बारे मे तुमसे पूछने और तुम्हारे मन की बातो का पता लगानेवाला अब मेरे सिवा और कौन है ?"

"जब ब्याह का वक्त आयगा तो करा लूँगी, अभी से वहम करने से क्या फायदा ?" पकजा ने कहा।

"ऐसा लगता है कि तुम दोनो एक-दूसरे को पसन्द करते हो। जब हमने जात-पाँत का विचार ही छोड दिया है तो क्यो न तुम उसके साथ ब्याह कर लो ?"

"हाँ, हमे जात-पाँत से तो कुछ नही करना है, लेकिन अभी यह तो नही पता कि इस बारे मे उनका क्या खयाल है।"

"इसकी चिन्ता न करो, तुम-जैसी पत्नी पाकर तो वह अपना अहो-भाग्य समझेगा।"

गोविन्द राव को विश्वास था कि इस दुनिया मे उसकी बहिन की बराबरी करनेवाली और कोई स्त्री नही।

चर्चा जब अर्द्धनारी से छिडी तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। लेकिन एक क्षण बाद ही उसका मुँह उतर गया और वह बोला—"यह कैसे हो सकता है, गोविन्द राव ?"

"क्यो ? अडचन क्या है ?"

"कहाँ मेरी जाति और कहाँ तुम्हारी !"

"ओ, जाति का सवाल ! वाहियात !" गोविन्द राव ने जोर से हँसकर कहा। "कौन ब्राह्मण है और कौन नही ? हमने तो ऐसी बातो के बारे मे सोचना मुद्दत से छोड रखा है। अगर तुम दोनो एक-दूसरे को पसन्द करते हो और व्याह करने का पक्का इरादा रखते हो तो जात-पाँत के बारे मे चिन्ता करने की कोई जरूरत नही।"

अर्द्धनारी ने गोविन्द राव और पकजा से कह रखा था कि मै कोयमुत्तूर जिले का एक शैव मुदलियार हूँ। शैव मुदलियार ऊँची जाति के शाकाहरी अब्राह्मण होते है। एक बार भयवश अपने को शैव कह चुकने के बाद अर्द्धनारी बात बदल नही सका। उसे अपनी जाति के बारे मे सच बात बताते हुए लज्जा आती थी। दिल्ली मे कुछ लोग उसके बारे मे जानते थे, किन्तु बग्लूर मे किसी को पता नही था।

"पकजा की क्या इच्छा है ?" अर्द्धनारी ने पूछा।

"मालूम होता है कि वह तुम्हे पसन्द करती है। मेरे सवालो के उसने जो जवाब दिये उनसे पता चलता है कि वह राज़ी है।"

"क्या यह अच्छा नही होगा कि मै खुद उससे बाते करके उसका इरादा मालूम कर लूँ ?"

"हाँ, हाँ, क्यो नही ?" गोविन्द राव ने उत्तर दिया।

इस तरह बात टल गई। अर्द्धनारी ने निश्चय कर लिया कि चाहे कुछ भी हो वह पकजा को सारी बाते ठीक-ठीक बता देगा, किन्तु बाद मे उसका यह निश्चय ढीला पड गया।

"मै बेकार क्यो उसे ये बाते बताऊँ?" अर्द्धनारी ने मन में सोचा। "अगर मै ऐसा करूँगा तो पकजा और गोविन्द राव दोनो मुझसे घृणा करने लगेगे। वे कहते तो ज़रूर है कि वे जात-पाँत का भेद-भाव नही मानते, लेकिन अगर उन्हें मालूम हो जाय कि मै अछूत हूँ तो वे कभी राज़ी नही होगे। इसके अलावा वे मुझे झूठा समझेगे।"

अगले दिन उसने इस विषय पर फिर विचार किया और सच्ची बात कह देने के इरादे से वह गोविन्द राव के घर की ओर चल पडा। परन्तु रास्ते में उसने अपने मन मे फिर सोचा—"जब हम दोनो एक-दूसरे को प्यार करते है तो क्यो जात-पाँत के चक्कर मे पडे ?

''क्या तुम मुझे सचमुच पसन्द करती हो?''

इस सामाजिक अन्याय को हम प्रोत्साहन ही क्यो दे ? जाति किसने बनाई है ? क्या सब ढोग नही है ? मै क्यो इस वात को इतना महत्व दूँ और पकजा से इस बारे में वातचीत करूँ ? उन्होने मुझसे साफ-साफ कह दिया है कि उन्हें जात-पाँत की चिन्ता नही। फिर मै ही क्यो इसकी चर्चा करूँ ?" अन्त मे अर्द्धनारी ने सत्य को दबा देने का सकल्प कर लिया।

"क्या तुम मुझे सचमुच पसन्द करती हो ?" उसने जाकर पकजा से पूछा। "क्या हम ब्याह कर लें और सुख के साथ रहें ?"

"लेकिन क्या तुम ऐसा चाहते हो ?" पकजा ने पूछा।

अर्द्धनारी का पिता मुनियप, उसका भाई रग और उसकी मा कुप्पायी सब कोवकलई गाँव मे चेरी (अछूतो के मोहल्ले) में रहते थे। अर्द्धनारी पहले दिल्ली से और फिर बग्लूर से उन्हे हर महीने बीस रुपये भेजा करता था। उनके लिए यह एक राजसी रकम थी और वे बडी मौज से गुजारा करते थे। उन्हे यह पता नही था कि अर्द्धनारी कितना कमा रहा है, लेकिन हर महीने बीस रुपये पाते रहना वे अपने लिए बडे सौभाग्य की बात समझते थे। दुर्भाग्य से मुनियप को शराब पीने की लत थी। जब उसे हर महीने रुपये मिलने लगे तो उसकी यह लत और भी बढ गई। रग इस बात को पसन्द नही करता था, लेकिन वह बाप को रोकने में असमर्थ था। वह एक गाँव के स्कूल में मास्टर था और अभी तक अविवाहित था। जब उसकी मा उसे अपने लिए बहू ढूँढने को कहती तो वह यह कहकर कि अभी नही कुछ दिन और ठहर जाओ बात टाल देता।

बग्लूर में बदली हो जाने के बाद से अर्द्धनारी साल में दो बार अपने मा-बाप से मिलने जाता था। जब उसे पता चला कि बाप

‘‘क्या तुम मुझे सचमुच पसन्द करती हो ?’’

इस सामाजिक अन्याय को हम प्रोत्साहन ही क्यो दे ? जाति किसने बनाई है ? क्या सब ढोग नही है ? मै क्यो इस बात को इतना महत्व दू और पकजा से इस बारे में बातचीत करूँ ? उन्होने मुझमे साफ-साफ कह दिया है कि उन्हे जात-पाँत की चिन्ता नही। फिर मै ही क्यो इसकी चर्चा करूँ ?" अन्त मे अर्द्धनारी ने सत्य को दबा देने का सकल्प कर लिया।

"क्या तुम मुझे सचमुच पसन्द करती हो ?" उसने जाकर पकजा से पूछा। "क्या हम ब्याह कर ले और सुख के साथ रहें ?"

"लेकिन क्या तुम ऐसा चाहते हो ?" पकजा ने पूछा।

अर्द्धनारी का पिता मुनियप, उसका भाई रग और उसकी मा कुप्पायी सब कोक्कलई गाँव में चेरी (अछूतो के मोहल्ले) में रहते थे। अर्द्धनारी पहले दिल्ली से और फिर बग्लूर से उन्हे हर महीने बीस रुपये भेजा करता था। उनके लिए यह एक राजसी रकम थी और वे बडी मौज से गुजारा करते थे। उन्हे यह पता नही था कि अर्द्धनारी कितना कमा रहा है, लेकिन हर महीने बीस रुपये पाते रहना वे अपने लिए बडे सौभाग्य की बात समझते थे। दुर्भाग्य से मुनियप को शराब पीने की लत थी। जब उसे हर महीने रुपये मिलने लगे तो उसकी यह लत और भी बढ गई। रग इस बात को पसन्द नही करता था, लेकिन वह बाप को रोकने में असमर्थ था। वह एक गाँव के स्कूल में मास्टर था और अभी तक अविवाहित था। जब उसकी मा उसे अपने लिए बहू ढूँढने को कहती तो वह यह कहकर कि अभी नही कुछ दिन और ठहर जाओ बात टाल देता।

बग्लूर में बदली हो जाने के बाद से अर्द्धनारी साल में दो बार अपने मा-बाप से मिलने जाता था। जब उसे पता चला कि बाप

को शराब पीने की लत पड गई है तो उसे बड़ी लज्जा आई। वह अपने घर का कूडा-करकट और मैलापन बरदाश्त नही कर पाता था, इसलिए जब वहाँ जाता था तो एक या दो दिन ठहरकर जल्दी-से-जल्दी वापस आ जाता था।

अर्द्धनारी जब बग्लूर लौटने को तैयार होता तो उसका पिता उससे कहता—"अर्द्धनारी, हम भी तुम्हारे साथ चलेगे।"

इसपर अर्द्धनारी जवाब देता—"हरगिज़ नही, अगर वे तुम्हे मेरे साथ देख लेगे तो मुझे नौकरी से अलग कर देगे।"

और रग भी कहता—"हाँ पिता जी, हमे नही जाना चाहिए।"

अर्द्धनारी उन्हे बराबर रुपये भेजता रहता था, इसलिए वे उससे ज्यादा बहस नही करते थे। कुछ दिनो तक बात इसी तरह चलती रही।

अर्द्धनारी ने सोचा कि ब्याह हो जाने के बाद मेरे लिए सबसे अच्छा यही होगा कि मै कही दूर उत्तर मे चला जाऊँ। वह बराबर अपने मन मे कहता—"इसमें तो कोई शक नही कि वे मुझपर बडे दयालु है, लेकिन अगर उन्हे यह पता लग गया कि मै अछूत हूँ तो बात ज़रूर बिगड जायगी। अगर यह मान भी लिया जाय कि वे परवा नही करेगे तो भी जब वे मेरे पिता और दूसरे सम्बन्धियो की आदते और रहन-सहन का ढग देखेंगे तो ज़रूर पकजा का जी फट जायगा और उसके बाद शायद वह मेरा मुँह भी नही देखेगी।" इस विचार के साथ ही साथ अर्द्धनारी का सत्य को छिपाने का सकल्प भी दृढ बनता गया और उसने जल्दी से जल्दी ब्याह कर कही उत्तर में चले जाने का निश्चय किया। उसने अपनी कम्पनी के डाइरेक्टरो को पत्र लिखा और उनसे प्रार्थना की कि उसकी बदली उत्तरी भारत की किसी दूसरी मिल में कर दी जाय।

एक दिन पकजा ने अचानक कहा—"अर्द्धनारी, मै तुम्हारी मा से मिलना चाहती हूँ। हमने तय किया है कि तुम एक हफ्ते की छुट्टी ले लो और हमारे साथ कोयमुत्तूर, उटाकमन्ड और दूसरे स्थानो की सैर करने चलो। तुम्हारी क्या राय है ?"

गोविन्द राव ने भी कहा—"आजकल दफ्तर में काम ज्यादा नही है। अगले महीने के पहले हफ्ते में चलना सबके लिए ठीक रहेगा।"

अर्द्धनारी का हृदय धडकने लगा। उसने कहा— 'हाँ, हाँ, हम ऐसा कर सकते है, लेकिन मेरे पास आज ही घर से चिट्ठी आई है जिसमे लिखा है कि गाँव में बडे ज़ोरो से हैज़ा फैल रहा है।"

यह सुनकर पकजा को बहुत चिन्ता हुई। "हैज़ा !" उसने घबराहट के साथ कहा। "क्या तुमने अपने सम्बन्धियो को वहाँ से दूसरी जगह जाने को लिख दिया है ? उन्हे यही आने को क्यो नही लिख देते ?"

"मै अभी-अभी यही लिखने को सोच रहा था," अर्द्धनारी ने उत्तर दिया।

तीन दिन बाद अर्द्धनारी को रग का एक पत्र मिला, जिसमे लिखा था—
"छोटे भाई अर्द्धनारी को आशीर्वाद !

यहाँ बडे ज़ोरो से हैज़ा फैल रहा है। बहुत-से लोग मर चुके है और हमे भी घबराहट हो रही है। पिता जी का पहले ही जैसा हाल है, वह हमारी सलाह नही मानते। इस महीने तुमने जो रुपया भेजा था वह सब खतम हो चुका है। हम सोच रहे हैं कि अगर तुम ३०) और भेज सको तो हम मकान मे ताला डालकर जब तक हैज़े का खतरा दूर न हो जाय तब तक के लिए सेलम चले जायँ।

तुम्हारा सस्नेह,
रग"

इस पत्र को पढकर अर्द्धनारी को बडा दुख और आश्चर्य हुआ। "इसका क्या मतलब ?" उसने सोचा, "जो बात मै झूठ बोलने के लिए कह रहा था वह सच निकली ? शायद भगवान् मेरी परीक्षा ले रहे है।" एकाएक अर्द्धनारी निश्चय न कर सका कि उसे क्या करना चाहिए। बाद में उसने सोचा कि कल रुपये भेज दूँगा।

उस रात अर्द्धनारी को नीद नही आई। बुरे-बुरे और लज्जाजनक विचार उसके मस्तिष्क मे चक्कर काटते रहे। जब कभी उसे अपने पिता का ध्यान आता, उसका हृदय ग्लानि से भर उठता। कई बार उसके मन में विचार आता—"बाप हैजे से मर जाय तो मुसीबत से छुटकारा मिले।" लेकिन दूसरे ही क्षण वह अपने को इस भावना के लिए कोसता। सारी रात वह इसी तरह अपनी खाट पर बेचैनी से करवटें बदलता रहा और सुबह ही ठढे पानी से नहाया। डाकिया चिट्ठियाँ लाया और, जैसी कि उसे आशा थी, उसके गाँव से एक और पत्र आया। काँपते हुए हाथो से उसने उसे खोला और पढा—

"पिता जी को हैजा हो गया है। हम बहुत घबराये हुए है। मारिआयी हमपर दया करे। हमारे पास एक भी पैसा नही है।

—रग"

पत्र को पढकर अर्द्धनारी का मुँह स्याह पड गया। वह बडी देर तक अपनी कुरसी पर ही बैठा रहा और उस दिन उसने रुपये नही भेजे। दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ।

"तुम्हारे गाँव मे हैजे का क्या हाल है ?" पकजा ने पूछा।

"अभी बहुत बुरा है," अर्द्धनारी ने उत्तर दिया।

"क्या कॉफी में चीनी ठीक है ?" गोविन्द राव ने बीच में पूछा।

"हाँ, कॉफी बहुत अच्छी बनी है," अर्द्धनारी ने उत्तर दिया।

घर लौटकर उसने देखा कि एक और पत्र आया हुआ रखा है। उसमें लिखा था—

"मा को भी हैजे के लक्षण दिखाई दे रहे है। तुमने रुपया नही भेजा, हम लाचार है। जल्दी आओ।"

अर्द्धनारी ने उस दिन भी रुपये नही भेजे। उसने अपना हृदय पत्थर का बना लिया और सोचा—"मेरे जीवन का यह कलक अब हमेशा के लिए छूट जायगा। इस छुटकारे में मुझे भगवान् की दया दिखाई देती है। उसकी इच्छा से बढकर और कोई भी धर्म या न्याय नही। मै क्यो उसे बदलने की चेष्टा करूँ? यदि मा और पिता जी दोनो मर जायँगे तो फिर पकजा के साथ व्याह होने मे कोई भी रुकावट नही रह जायगी।"

"दुष्ट, कैसे पाप से भरे हुए विचार है तेरे!" मानो किसी ने एकाएक अर्द्धनारी को धिक्कारते हुए कहा। उसने पीछे घूमकर देखा तो पकजा को खडा पाया। उसे डर लगा कि कही भेद खुल तो नही गया। लेकिन शीघ्र ही दिमाग का धुँधलापन दूर हो गया और उसने समझ लिया कि किसी ने कुछ नही कहा था, सब कुछ उसके चित्त का भ्रम था।

"तुम बिना आवाज किये अदर कैसे चली आई?" उसने पकजा से पूछा।

इसपर पकजा हँसी और बोली—"घुसने से पहले मैने दरवाजे पर तीन बार धक्का दिया। तुम किसी बात से परेशान मालूम होते हो, तभी तुम्हें मेरे आने का पता नही चला।"

"मुझे अपने गाँव जाना चाहिए। ऐसा मालूम होता है कि वहाँ बीमारी पहले से बढ़ गई है। मेरे माता-पिता वही है, मुझे उनके लिए कुछ इन्तजाम करना चाहिए," अर्द्धनारी ने कहा।

"बेशक ! यह तो बहुत पहले हो जाना चाहिए था। अब अगर तुम वहाँ जाओ तो बडी होशियारी से रहना और जब तक वहाँ ठहरो कोई चीज़ खाना-पीना मत," पकजा ने समझाते हुए कहा।

उसी रात अर्द्धनारी सेलम के लिए चल पडा, लेकिन सीधा कोक्कलई न जाकर उसने रास्ते में देर कर दी और गाँव चार दिन बाद पहुँचा। उस समय तक मा मर चुकी थी और बेचारा रग भी उसका साथ दे चुका था। अलबत्ता, शराबी बाप मौत के मुँह से निकल आया था और अब चगा था।

"मुझे बग्लूर ले चलो, अब मै यहाँ क्या करूँगा ?" मुनियप ने अर्द्धनारी से गिडगिडाकर कहा। परतु अर्द्धनारी के कान पर जूँ भी नही रेगी, वह पत्थर-सा बना रहा और बोला—"मै तुम्हे काफी रुपये भेजा करूँगा, तुम यही रहो। मेरे साथ चलने के लिए कहना बेकार है, क्योकि मै तुम्हे नही ले जा सकता।"

बाप बेटे के सामने एक असहाय बच्चे की तरह गिडगिडाया। उसने सुबकियाँ लेते हुए कहा—"मै यहाँ नही ठहर सकता।"

परन्तु अर्द्धनारी पर इसका कुछ भी प्रभाव नही पडा। उसन सोचा कि मैं पकजा को कैसे छोड सकता हूँ और पिता के रोने-धोने पर कान नही दिया। अगले दिन उसके हाथ पर दस रुपये का नोट रख वह सेलम से चल दिया।

पर उसके मन ने धिक्कारा—"हाय, क्या कर डाला तूने ! तूने अपनी मा और भाई को मार डाला। तूने ऐसा क्यो किया ? क्या तेरे जैसा दुष्ट भी कोई होगा ? तू अपने पिता को इस प्रकार कैसे छोड सका ? पकजा से तू क्या कहेगा ?"

इन विचारो ने उसे गाडी में सोने नही दिया। बग्लूर पहुँचकर

उसने अपने घर तक का रास्ता पैदल ही तय किया। फिर भीतर से कुडी बन्द कर वह पड रहा। न तो उसने अपने आने की सूचना गोविन्द राव या पकजा को दी और न वह दफ्तर ही गया।

उसी रात को उसने अपना असबाव फिर बाँधा और स्टेशन पर टिकट लेकर वह सेलम की गाडी मे जा बैठा।

सेलम मे उसने सुना कि कोक्कलई मे एक आदि द्रविड (अछूत) ने कुएँ मे डूबकर आत्म-हत्या कर ली है। जब वह कोक्कलई पहुँचा तो उसे मालूम हुआ कि वह उसका ही पिता था।

किसीने उसे खबर दी कि मुनियप शराबी के सम्बन्ध में पुलिस चौकी पर जाँच की जा रही है। परन्तु वह वहाँ नही गया और छिपकर सेलम चला आया और बग्लूर की गाडी में बैठ गया।

"पकजा, तुम मुझे भूल जाने की कोशिश करो," उसने जाकर पकजा से कहा।

"वह मै बाद मे करूँगी, पहले मुझे सेलम के हाल बताओ।"

"वे सब मर गये। इसकी वजह यह है कि उनके लिए मुझे जो करना चाहिए था वह मैंने नही किया। मुझे अब अपने जीवन में कोई दिलचस्पी नही रह गई। मै अपनी नौकरी से इस्तीफा देने जा रहा हूँ और उसके बाद मे गाँव चला जाऊँगा। मुझे भूल जाओ।"

पकजा ने अर्द्धनारी की तरफ दो-तीन बार देखा, फिर चिन्तित हो वह सब कुछ अपने भाई को बताने भाग गई।

अर्द्धनारी को ज्वर चढ आया। पहले डॉक्टर ने टायफॉयड बताया और फिर दिमागी बुखार। करीब एक महीने तक वह खाट पर पडा रहा। गोविन्द राव और पकजा बिना आराम किये लगातार उसके पास बैठे रहे। चौथे सप्ताह के अन्त मे बुखार टूटा।

"अब चिन्ता की कोई बात नही," डॉक्टर ने कहा और कुछ ही दिनो मे अर्द्धनारी अपनी खाट पर उठने-बैठने लगा।

"मै अछूत हूँ, पापी हूँ। मै सचमुच छूने लायक नही हूँ, मै झूठा हूँ। मै ब्याह नही करूँगा। ईश्वर के लिए मुझे भूल जाओ," अर्द्धनारी ने कहा।

पकजा ने हँसकर उसे तसल्ली देते हुए कहा—"इससे क्या कि तुम किस जाति के हो? हम एक-दूसरे से अलग क्यो हो?"

परन्तु अर्द्धनारी नही माना। उसने कहा—"मै जानता हूँ कि तुम्हे मेरी जाति की चिन्ता नही, परन्तु मैने अपने माता-पिता का खून किया है," और फिर उसने अपनी सारी कहानी कह सुनाई।

जब वह बिलकुल अच्छा हो गया तो उसने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया और कोक्कलई वापस चला गया। अब वह सन्यासी बन गया है और मारिअम्मा के मन्दिर में स्कूल चलाता है।

---

—

# कुब्जा सुन्दरी

"उन्हे कुछ भी हो; हमे क्या ? ऐसी बातो मे पडना खतरनाक होता है। मेरा कहना मानो और ऐसा मत करो।"

"खतरे की कोई बात नही है, कामू ! वह हमारी लिखावट नही पहचानते और अगर उन्हे मालूम भी हो जाय तो क्या ? एक मजाक ही सही।"

"अच्छी बात है, लेकिन तुम खुद लिखो, मै अपनी कलम से नही लिखूँगी।"

"यही सही, लाओ मुझे दो, मै लिखूँगी। इसमे मुश्किल ही क्या है ?"

यह बातचीत लडकियो के वीरेशलिंग होस्टल के एक कमरे में हुई। कमला और कामाक्षी बी० ए० में पढती थी। उन्होने मिलकर शरारत से भरा हुआ एक गुमनाम पत्र लिखा—

"गीता-प्रसग-शिरोमणि नरसिंह शास्त्री को हमारा प्रणाम !

महानुभाव, वीरेशलिंग होस्टल की हम छात्राएँ आपकी सेवा मे नम्रतापूर्वक निम्नलिखित प्रार्थना-पत्र भेजती है—

हम आपकी उस भावना का आदर करती है, जिसके कारण आपने अपने बडे पद का त्याग किया और ईश्वर-भक्ति से प्रेरित होकर सर्व-

साधारण को पुराने शास्त्रो के समझाने का धार्मिक कार्य उठाया। जैसा प्रतिभाशाली भाषण आपने पिछले रविवार को वसत हाल मे दिया था वैसा हमने आज तक नही सुना। अब तक कोई भी व्यक्ति गीता या उपनिषदो के मर्म इतनी सुन्दरता के साथ नही समझा पाया है। किंतु क्या कारण है कि जो सत्य आप दूसरो को इतनी अच्छी तरह समझाते है उससे खुद लाभ नही उठाते ?

क्या आपने अपने भाषण मे यह बात बहुत ही अच्छे ढग से नही समझाई थी कि विषय-भोग की ओर से हमे अपने विचार उसी प्रकार समेट लेने चाहिएँ जिस प्रकार कछुआ अपनी खोपडी के अदर अपने सारे अग समेट लेता है ? और, क्या आपने यह भी नही कहा था कि हमारी पाँचो ज्ञानेद्रियाँ पाँच घोड़ो की तरह है जिनकी रास कसकर रखनी चाहिए नही तो वे हमारे काबू से बाहर चली जायँगी और हमे खतरे मे डाल देगी ? फिर आपने अपने उपदेशो का स्वय पालन क्यो नही किया ? आपने वहाँ दो घटे तक भाषण दिया और इस बीच एक बार भी लडकियो की ओर आँख उठाकर नही देखा। जिन लोगो ने वहाँ आपको देखा उन्होने आपको बिना गेरुआ वस्त्रवाला एक सन्यासी समझा। लेकिन पिछले दो दिनो का आपका आचरण इस बात को झूठा सिद्ध करता है। आप पुण्य के मार्ग से बुरी तरह हट रहे है और पाप के गडहे मे गिरने ही वाले है। ऐसा मालूम होता है कि आपको अपनी आँखो पर वश नही रह गया है। हममे से कुछने तो आपके बारे मे प्रिंसिपल साहब से कहने तक का इरादा कर लिया था, लेकिन फिर सोचा कि आपको बदनाम करना ठीक नही होगा और इसीलिए यह पत्र लिखा।

जब आपकी पत्नी का देहान्त हो गया था तो आपने प्रचलित प्रथा के अनुसार अपना दूसरा ब्याह क्यो नही कर लिया ? कृपाकर हमारी

सलाह मानिये और गीता का उपदेश देना बन्दकर अपने घर चले जाइये और ब्याह कर लीजिये। आप अभी बहुत बूढे नही हुए है। हमारी समझ मे अभी आप करीब पचास वर्ष के ही होगे। हमने आपके लिए एक लडकी पसन्द की है। रेणिगुन्ट जकशन से आगे वकीपुर नाम का स्टेशन है। वही दक्षिणी सडक पर एक बडा-सा मकान है जिसमे गोविन्दार्य नाम के एक सज्जन रहते है। उनके करीब बाईस वर्ष की एक कन्या है। अगर आप तैयार हो तो हम उससे आपका व्याह तय करा देगी। हमें बस एक इशारे की ज़रूरत है। अगर आप अपनी छत की रस्सी पर अपनी रेशमी किनारीवाली चादर फैला देगे और उसपर अपना छाता टॉग देंगे तो उन्हे हम यहा से देख सकेंगी और समझेंगी कि आप हमारे प्रस्ताव से सहमत है। इसके बाद हम सब कुछ स्वय कर लेगी और लडकी के घरवालो से मिलकर उन्हे राजी करा लेंगी।

आप अपनी बदनामी मत कराइये और न अपनी नेकनामी पर बट्टा लगाइये। मेहरबानी करके छत पर खडे होकर हमें घूरा मत कीजिये।

—वीरेशलिंग होस्टल की छात्राएँ।"

## २.

महादानपुर नरसिंह शास्त्री ने बिना किसी शिकायत का मौका दिये बारह साल तक सब-जजी की। इसके बाद वह एक साल तक जज के पद पर भी रहे। उनकी पत्नी को व्याह के बाद पन्द्रह वर्ष तक कोई सन्तान नही हुई। सोलहवे साल उन्होने एक कन्या को जन्म दिया। नरसिंह शास्त्री ने चिकित्सा और सुश्रूषा का पहले से ही समुचित प्रबन्ध कर रखा था। परन्तु डॉक्टरो की लाख चेष्टा करने पर भी प्रसव के सत्तरहवे दिन उनकी पत्नी का प्रसूतिका-ज्वर मे देहान्त हो गया।

नरसिंह शास्त्री की विधवा बहिन, जो उम्र मे उनसे बडी थी, उनके घर आकर रहने लगी और बढे प्यार से बच्ची का लालन-पालन करने लगी। उन्होने अपने छोटे भाई पर दूसरा व्याह करने के लिए बार बार ज़ोर डाला, लेकिन उन्होने ऐसा करने से दृढतापूर्वक इन्कार कर दिया और एक सन्यासी की तरह जीवन बिताया। उनका सारा समय या तो दफतर के काम मे बीतता या धार्मिक पुस्तको के अध्ययन मे।

लेकिन उनके दुर्भाग्य का अन्त यही नही हुआ। उनकी बडी बहिन मना करने पर भी मार्गशीर्ष इकादशी के त्योहार पर श्रीरग जाने की जिद करती रही। वहाँ जाने पर उन्हे हैज़ा हो गया और वह मर गईं। उस वक्त तक बच्ची पूरी दो वर्ष की भी नही हो पाई थी।

एक बार फिर शास्त्री के वे सम्बन्धी, जिनके क्वारी कन्याएँ थी, उनके पास आये। उन्होने उनपर दबाव डाला कि अगर और किसीके लिए नही तो बच्ची की खातिर ही शादी कर लो। परन्तु शास्त्री ने न केवल व्याह करने से इकार कर दिया बल्कि अपनी नौकरी भी छोड दी। चूँकि उन्हे पुराने और नये धार्मिक साहित्य का बहुत अच्छा ज्ञान था, इसलिए वह बहुत जल्दी ही धार्मिक विषयो के एक सुन्दर उपदेशक प्रसिद्ध हो गये। मद्रास मे लोग उनका व्याख्यान सुनने के लिए इतनी ही बडी सख्या में इक्ट्ठे होते जितनी कि सगीत-उत्सवो मे। हर जाति के स्त्री-पुरुष—पढे-लिखे और अनपढ दोनो—उनके व्याख्यान बडी उत्सुकता से सुनते और उन्हे गीता-प्रसग-शिरोमणि कहते, जिसका अर्थ था "गीता के उपदेशको मे सबसे बडे मणि।"

इस तरह कई महीने बीत गये। परन्तु क्या पिछले जन्म का कर्म मिट सकता है? वह व्यक्ति जो इतने समय से सन्यासियो-जैसा जीवन बिताता आया था उस बुध की रात को मूर्ख बन गया।

वह लडकियो के वीरेशलिंग होस्टल के पीछे की गली मे एक छतदार मकान मे रहते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि जिस समय लड़कियाँ अपनी छत पर आकर खडी हुई करीब-करीब उसी समय वह भी अपनी छत पर आये और उन्होने लडकियो की ओर देखने की धृष्टता की। दो या तीन दिन तक ऐसा ही सयोग हुआ। लडकियो को यह बात अच्छी नही लगी और उन्होनें उनके पास ऊपर लिखा गुमनाम पत्र भेजा।

## ३.

डाकिये ने दरवाजे पर खटखट की। शास्त्री ने खुद जाकर चिट्ठी ली। उसे पढकर उनका हृदय अचानक लाछन से क्षुब्ध हो उठा और उन्होने पत्र को जलाकर राख कर देना चाहा। किन्तु कुछ सोच-समझकर उन्होने उसे होशियारी से मोडकर अपने थैले मे रख लिया।

क्षोभ के समुद्र में मानो वह डूब-से गये। उनकी प्रतिज्ञा झूठी पड़ गई थी, उनका ज्ञान निरर्थक सिद्ध हो गया था। उन्हें बहुत ही दु ख हुआ और उनकी समझ मे नही आया कि वह इस अपमान को कैसे सहन करें।

उन्होनें योही एक किताब उठा ली और उसे पढने की चेष्टा की, लेकिन मन नही लगा। बहुत प्रयत्न करने पर भी वह उस अपमान की बात को चित्त से नही हटा सके। "हे भगवान्, क्या मैं सचमुच पापी होता जा रहा हूँ? सीताराम!" इस तरह गिडगिडाकर उन्होनें अपने मान्य देवता का स्मरण किया और दया की याचना की।

उस रात उन्हे नीद नही आई। उन्हे अपनी मृत पत्नी और बहिन की याद आई और उन्होनें मद्रास छोडकर अपने गाँव चले जाने का निश्चय किया। लेकिन एकाएक उन्हे याद आया कि अगले इतवार को चिन्ताद्रिपेट में कपडे के वडे व्यापारी रामनाथ चेट्टियार के मकान पर गीता का उपदेश देना है। "इस वादे को मैं कैसे तोड सकता हूँ?

लेकिन मै भाषण दूँगा कैसे ?" इन्ही उलझनो मे पडे-पडे वह सारी रात जागते रहे।

## ४.

शिरोमणि की छत पर छाते या चादर का कोई सकेत न देखकर लडकियो को बडी निराशा हुई। अगले दिन भी कुछ सकेत न मिला। लड़कियो को यह सोचकर बडा दु ख हुआ कि उनकी चाल चली नही।

"कामाक्षी, अभी हमें एक दिन और इन्तजार करनी चाहिए," कमला ने कहा।

"वह हमारे धोखे में नही आ सकता, बडा चलता हुआ आदमी है," कामाक्षी ने जवाब दिया।

"कितने की शर्त लगाती हो ?"

"दो रुपये की।"

"अच्छा, दो दिन का वक्त दो।"

तीसरे दिन रात को शास्त्री खुली छत पर बैठे-बैठे आकाश की ओर देख रहे थे और उनके मस्तिष्क में घूम रही थी ये बातें—"इस महान् ब्रह्माण्ड में मै एक कण के बराबर हूँ। मै बडी तेजी से घुमाया जा रहा हूँ, फिर भी मै किसी तरह अपनी जगह पर टिका हुआ हूँ। मै किस तरह अपनी क्षुद्रता को पूरी तरह से समझ सकता हूँ और किस तरह उसकी यथेष्ट निन्दा कर सकता हूँ ? मेरे भगवान्, क्या मेरी चिन्ता और भय का तुमपर कोई असर नही पडता ? मेरी रक्षा करो, मेरे स्वामी !" यह कहकर वह रोने लगे और बहुत देर तक इसी प्रकार चिन्ता में पड़े रहे। अन्त मे उन्हे नीद आ गई। सपने में उन्हे अपनी मृत पत्नी दिखाई दी, एक तश्तरी मे शास्त्री को पान-सुपारी देती हुई बोली "निराश मत होओ" और फिर गायब हो गई। इस सपने के बाद शास्त्री का दिमाग

कुछ हल्का हुआ। सपने मे स्त्री का दीखना शुभ लक्षण था। कोई साहसपूर्ण कार्य करने के लिए यह एक अच्छा शकुन था। उन्होने अपने मन को यह समझाने की चेष्टा की कि मृत पत्नी ने सपने में आकर सलाह दी है कि मै दूसरा व्याह कर लू। "लडकियो ने जो कहा वह ठीक ही है," उन्होने सोचा। "जब तक अपने में कठोर जीवन बिताने की क्षमता न आ जाय तब तक अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति को दवाने से कोई लाभ नही। जब मन ही पवित्र न हो तब सिर्फ बाहरी इद्रियो के दमन से क्या होता है ? अहम् के वश होकर मैने शास्त्रो का अनादर किया है। मेरे लिए फिर से व्याह कर लेना ही ठीक है," शास्त्री ने मन ही मन में तय किया। लडकियो की शरारत में उन्हें ईश्वर का हाथ दिखाई दिया।

अगले दिन सुवह उन्होने छत की रस्सी पर अपनी रेशमी किनारीवाली चादर डाल दी और छाता भी लटका दिया।

होस्टल मे आनद की लहर दौड गई। कमला और कामू खुशी के मारे नाच उठी।

कमला ने चिल्लाकर कहा--"लाओ मेरे दो रुपये।"

"अच्छा अच्छा, अव तुम वकीपुर के लिए चल दो," कामाक्षी वोली।

## ५.

गोविन्दार्य वकीपुर के एक धनी व्यक्ति थे। उनका एक पढे-लिखे घराने में जन्म हुआ था और वह खुद भी वडे विद्वान थे। उनके कोई पुत्र न था, केवल सुन्दरी नाम की एक कन्या थी जिसको उन्होने खूब सस्कृत पढाई थी। जब वह वारह साल की थी और गोविन्दार्य उसके लिए वर की तलाश में थे, तो उसे वडा बुरा बुखार आया, जिसके कारण वह लँगडी हो गई और उसकी कमर भी झुक गई। इलाज हर तरह का कराया गया लेकिन कोई फायदा नही हुआ। क्वारी

पुत्री के इस दु ख से गोविन्दार्य की पत्नी का हृदय टूट गया। वह बीमार पड गई और कुछ दिनो बाद इस ससार से चल बसी।

गोविन्दार्य ने अपनी पुत्री का ब्याह कर शास्त्रो के आदेश का पालन करने की भरपूर चेष्टा की। उन्होंने दहेज़ में काफी धन देने का भी वादा किया, लेकिन कोई भी उनकी अपाहज और अपग लडकी से ब्याह करने को राजी न हुआ। सुन्दरी साहसी लडकी थी, उसने अपने दुर्भाग्य को शान्तिपूर्वक सहन किया और अपने पिता को समझाने की भी पूरी कोशिश की। ख़ुद वह तमिल और सस्कृत साहित्य का अध्ययन करने मे मग्न रहती।

अपग होने पर भी सुन्दरी घर का सारा काम-काज सम्हालती थी। उसका नाम सुन्दरी था, पर उसकी मा समझ नही पाती थी कि किस घडी मे उसका यह नाम रखा गया कि बाद मे वह इतनी कुरूप हो गई। जब उसका यह नाम रखा गया था तब वह सचमुच सुन्दरी थी। उसकी मा उसे अपने सम्बधियो के सब बच्चो से अधिक सुन्दर समझती थी। उसका रग शायद बहुत काला था, लेकिन इससे क्या? उसकी नाक, उसका माथा, उसकी भौहें तस्वीर के मानिन्द थी। अगर उसकी टाँगो और पीठ की तरफ ध्यान न दिया जाता तो वह भी बहुत-सी दूसरी लडकियो के बराबर ही सुन्दर लगती थी। अपग होने के कारण उसका नाम तो नही बदला जा सकता था, परन्तु बकीपुर मे उसका एक नया अर्थ लगाया जाने लगा था। उसका नाम कुब्जा का पर्यायवाची बन गया था।

कमला, जिसने गुमनाम पत्र लिखा था, बकीपुर के ही एक धनवान ज़मीदार की लाडली लडकी थी। वह सुन्दरी की सहेली थी और अक्सर गोविन्दार्य के घर आती-जाती रहती थी।

"क्या वात है, कमला ? अभी छुट्टियाँ तो हुई नही, फिर तुम घर कैसे चली आईं ?" गोविन्दार्य ने कमला के एकाएक आने पर पूछा।

"चाचाजी, मैंने सुन्दरी के लिए एक वर ढूँढा है, वस आप अपनी मजूरी दे दीजिये," कमला ने जवाव दिया।

गोविन्दार्य ने समझा कि यह मेरी अभागिनी लडकी का मजाक उडा रही है, इसलिए उन्हें कुछ क्रोध-सा आया। किन्तु कमला ने जो कुछ सोच रखा था और जो कुछ हुआ था सव वता दिया।

गोविन्दार्य ने रजीदा होते हुए कहा—"कैसी वच्चो की-सी बात करती है, कमला ? भला वह सुन्दरी को कैसे अपना सकते ह ? मेरा दुर्भाग्य इतनी आसानी से नही टल सकता।"

"नही चाचाजी, वह अव हमारी मुट्ठी में है, हम उन्हें राजी कर लेंगी," कमला ने कहा।

"कमला, तुम साहसी हो, लेकिन मेरी मदद तो बस भगवान् ही कर सकते है," यह कहकर गोविन्दार्य फूट-फूटकर रोने लगे।

इस पर साहसी सुन्दरी ने कहा—"पिताजी, मैं हाथ जोडती हूँ, आप मेरे कारण दु खी न हो।"

दूसरे दिन उन्होनें अपने घर की ओर आती हुई एक गाड़ी की खडखडाहट सुनी। नरसिंह शास्त्री उसमें से धीरे-से उतरकर वाहर आए। कमला ने उनका स्वागत किया और एक आधुनिक भारतीय कन्या की निर्भीकता के साथ वह उन्हें अन्दर ले गई।

नरसिंह शास्त्री ने दरवाजे पर कमला को देखकर उसे अपनी प्रस्तावित पत्नी समझा और अपने सौभाग्य पर प्रसन्न होते हुए वह भीतर घुसे। लेकिन जव असली वात का पता चला और उन्होने सुन्दरी को देखा तो उन्हें वडी निराशा हुई। एक क्षण के लिए उन्हें घृणा-सी

हुई और उनका यह भाव उनके चेहरे पर आने ही वाला था कि जल्दी से उन्होने अपने को सम्हाल लिया। उनका ज्ञान उथला नही था, उस समय उसी ने उनकी सहायता की ।

मद्रास से चलते समय भी उनके मन म धार्मिक विरक्ति का भाव था और उन्होने सोचा था कि मै भगवान् के आदेश का पालन कर रहा हूँ। इसलिए उन्होने सुन्दरी को देखकर अपने मन मे सोचा—"यह मेरी परीक्षा है, मुझ इसमें सच्चा उतरना चाहिए। मैने शास्त्रो और विद्या को जो कलकित किया है उसका यह सही प्रायश्चित है। इस लडकी को, जिसके साथ भाग्य ने इतनी निष्ठुरता दिखलाई है, अगर म अपने यहाँ शरण दे सकूँ तो मुझे इसे अपने लिए बडे सौभाग्य की बात समझनी चाहिए।" इस तरह उन्होने घृणा के पहले आवेश पर विजय पाई।

कमला ने बात यही नही छोडी। उसने बडी होशियारी के साथ सुन्दरी के पठन-पाठन, विशेषत उसके सस्कृत-ज्ञान की विस्तार के साथ चर्चा की। इससे शास्त्री को तसल्ली हुई और जब सुन्दरी ने उनसे बातचीत की तो उसका शारीरिक रूप मानो लुप्त-सा हो गया और केवल उसकी आत्मा चमकती रही। उन्हे विश्वास हो गया कि यह मेरी पुत्री लक्ष्मी के लिए एक आदर्श मा बन सकेगी। उन्होने अपने मन मे कहा—"मेरी आत्मा पर जो मैल जमी हुई है वह साफ हो जायगी और उसकी हालत सुधर जायगी। मुझे अभी तक इस बात का बोध नही हुआ कि शरीर और आत्मा अलग-अलग है। मै अब तक अज्ञान और अधकार मे हूँ। मुझे अभी सच्चा बोध प्राप्त करना है। आत्मा की सुन्दरता पर बाह्य शरीर की कुरूपता का असर नही पडता। आत्मा की एक अलग सत्ता है जो सुन्दर होती है और हमें सुख देती है। हमारे शास्त्र हमे यही विश्वास दिलाते है।" एक-एक कर शास्त्री

को अध्ययन किया हुआ सारा वेदान्त-दर्शन याद आने लगा।

वातचीत खतम हुई और ब्याह पक्का हो गया। गोविन्दार्य के हर्ष का ठिकाना न रहा।

"आप मेरे दामाद नही, वल्कि एक देवता है और मेरी रक्षा करने आये है," उन्होने शास्त्री से कहा और उनके पैर पकड लिये, मानो वह सचमुच कोई महात्मा हो। उन्हे अपनी पत्नी की याद आ गई। वह आँसुओ की बाढ रोक नही सके और फूट-फूटकर रोने लगे।

तव कमला ने समझाया—"चाचाजी, इस शुभ अवसर पर आपको रोना नही चाहिए, यह तो खुशी मनाने का वक्त है।"

"तुम्हारी बडी उम्र हो बेटी, तुम हर तरह से सुखी रहो;" गोविन्दार्य ने कमला से कहा और उसे एक तश्तरी में नारियल और पान रखकर दिया।

कॉलेज मे पढनेवाली लड़की कमला की आँखो में भी आँसू छल-छला आये।

होस्टल लौटकर उसने अपनी सहेली कामाक्षी से कहा—"कामाक्षी, हमारे गीताशिरोमणि वहुत ही नेक आदमी है। हमने तो सिर्फ उनका मजाक उडाना चाहा था और उन्हे उनकी वासना के लिए शर्मिन्दा करना चाहा था, लेकिन नतीजा यह हुआ कि उनका ब्याह सचमुच पक्का हो गया।"

उसने फिर कहा—"ब्याह तिरुपति के मन्दिर में होगा और सारे सस्कार एक दिन मे ही समाप्त कर दिये जायँगे। मुझे भी जाना होगा, गोविन्दार्य ने कहा है कि मेरे बिना उनका काम नही चलेगा।"

"लेकिन हमें छुट्टी नही मिल सकेगी," कामाक्षी ने कहा।

"ज़रूर मिलेगी, हमे ब्याह मे जाना ही होगा," कमला ने उत्तर दिया।

"तुम जाओगी तो मै भी चलूँगी," कामाक्षी ने कहा।

दो और लडकियाँ भी उनके साथ चलने को तैयार हो गईं और इस तरह नरसिंह शास्त्री के ब्याह में तिरुपति जाने के लिए यह छोटी-सी मज़ेदार टोली बन गई।

"बूढे का ब्याह होगा शानदार," सब लडकियो ने एक स्वर से कहा और वे चलने के दिन की इन्तज़ार करने लगी।

मद्रास में इस ख़बर के फैलते ही धार्मिक सस्थाओ में हलचल मच गई। किसी ने पूछा "हमने सुना है कि शिरोमणि शास्त्री ब्याह कर रहे है, लडकी कहाँ की है और उसकी उम्र क्या है?" किसी ने कहा आठ वर्ष की है, किसी ने कहा बारह की है और किसी ने बताया कि जवान है। क्या बस, क्या ट्राम, जहाँ सुनिये वहाँ यही चर्चा थी और समाज-सुधारको में बड़ी खलबली मची हुई थी।

आल्वारपेट में 'महिला-समानाधिकार सभा' की एक बैठक हुई जिसमें यह प्रस्ताव बडे ज़ोरो के साथ पास किया गया कि ४५ वर्ष से अधिक उम्रवाले पुरुषो का ब्याह रोका जाय। लेकिन बाद मे प्रस्ताव मे सशोधन करके उम्र की हद ४५ वर्ष से बढ़ाकर ४९ कर दी गई और सभा इस बात के लिए भी तैयार हो गई कि अगर ब्याही जाने-वाली स्त्री की उम्र ३५ वर्ष से अधिक होगी तो पुरुष की आयु पर कोई बधन नही होगा।

## ६.

दो साल बीत गये। कावेरी नदी के किनारे एक छोटे-से गाँव की बात है। नरसिंह शास्त्री की छोटी-सी लडकी लक्ष्मी ने अपनी मा से पूछा—"सब लोग कहते है कि तुम सुन्दर नही हो। लेकिन तुम तो इतनी सुन्दर हो। फिर वे ऐसा क्यो कहते है, मा ?"

"लक्ष्मी कहती है कि मैं बछिया की तरह सुन्दर हूँ।"

"बेटी, मेरी कमर को देखो। क्या वह कमान की तरह झुकी हुई नही है ? औरो की कमर सीधी होती है। मै जमीन पर हाथ टेककर चलती हूँ, इसलिए जो भी मुझे देखता है वह मेरी हँसी उडाता है," सौतेली मा सुन्दरी ने समझाया।

"क्या तुम्हारी कमर मे दु ख होता है, मा ?"

"नही बेटी, दु ख नही होता।"

"तो फिर इससे क्या कि तुम झुककर चलती हो? वछिया भी तो तुम्हारी तरह चलती है ? क्या वह सुन्दर नही लगती ?"

"लक्ष्मी क्या कह रही है?" नरसिंह शास्त्री ने घर मे घुसते हुए पूछा।

"लक्ष्मी कहती है कि मै वछिया की तरह सुन्दर हूँ और लोगो का यह कहना कि मै वदसूरत हूँ विलकुल गलत है। आपकी क्या राय है ?" सुन्दरी ने पूछा।

"मै उससे सहमत हूँ," शास्त्री ने जवाब दिया।

पिता के आ जाने से लक्ष्मी और भी बाते बनाने लगी। वह अपनी मा के सामने खडी हो गई और बोली---"देखो, जब मै तुम्हें देखती हूँ तो मुझे तुम्हारा बदन नही दिखाई देता।"

"अगर तू आँखे फाडकर देखे तो तुझे मेरा बदन भी दीख जायगा," सुन्दरी ने जवाब दिया।

"नही मा," लक्ष्मी ने जवाब दिया, "जब मै तुम्हारा बदन देखती हूँ तो तुम नही दिखाई देती और जब तुम्हें देखती हूँ तो तुम्हारा बदन नही दिखाई देता।"

"कुछ समझ में आ रहा है कि यह क्या कह रही है ? शास्त्री ने सुन्दरी से पूछा।"

"वकवास कर रही है, जिसका सिर न पैर," सुन्दरी ने कहा।

नरसिंह शास्त्री ने लक्ष्मी को छाती से चिपटा लिया और वह असीम आनन्द के सागर मे डूब गए, बोले—"सुन्दरी, आज लक्ष्मी की बात सुनकर उपनिषदो के एक श्लोक का अर्थ समझ मे आ गया। उपनिषदो मे भी ऐसी ही बच्चो-जैसी बाते कही गई है।"

"वह श्लोक क्या है ?" सुन्दरी ने पूछा।

"वह श्लोक यह है कि आँखो में जो वस्तु दिखाई देती है वह आत्मा है। जब मैने तुम्हें पाया तो मै समझा कि एक प्रकार से मै उस श्लोक का अर्थ समझ गया। लेकिन आज इस बच्ची की बातो ने उसका मतलब और भी साफ कर दिया है। जब दो आदमी एक दूसरे को पूरे प्रेम के साथ देखते है तो शरीर उनकी आँखो से ओझल हो जाता है। आत्मा आत्मा को देखती है। यही बात लक्ष्मी कहती है और यही श्लोक मे भी कहा गया है।"

"तुम्हारा मतलब यह है कि आत्मा और शरीर दो अलग-अलग चीज़े है ?" सुन्दरी ने पूछा।

"नही, यह बात नही," शास्त्री ने कहा,"यह तो उस सत्य का एक अश मात्र है। इधर देखो, इस समय मै तुम्हे देख रहा हूँ, तुम्हारे शरीर को नही। वह दृष्टि से ओझल हो गया है। तुम्हारी आँखे, नाक, कान, मुँह, सब कुछ ओझल हो गया है। सिर्फ तुम रह गई हो। यही वह चीज़ है जो नेत्रो मे दिखाई देती है।"

सुन्दरी ने भी उपनिषद् पढे थे। वह बोली—"वे इसका दूसरा मतलब लगाते है। जब कोई सत या ज्ञानी अपनी आँखे बन्दकर गहरी समाधि मे होता है तो वह अपनी आत्मा को अपने चित की आँखो मे देखता है। उपनिषदो का अर्थ बतानेवाले इस श्लोक का यही अर्थ लगाते है।"

"इसका यह अर्थ भी है," नरसिह शास्त्री ने कहा, "लेकिन जो लक्ष्मी कहती है वह ज्यादा ठीक और व्यवहारिक अर्थ है। मै न तो साधु हूँ और न सत, फिर भी जब मै तुम्हे एकाग्र प्यार के साथ देखता हूँ तो तुम्हारा शरीर दिखाई नही देता। उस समय तुम्हारी आत्मा दिखाई देती है और उसे देखकर मै सतुष्ट हो जाता हूँ। जब हमारी आँखें एक-दूसरे से मिलती है और हम उससे आनन्दित हो उठते है तो उस समय केवल तुम्हारा मुँह नही बल्कि तुम्हारा पूरा अस्तित्व मेरी आँखो के सामने प्रत्यक्ष हो जाता है। अगर मै तुम्हारी नाक, माथा, या उस पर लगा हुआ तिलक, या तुम्हारी भौहे देखता हूँ तो तुम्हारा केवल वही हिस्सा दिखाई देता है और तुम नजरो से ओझल हो जाती हो।"

सक्षेप यह कि शास्त्री और सुन्दरी ने परस्पर प्रेम ओर सम्मान का व्यवहार रखते हुए सच्चा दार्शनिक और उच्च जीवन बिताया। सच पूछिये तो सुन्दरता और कुछ नही प्रेम है। शरीर की सुन्दरता और कुरूपता तो ब्याह से पहले देखी जाती है। जो स्थायी वस्तु है वह है चरित्र। ब्याह के बाद जब आत्मा से आत्मा का बन्धन हो जाता है तो शरीर और रूप ओझल हो जाते है। यह बात स्त्री और पुरुष दोनो के लिये सत्य है। उसकी नाक तो देखो, उसके दाँत तो देखो, उसका मुँह तो देखो, ये सब बाते तो बाहरी आदमी कहते है और इन्ही से उनका वास्ता भी होता है। परन्तु प्रेम के बन्धन में बँधे हुए जोडे के लिए इन बातो का अस्तित्व मिट चुकता है और इनसे उसे न आनन्द मिलता है, न दुख।

---

# मनहूस गाड़ी

करुप की गृहस्थी अलग कर दी गई । किसानो मे यह प्रथा थी कि बेटे का ब्याह हो जाने पर उसके लिए एक अलग झोपडा बना दिया जाता था और उम्मीद की जाती थी कि वह खुद कमाय-खायगा। सचमुच यह एक अच्छी प्रथा की। करुप के माता-पिता बूढे हो गए थे और गाँव में अपने पुरखो के मकान मे रहते थे । करुप का बडा भाई खेत पर झोपडे में रहता था। अब जब करुप अलग रहने लगा तो ज़मीन के तीन हिस्से कर दिये गये और उनमें से एक करुप को दे दिया गया । बडा भाई अपना और अपने पिता का खेत जोतता था । सबने मिलकर करुप के लिए भी एक मिट्टी का झोपडा बना दिया । उन्होंने उसे एक जोडी बैल और दो बकरियाँ भी दे दी । करुप तीस साल का हट्टाकट्टा नौजवान था। उसकी पत्नी पार्वती गाँव की सबसे सुन्दर और काम-काजू लडकी थी । किसान की कन्या होकर भी वह रानी-जैसी लगती थी। चींटी और शहद की मक्खी चाहे कभी सुस्त बन जाय लेकिन पार्वती कभी खाली नही बैठती थी । जब वह अपने नये घर में इस तरह काम करती जैसे वही जन्मी और पली हो और बीच-बीच में करुप की ओर देखकर मुसकरा देती तो करुप निहाल हो जाता और सोचता कि इस दुनिया मे मुझे किसी चीज की कमी नही ।

पार्वती गाँव की सब से सुन्दर और कामकाजू लड़की थी

पार्वती अपने मायके से कुछ रुपये लाई थी । उससे उन्होने एक दुधार भैंस खरीद ली। वर्षा समय पर हुई और करुप ने खूब मेहनत से काम किया, इसलिए फसल भी बहुत अच्छी हुई। पार्वती दिन भर काम करती और माथे पर बल न लाती। करुप, बैल, भैंस और खेत—इन्ही में उसकी सारी दुनिया बसी हुई थी। अवकाश के समय वह अपनी मा के घर से लाये हुए चरखे पर सूत कातती। चाँदनी रात मे उसकी जिठानी भी उसके पास आ बैठती और दोनो देर तक सूत कातती और बाते करती रहती।

पार्वती की भैंस अच्छी दुधार नस्ल की थी। पार्वती अँधेरे-मुँह उठकर दही बिलोती, मकान झाडती-बुहारती और धोती और फिर जुलाहो की बस्ती में मट्ठा बेचने निकल जाती। पैंठ के दिन वह मक्खन ताकर घी बनाती और उसे बेच देती। इस तरह वह हर हफ्ते करीब तीन रुपये कमा लेती।

एक साल बाद करुप ने अपना कारबार बढाने का निश्चय किया। उसने अपनी पत्नी से कहा—"हमारा खेत छोटा है, इसलिए हमारे पास बारहो महीने काम नही रहता। क्यो न हम एक बैलगाडी खरीद लें और उससे कुछ रुपया कमायें ? फिर तो हम बैलो से भी पूरे साल काम ले सकेंगे। चाचा के लडके राम को देखो, वह अपनी बैलगाड़ी से हर हफ्ते कम से कम दो-तीन रुपये कमा लेता है। कभी-कभी तो उसे चार रुपये भी मिल जाते हैं। वीर गाँव छोडकर उडुमलपेट जा रहा है। अपना कर्ज़ा उतारने के लिए वह अपनी ज़मीन बेच रहा है। शायद अपनी गाडी हमे सस्ते दामो मे दे दे।"

"नही, नही, हमें वीर की गाडी नही चाहिए। हम उस मनहूस गाडी को नही खरीदेंगे, उसके आने से हमारे ऊपर भी बुरे दिन आ

जायँगे। और फिर, रुपया उधार लेकर बैलगाड़ी खरीदने की ज़रूरत ही क्या है ? हमें अब किस बात की कमी है ?" पार्वती बोली।

"पगली ! वीर ता शराब पीता था और इसी लत ने उसे तबाह किया। उसकी बरबादी से गाडी का क्या सरोकार ? गाडी तो बडी अच्छी और मजबूत है। बीस रुपये कर्ज लेने से हमारा कुछ बिगडेगा नही। उसे उतार देना नामुमकिन थोडी ही है।"

"लेकिन मैं तो अपने रुपयो से कान के बुन्दे खरीदने को सोच रही थी," पार्वती ने कहा।

"ऐसी बेवकूफी की बातें क्यो करती है ? तू तो रानी-जैसी सुन्दर है, गहनो से तेरा रूप बिगड जायगा," करुप ने कहा।

"औरतें तो जब कोई चीज चाहती हैं तो मर्द ऐसी ही बातें बना देते है। खैर, हम औरतें व्यापार की बाते क्या जाने ? अपने बापू से सलाह कर लो और जैसा ठीक समझो, करो। मुझसे क्या पूछना ?" पार्वती ने कहा।

करुप गाडी खरीदने पर तुला हुआ था। इसलिए जब उसने अपने बाप से पूछा तो उसने भी उसकी मर्जी के खिलाफ कुछ नही कहा। एक हफ्ते के अन्दर ही अन्दर गाडी खरीद ली गई। इसमें उसके अपने पास के सारे रुपये खर्च हो गये और गाँव के ज़मीदार से भी चालिस रुपये उधार लेकर लगाने पड़े।

## २.

करुप अक्सर गाड़ी भाडे पर बाहर ले जाता था। जब कभी दूर जाना होता तो रात को वह वापस नही लौटता और कभी अगले दिन सुबह भी नही आता। ऐसे मौको पर उसका चचेरा भाई राम भी गाडी में उसके साथ जाता। एक साल के भीतर ही भीतर करुप को ताड़ी की

दूकान दिखा दी गई। फिर क्या था! हर फेरे मे ताडी की दूकान पर जाना उसका नियम हो गया। गाडी की कमाई दिन पर दिन घटने लगी और बैलो के लिए अच्छा चारा लेना दूभर हो गया। एक दिन जब करुप नशे में घर पहुँचा तो पार्वती सन्न रह गई। उसे कुछ पता नही था कि अब तक क्या होता रहा है।

"तुमने मुझे बरबाद कर दिया," उसने रोकर कहा।

"चुप रह, मैंने तेरी कोई चोरी थोडे ही की है," करुप ने कडक-कर कहा।

पार्वती को गुस्सा आ गया, बोली—"तुमने ताडी पी है ?"

"हाँ, पी है, तुझे इससे क्या ? तेरे बाप की कमाई तो नही खर्च की ह ! तू पूछनेवाली कौन होती है ?"

"खबरदार जो इस घर मे घुसे, जाओ अपने बाप के घर । मैंने आज रोटी वोटी नही बनाई है," पार्वती ने कहा और गुस्से से उसका मुँह लाल हो गया ।

"चल, मुँहजली कही की, मैं तेरी सडी हुई रोटियो के बिना मर नही जाऊँगा।" यह कहकर करुप ने पार्वती को पीटने को हाथ उठाया ।

ऐसे झगडे अक्सर होते और कभी-कभी करुप पार्वती को पीट भी बैठता। तब पार्वती अपने बच्चे को लेकर जिठानी के घर चली जाती और वहाँ करुप की बिगडती हुई आदतो पर बातें होती। स्थिति दिन पर दिन बिगडती ही गई, बैल जल्दी बूढे हो गये और उनमें गाडी खीचने का बल न रह गया। करुप ने उन्हें घाटे से एक मेले में बेच दिया और उसके पास अब इतना रुपया नही था कि नई जोडी खरीद लेता।

उसने पार्वती से कसमें खाकर प्रतिज्ञा की कि अब मैं ताड़ी की दूकान के पास भी नही फटकूँगा और इस तरह बातो म फँसाकर उसने

उससे वे सारे रुपये ले लिये जो उसने मट्ठा घी बेचकर और सूत कात-कर बचाये थे। फिर कुछ रुपये अपनी बडी विधवा बहिन से उधार लेकर वह बैलो की नई जोडी ख़रीद लाया।

तीन महीने बीत गये। ज़मीदार ने अपने पुराने कर्ज़े के तकाज़े के लिए आदमी भेजा। करुप ने हाथ जोडकर कुछ दिन और ठहरने को कहा। इस तरह मियाद तीन बार बढाई गई। आख़िरकार जमीदार के नौकर उसका एक बैल खोलकर ले गये। करुप ज़मीदार के पास दौडा हुआ गया और एक महीना और ठहरने की दुहाई माँगने लगा।

"नही, अब मै एक दिन भी नही ठहरूँगा। इस शराबी को जूतो से पीटो। कर्ज़ चुकाने के लिए तो पैसा नही और बैलो की नई जोडी खरीदने के लिए पैसा आ गया! किस के कहने से तूने ऐसा किया?" ज़मीदार ने गुस्से मे भरकर कहा।

"ऐसा मत कहिये, सरकार, आप तो हमारे माई-बाप है। एक महीने की मोहलत और दे दीजिये। मै ख़ुद आऊँगा और आपका रुपया ज़रूर दे जाऊँगा।"

"यह सब बेकार की बात है। मै अब एक मिनट भी नही ठहर सकता। बुध की पैठ में मै तुम्हारा बैल बेचने के लिये भेज दूँगा।"

"ऐसा मत करिये मालिक, मेरे बाल-बच्चे तबाह हो जायँगे," करुप रोता हुआ बोला और अपने बैल के पास जाने लगा।

"बाहर निकाल दो, इसे। बैल मत जाने देना इसका। चोर कही का! जा, रुपये लेकर आ, नही तो बुध को बैल बिकवाये बिना नही रहूँगा," गुस्से मे भरे हुए ज़मीदार ने कहा।

करुप ने फिर ख़ुशामद की—"मै बदमाश नही हूँ सरकार! आप मुझे थोडा-सा वक्त और दे दे। आपका रुपया मारा नही जायगा।"

"नामुमकिन," जमीदार ने आखिरी फैसला करते हुए कहा।

"मै आपको ब्याज दूँगा, आप अपना रुपया ब्याज के साथ ले लीजियेगा," करुप बोला।

"कुत्ता कही का! इसे जूते से पीटो। ब्याज! ब्याज तो जरूर देगा तू! कहाँ से लायगा ब्याज? जा, कादिर खाँ से रुपये उधार लेकर मेरा कर्जा चुका दे। अगर कल तक रुपये नही मिले तो मै बैल को औने-पौने बेच डालूँगा," जमीदार क्रोध से लाल-पीली आँखे दिखाता हुआ बोला और अन्दर चला गया।

"और कोई चारा ही नही है करुप," जमीदार के कारिन्दे ने कहा। "कादिर साहब के पास जा, वही तेरी मदद कर सकते है।"

## ३.

करुप ने अपने बाप के पास जाकर खुशामद की कि बडे भाई से कहकर रुपया उधार दिलवा दो। बूढे के कहने से भाई मदद करने को तैयार हो गया, लेकिन उसकी औरत ने मना कर दिया। वह बोली—

"अगर तुमने रुपये उधार दिये तो फिर वापस नही मिलेंगे। उसे मुसलमान महाजन से ही लेने दो, हमें तो अपने ही खाने-पीने के लाले पडे हुए है। इस साल बारिश अच्छी होगी, इसका क्या ठिकाना? अगर फसल अच्छी नही हुई तो हम भूखो मर जायँगे। उस आडे वक्त पर हमारी कौन मदद करेगा?"

लाचार हो करुप को कादिर खाँ की शरण लेनी पडी। वह किस्त पर रुपये उधार दिया करता था और उसे गाँव के हर आदमी, यहाँ तक कि जमीदार की भी कच्ची-पक्की की खबर रहती थी।

"तुम्हे नही मालूम, भाई! जमीदार ने भी मुझसे रुपये माँगे है," कादिर खाँ ने कहा।

"बड़े आदमियों की मुश्किलें तो किसी तरह दूर होही जाती हैं, लेकिन मेरा बैल बिक गया तो मैं कहीं का न रहूँगा। अब तो सिर्फ आप ही मुझे उबार सकते हैं।"

"मैं क्या करूँ? मेरे पास तो जितना रुपया था सब मैंने ज़मीदार को देने का वादा कर लिया है।"

"अरे साहब, ऐसा न कहिए, मैं तो बरबाद हो जाऊँगा। आपको गरीबों की मदद करनी चाहिए। मुझसे जमीदार की बातें क्यों करते हैं?"

"यह तो ठीक है कि गरीबों की मदद करनी चाहिए, लेकिन मैं तो पहले ही जबान दे चुका हूँ।"

बहुत देर तक इसी तरह कहने-सुनने के बाद आखिर में कादिर खाँ राजी हो गया। पैंतालिस रुपये के लिए करुप को साठ रुपये के दस्तावेज पर दस्तखत करने पड़े। उसने पाँच रुपये महीने की किस्त देकर एक साल में सारा रुपया लौटा देने का वादा किया। सूद नहीं लिया गया लेकिन शर्त यह ठहरी कि अगर किसी महीने करुप किस्त नहीं अदा कर पायगा तो उसके लिए उसे एक रुपया जुरमाना देना पड़ेगा।

"करुपा, तेरी ईमानदारी और मेहनत पर यकीन करके ही मैं रुपये दे रहा हूँ। देखना कोई किस्त चूकने न पाय। तू एक नेक आदमी है, शराब पीना छोड़ दे। तेरी स्त्री है, एक बच्चा है और खुदा ने चाहा तो और भी बच्चे होंगे। अगर तू शराब पीता रहा तो बरबाद हो जायगा," कादिर खाँ ने उसे समझाया।

कर्जा चुकाकर करुप बैल अपने घर ले आया। बचा हुआ रुपया उसने पार्वती के हाथ पर रख दिया और कहा—

"सुन, मैं तेरे आगे कसम खाता हूँ कि आज के बाद से शराब,

ताडी या सुलफा छूऊँगा भी नही। मै अपने पास रुपये नही रखना चाहता, तू इनका जो चाहे कर। मै तो जो कमाया करूँगा लाकर तुझे पकडा दिया करूँगा।"

पार्वती ने समझा कि भगवान् ने मेरे अच्छे दिन लौटा दिये। वह बहुत खुश हुई और उसके शरीर में एक नयी शक्ति आ गई। वह अपना काम पहले से भी ज्यादा उत्साह से करने लगी।

## ४.

खेत पर अब कोई काम नही था और पार्वती से घर पर बिना काम के रहा नही जाता था। "मुझे किसी धधे से लगना चाहिये," उसने सोचा, "जब मेरे पति पर कर्ज़ा है तो मै विना कुछ काम किये कैसे रह सकती हूँ ?"

कादिर खाँ ने अपने पुराने मकान के पास एक नया मकान वनवाना शुरू किया। ईट पाथनवाले काम पर जुटे हुए थे। वही तीन चार लडकियाँ भी मज़दूरी पर काम करती थी। पार्वती ने भी उनके साथ काम करना शुरू कर दिया।

वह अँधेरे-मुँह उठती, मकान झाडती-बुहारती, भैंस और बकरी दूहती, मट्ठा बिलोती और फिर फौरन मट्ठा बेचने गाँव मे चली जाती। गाहको से कह-सुनकर वह जल्दी निबट लेती और वे भी उसे देर तक न रोकते, क्योकि उसका सब से हेलमेल था। घर आकर वह लप्सी पीती, बच्चे को दूध पिलाती और उसे जिठानी के पास छोड-कर अपने काम पर चली जाती। दोपहर को उसे बस इतनी भर छुट्टी मिलती कि किसी तरह दौडी-दौडी जाकर लप्सी पी ले, बच्चे को दूध पिला दे और फिर काम पर भाग जाय। ठेकेदार उसे सूरज छिपने के बाद छुट्टी देता, इसलिए जब वह घर लौटकर खाना बनाना शुरू

करती तो अँधेरा हो जाता। सब कुछ वह ख़ुशी-ख़ुशी करती। काम बड़ी मेहनत का था और एक दिन मे सिर्फ दो आने मजदूरी के मिलते थे, फिर भी मुसीबत के दिनो मे यही बहुत था।

पार्वती को इस विश्वास से बडा ढाढस रहता कि मेरा पति अब शराब नही पियेगा और वह सुधर गया है। करुप ने एक-दो महीने तक अपना वचन निभाया भी, लेकिन फिर उसमे वेही पुरानी आदते पड़ गई और उसकी सारी कमाई ताडी की दूकान मे जाने लगी। पार्वती के पल्ले एक पैसा भी नही पडता। करुप घर से लगातार दो-दो तीन-तीन दिन तक बाहर रहता और लौटता तो ढोरो के लिए थोड़ा-बहुत घास-दाना ले आता और बाकी आमदनी के लिए इधर-उधर की झूठी बातें बना देता। पार्वती सोचती कि भला थोडे-से रुपयो के लिए वह झूठ क्या बोलेगा। लेकिन कुछ दिनो बाद करुप ने इसकी भी ज़रूरत नही समझी और हारकर पार्वती ने भी उससे पूछना बन्द कर दिया। फिर भी, पैसे कमाने के लिए वह दिन-रात घर पर और घर के बाहर भी काम करती रही।

करुप किस्त नही चुका पाया। एक दिन कादिर ख़ाँ ने आकर रुपये का तकाज़ा किया और बहुत खरी-खोटी सुनाई। यो तो पार्वती को भी मिस्त्री से ऐसी कडवी बाते सुनने की आदत पड गई थी लेकिन कादिर ख़ाँ की गन्दी बाते उससे सुनी न गईं। भीतर जाकर उसने जोडे हुए सारे पैसे बटोरे और कादिर ख़ाँ के सामने लाकर पटक दिये। करुप के बार-बार छीनते-झपटते रहने पर भी वह कुछ न कुछ बचाती ही रहती थी।

उस दिन पार्वती की आँखो के आँसू सूखे नही। जी ठीक नही था, फिर भी अगले दिन वह रोज़ की तरह काम पर चली गई। कादिर ख़ाँ की गदी बाते उसके मन से नही उतरी। अब तक तो वह इस बात की

परवा किये विना ही कि मै औरत हूँ वह मेहनत के साथ और खुशी-खुशी काम करती रही थी, लेकिन अब उसमे एकाएक परिवर्तन आ गया। उसे अपने साथ काम करनेवाले मर्दों की बातचीत से डर लगने लगा। जैसे-जैसे उसका यह डर बढता गया वैसे-वैसे लफगो की बदमाशियाँ भी बढती गई। कादिर खाँ का लडका काम की देखभाल करता था। अब उसकी आँखो और बातो मे पाप झलकने लगा।

जब से पार्वती ने मज़दूरी का काम शुरू किया था वह ठीक तरह से अपने बच्चे की देखभाल नही कर पा रही थी। नतीजा यह निकला कि बच्चा कमज़ोर हो गया और एक दिन उसे ज्वर चढ आया। बीमारो के लिए गाँवो में न डाक्टर होते है न दवाएँ। दो-एक बार बच्चे को गरम लोहा छुआने का टोटका किया गया, लेकिन उससे कोई लाभ नही हुआ, एक हफ्ते बीमार रहकर उसने सदा के लिए आँखें मीच ली।

करुप औरतो की तरह रोने लगा। उसके पिता ने उसे समझाते हुए कहा—"बेटा, भगवान् ने दिया था उसी ने ले लिया।"

"लेकिन चाचा, भगवान् मेरी ऐसी परीक्षा क्यो ले रहा है ? मैंने तो कभी किसी को नही सताया," पार्वती ने रोकर ससुर से कहा।

"पगली, रोती क्यो है ? अभी तू बूढी थोडे ही हुई है ! अभी तो तेरे सात-आठ बच्चे हो सकते है। खेत मे डाले हुए सारे बीज थोडे ही फलते है और फिर भी हम उनके लिए रोते नही।"

"अब मुझे बाल-बच्चे नही चाहिएँ," पार्वती बोली, "मैंने इस दुनिया मे काफी सुख-दु ख देख लिया है, अब तो बस यही चाहती हूँ कि भगवान् मुझे उठा ले।"

इस पर बूढे ने हँसकर कहा—"अपने आदमी को समझा कि वह जो थोडा-बहुत कमाता है उसे ताडी मे न फूँके। फिर तो तुम जल्दी

इस दुख को भूल जाओगे और तुम्हारे और बच्चे होगे और तुम सुख के साथ जीवन बिताओगे।"

तब करुप ने प्रतिज्ञा की—"मै अपनी जान की कसम खाकर कहता हूँ कि इस ज़हर को अब छूऊँगा भी नही। अगर म इसे फिर छूऊँ तो गोली से उडा देना।"

५.

पार्वती की मुसीबतें यही खतम नही हुई। उसके खोटे दिन चलते रहे। अगले ही बुध को जब करुप रामपुर की ताडी की दूकान के पास से गुजरा तो अपनी कसम-वसम सब भूल बैठा। वह अपनी गाडी पर कुछ बोरे लादकर तिरुपुर ले गया था। वहाँ से दूसरे गाडीवानो के साथ लौटते हुए वह ताडी की दूकान के सामने ठहर गया और चिल्लाकर बोला—"अरे, ताडी पीने के लिए कौन उतर रहा है ? मुझे तो पीनी नही है। मै तो इस कमबख्त चीज़ के पास भी नही जाऊँगा।"

"अगर तू नही पीना चाहता तो अपना रुपया सेतकर रख, गला क्यो फाडता है ?" दूसरे गाडीवान ने जवाब दिया और वह गाडी से कूदकर ताडीखाने में घुस गया। थोडी देर वाद करुप भी उसके पीछे-पीछे पहुँचा। उसने अपने मन मे कहा—"आज और सही। आज के बाद फिर कभी नही पियूँगा।"

दूसरे बुध को भी ऐसा ही हुआ। उसने अपने साथी से कहा—"जब हमारे पास पैसा है तो क्यो न बेफिक्री से मौज उडायँ ?"

"ऐसी की तैसी पैसे की," उसके साथी ने कहा, "न यह हमारे साथ आया है न मरने के बाद हमारे साथ जायगा। अपने गाढे पसीने की कमाई को हम जैसे चाहे खर्च करे। हमे रोकनेवाला कौन है ?"

इस पर एक और पियक्कड, जो इनकी बाते सुन रहा था, फिलासफी झाडता हुआ बोला--"तुम ठीक कहते हो यार ? यह दुनिया दो दिन की है और यहाँ सब धोखा ही धोखा है। पता नही जो आज है वह कल रहे या न रहे। कौन जीता है यहाँ हज़ार साल तक ? जब आँखे बन्द हो जायँगी तो यह रुपया किसके काम आयगा ? मेरे न तुम्हारे।"

"किसी के नही, न मेरे न तुम्हारे। यह तो उस आदमी का है जो ताडीखाने मे बैठता है," चौथे ने कहा और सब खिल्ली मारकर हँस पडे।

"तुम सब गधे हो ? कैसी शास्त्रियो-जैसी बातें करते हो ? देखो तो यह चीज़ हलक से नीचे उतरते ही कैसी गरमी भर देती है," दूसरे ने कहा।

"इन बनियो को ठोकर मारनी चाहिए। बदमाश हमे लूट रहे है। इन्होने गाडियो का भाडा कम कर दिया है," करुप बोला।

अँधेरा होने तक वे इसी तरह की बाते करते रहे और फिर अपनी-अपनी गाडियो में बैठकर चलते बने।

कादिर खाँ को दूसरी किस्त देने की तारीख बिलकुल पास आ गई। पार्वती ने करुप से कहा कि उसके तकाज़ा करने से पहले ही रुपये दे आओ। इस पर करुप बोला--"मरने दो कमबख्त को। अगर उसने अबके आकर बक-बक करी तो मै उसकी खोपडी तोड दूँगा।"

शायद दूसरे कामो मे लगे रहने की वजह से कादिर खाँ बहुत दिनो तक नही आया और करुप भी उस बात को भूल गया।

एक दिन कादिर खाँ का बेटा इस्माइल आया, लेकिन रुपये माँगने की बजाय उसने करुप से पूछा--"मिर्चों की कुछ बोरियाँ रामपुर पहुँचा दोगे ?"

"मुझे कुमार कौंड का भूसा ले जाना है। एक हफ्ते पहिले से ही उसने मुझसे कह रखा है," करुप बोला।

"यह नही हो सकता। कुमार कौंड के भूसे की ऐसी जल्दी नही, लेकिन अगर हम आज बोरियाँ न भेज सके तो एक अच्छा सौदा हाथ से निकल जायगा," इस्माइल ने कहा।

आखिरकार करुप राज़ी हो गया। जब इस्माइल ने अपने रुपयो का तकाज़ा न करने की कृपा की थी तो वह ही कैसे मना कर सकता था!

उसी शाम को, जब पार्वती अपने घर मे अकेली खाना बना रही थी, इस्माइल खाँ आया। बाहर ही रुककर उसने पूछा—"करुप अभी लौटा या नही ?"

"अभी नही," पार्वती ने जवाब दिया।

"ठीक है, वह इतनी जल्दी कैसे आ सकता है, रास्ते मे ताडीखाना जो है," यह कहता हुआ इस्माइल खाँ अन्दर चला आया।

"हाँ, ये ताड़ीखाने इसीलिए चलते है कि गरीब आदमी बरबाद हो जायँ और नरक का दु ख भोगें," पार्वती ने जवाब दिया।

पार्वती से बिना पूछे ही इस्माइल बैठ गया। पार्वती ने सोचा कि यह करुप के आने की इन्तजार कर रहा है, इसलिए उसने कुछ चिन्ता नही की और अपने काम में लगी रही।

इस्माइल कहता रहा–"क्या तुम अपने आदमी की आदतो से तग नही आ गई हो ?"

"यह कैसे हो सकता है, साहब! अच्छे हो या बुरे, हमे तो अपने आदमियो के साथ निभाव करना ही पडता है," मुँह फेरे-फेरे पार्वती ने कहा।

"ठीक है, वह तुम्हारा ब्याहता है, तुम उसे छोड कैसे सकती हो ?" इस्माइल ने कहा।

कुछ देर बाद उसने दया दिखाते हुए फिर कहा—"यह कैसी बदनसीबी की बात है कि तुम-जैसी खूबसूरत औरत का एक शराबी से पाला पडा है।"

पार्वती ने कोई उत्तर नही दिया। थोडी देर बाद करुप की इन्तज़ार किये बिना ही इस्माइल चला गया।

दूसरे दिन इस्माइल ने फिर किसी काम के बहाने करुप को बाहर भेज दिया और शाम को वह पार्वती के घर आया। अपने साथ वह थोडा-सा खजूर का गुड लेता आया और पार्वती को ज़बरदस्ती देकर बोला कि यह मूप से एक आसामी ने ऐसे ही भेंट भेज दी थी।

"तुम्हे देखकर मुझे इतनी खुशी होती है कि क्या बताऊँ।" इस्माइल बोला।

पार्वती ने मन ही मन में सोचा कि पता नही इन सब बातो का क्या मतलब है और वह डर गई।

"जब मै तुम्हारे पास आता हूँ तो तुम डर क्यो जाती हो?" इस्माइल ने कहा। "क्या तुम सोचती हो कि मै तुमसे रुपयो का तकाज़ा करूँगा? मुझे रुपयो की परवा नही है। बस तुम मुझसे हँसबोल लिया करो।"

बहुत दिनो तक पार्वती ने अपने को पतन के गडहे में गिरने से बचाया, लेकिन जब-जब वह करुप को ताडी पिये देखती तब-तब उसकी दृढता कम होती जाती और एक दिन उसमे दुर्बलता आ ही गई।

६.

कीरमबूर के ताडीखाने के बाहर, दीवाल मे बनी हुई छोटी खिडकी के पास, जहाँ से ताडी मिलती थी, बहुत-से चमारो, कोलियो और दूसरे अछूतो का जमघट लगा हुआ था और वे ऊटपटाँग शोर मचा रहे थे।

अन्दर भी थूक, धूल और गदगी के मारे नरक-सा दिखाई देता था। मक्खियाँ भिनक रही थी और ताडी की बदबू से नाक सडी जा रही थी। चारो ओर पियक्कडो की टोली की टोली बैठी हुई ऊधम मचा रही थी।

"अगर तूने फिर ऐसी बात मुँह से निकाली तो दाँत तोड डालूँगा," करुप ने कहा।

"दाँत तोड डालेगा! और तू! तू जो अपनी औरत तक को सीधा नही रख सकता! खूब, जरा इस दाँत तोडनेवाले की सूरत तो देखो," पलनि ने जवाब दिया।

इस पर करुप ने ताडी का कुल्हड उठाकर तडाक से पलनि के मुँह पर दे मारा। पलनि की नाक से खून का फव्वारा छूट पडा।

एक ने चिल्लाकर कहा—"उल्लुओ, क्यो ताडी का नाश कर रहे हो। अरे, कही धोखेबाज औरतो के लिए ऐसी अच्छी चीज बरबाद की जाती है! तिरिया का क्या विश्वास, वे तो सब की सब बेवफा होती है।"

पलनि की नाक से खून बहता रहा। "अरे पलनि मर गया," एक ने कहा और उसके पास जाकर उसके मुँह पर से खून पोछा। पलनि के ज्यादा चोट नही लगी थी। उसने गुस्से मे खडे होकर एक ईंट करुप पर तानकर फेंकी। करुप कतराकर अपने को बचा गया।

दूकानवाले ने चिल्लाकर कहा—"दूकान के अन्दर लडाई मत करो।"

करुप बाहर भागा। पलनि भी उसके पीछे दौडा, लेकिन चौखट पर ठोकर खाकर गिर पडा। करुप गाडी मे जा बैठा और बैलो को हाँककर जोर-जोर से चिल्लाता और गालियाँ देता हुआ चला गया।

आज करुप घर पर रोज़ से जल्दी पहुँच गया। दरवाजा अन्दर से बन्द था।

करुप ने चिल्लाकर आवाज़ दी—"अरी दरवाजा बन्द करके अन्दर

इस्माइल के सिर से ख़ून की धारा वह निकली

क्या कर रही है ? मै वाहर इन्तजार मे कब तक खडा रहूँ ? दरवाज़ा खोल और बैलो को पानी पिला।"

अन्दर किसी के चलने की आहट सुनाई दी, लेकिन दरवाजा नही खुला। करुप आवाज़े देता रहा। कुछ देर बाद पार्वती वाहर आई और करुप के सामने खडी होकर वोली—"मेरे साथ आकर ज़रा भैस को तो देखो। इसे न जाने क्या हो गया है, लाते मारती है और धार नही निकालने देती।"

"भैस जाय भाड मे। मुझे प्यास लगी है, थोडा पानी ला," यह कहता हुआ करुप अन्दर चला गया।

इस्माइल भीतर था। करुप को आते देख वह दीवाल के सहारे-सहारे भाग निकलने की कोशिश करने लगा, लेकिन करुप की दृष्टि से वच न सका।

"वदमाश कही की" ! करुप दहाडा और पास पडी हुई कुदाली उठाकर उसने पार्वती पर फेकी।

फिर उसने दराँती उठाई और भागते हुए इस्माइल पर पूरी ताकत से तानकर मारी। इस्माइल घायल होकर गिर पडा और उसके सिर से खून की धारा वह निकली। इसके वाद करुप पार्वती की ओर झपटा, लेकिन वह भागकर जेठ के घर चली गई। थोडी दूर तक करुप ने उसका पीछा किया, लेकिन पडोसियो को अपनी ओर आते देख वापस चला गया। उसी वक्त उसने देखा कि इस्माइल फिर उठकर भागने की चेष्टा कर रहा है। वह उसकी ओर पागल की तरह लपका और वोला—"आज तुझे जान से मारकर ही रहूँगा।" लेकिन उस समय तक वहुत-से आदमी इकट्ठे हो गये थे, उन्होने उसे पकडकर उसके हाथ से दराँती छीन ली।

## ७.

करुप और पार्वती रामपुर की पुलिस चौकी पर अलग-अलग कोठरियो मे वन्द कर दिये गये।

वहुत-से सिपाही पार्वती के सीखचो के सामने घूम रहे थे और उसे देख-देखकर मुसकरा रहे थे। वे सब इस बात की ताक मे थे कि किसी तरह पार्वती से बात करने का मौका मिले। लेकिन वह रज मे डूबी हुई थी। उसकी आत्मा को बडा कष्ट हो रहा था और उसकी दशा उस जानवर-जैसी हो रही थी जो जगल की आजादी में पला हो और पकडकर पहली बार कटघरे मे वन्द किया गया हो।

"सारी बातें सच-सच वता देगा तभी हम तुझे छुडाने की तरकीब सोच सकेगे," दारोगा ने करुप से कहा।

"छिपाने की क्या वात है? मुझे तो कुछ खबर ही नही। करुमाडूर से मै शुक्रवार को लौटा," करुप ने जवाब दिया।

"इस तरह की गडबड बातो से कोई फायदा नही, तेरी औरत ने सब कुछ बता दिया है।"

"अच्छा! चुडैल ने सब कुछ कह दिया? उस कमबख्त की वजह से मै बरबाद हो गया।"

"हाँ ठीक है, औरत ही सारी मुसीबत की जड होती है। अच्छा, अब सारा किस्सा बयान कर डालो।"

"अब मुझे क्या बताना रह गया, अभी तो आप कह रहे थे कि मेरी औरत ने सब भेद खोल दिया है।"

"यह तो ठीक है, लेकिन हमे तो तुमसे कबूलवाना है। अगर तुमने ऐसा नही किया तो सात साल की सख्त सजा भुगतनी पडेगी, समझे?"

"भुगतने दो सात साल की सजा। मै कुछ नही बताऊँगा।"

"नरमी से पूछने पर यह गँवार कभी ठीक-ठीक नही बतायगा। इससे तो ज़बरदस्ती कबूलवाना पडेगा," पास खडे हुए एक सिपाही ने कहा। फिर उसने कुछ ऐसी बाते करने को कही जो यहाँ लिखी नही जा सकती।

"हाँ, हाँ, इसकी अच्छी तरह से देखभाल करो," दारोगा ने 'देखभाल' शब्द पर एक विशेष ढग से ज़ोर देते हुए कहा।

पार्वती से भी पूछताछ हुई।

"देख औरत, तू बेकसूर मालूम होती है। अगर तू सच-सच बता देगी तो बच जायगी। क्या जुम्मे की शाम को कादिर खाँ अपने बेटे इस्माइल के साथ तेरे घर गया था ?" जमादार ने पूछा।

"बाप और बेटा दोनो ? नही," पार्वती ने कहा।

"हूँ ! तो इस्माइल अकेला गया था !" जमादार ने कहा और पास खडे हुए सिपाहियो की तरफ आँख मारी।

"सरकार मुझसे ऐसी बाते न करे। मेरे घर मुसलमान का क्या काम ? एक औरत से ऐसे गदे सवाल आप कैसे पूछ सकते है ? मुझे मेरे घर भेज दीजिये, वहाँ मेरे सास-ससुर है। अगर आप उनसे पूछेगे तो वे सब बता देंगे।"

"ओ, तो तू घर जाना चाहती है ! ऐसी जल्दी क्या है ! देख अगर तू सच बोलेगी तब तो घर जा सकेगी नही तो तुझे यही रहना पडेगा।"

"ओ मेरे भगवान् !" पार्वती रोकर बोली।

"सीधे-सीधे पूछने से यह कुछ नही बतायगी। बडी चालाक औरत है। इस कुतिया ने न जाने कितने नौजवानो को बरबाद किया है," जमादार बोला।

"क्या आपके लडकियाँ नही हैं ? एक बेगुनाह और गरीब औरत पर तरस खाइये और मुझे अपनी बहिन समझिये," पार्वती ने गिडगिडा-कर कहा।

"अरे लाना तो गरम लोहा जरा," जमादार चिल्लाकर बोला।

"हजूर, मेरे आदमी से पूछ ले, वह सब बाते बता देगा। बेकार एक मासूम औरत को क्यो सताते हैं ?"

"तो क्या तू सोचती है कि हमने तेरे आदमी से नही पूछा ? हम उससे पूछ चुके है, उसने सब कुछ बता दिया है," दारोगा ने कहा।

"क्या सचमुच उसने सब कुछ कह दिया है ?" पार्वती ने दुखी होकर पूछा ।

"हाँ, हाँ, सब कुछ बता दिया है। वह कहता है कि सब कुछ तेरी ही बदमाशी की वजह से हुआ है !"

"ओ मेरे राम !" पार्वती हाथ मल-मलकर रोने लगी और पछाड खाकर गिर पडी ।

"देख औरत, रोने-धोने से काम नही चलेगा। इन बातो से तू हमें धोखा नही दे सकती। तू बनना तो खूब जानती है ! सच बता, कितनो को तबाह कर चुकी है तू ?"

"ऐसी बाते मत करिये, सरकार ! आप सब तो मेरे भाई के बराबर हैं। उस आदमी ने मुझसे अपना रुपया माँगा था।"

"अच्छा तो अब आई ठीक रास्ते पर," जमादार ने कहा।

"मैंने आपसे कहा न था, दारोगा साहब ?" वह दारोगा की ओर मुड़ता हुआ बोला और फिर पार्वती की तरफ देखकर कहने लगा--"ऐ औरत, इधर सुन, अगर तू सच बता देगी तो हम वादा करते है कि तुझे छोड देगे और तेरा आदमी भी थोडी-सी सजा

पाकर छूट जायगा। हम औरत जात को जेल भेजना नहीं चाहते।"

"हजूर मुझे आज रात घर जाने दीजिये, फिर मैं सब कुछ बता दूँगी," पार्वती ने कहा।

"अच्छी बात है, इसे घर जाने दो; ऐसा मालूम होता है कि यह सच्ची बातें बताने को तैयार है," दारोगा ने कहा।

"अगर यह घर चली गई तो फिर सच बात कभी नही बतायगी," जमादार ने दारोगा को सावधान करते हुए कहा।

इस पर दारोगा ने सिपाही के कान में कहा—"हमने इसे गिरफ्तार नही किया है, सारी रात हवालात में कैसे रख सकते हैं?"

"बहुत अच्छा, तो हम इसे पहरे में घर भेजे देते है और कल फिर पहरे मे ही बुला लेंगे," सिपाही बोला।

८.

करुप के बाप ने अपने बडे बेटे से एक वकील करने को कहा। खर्च के लिए उन्होंने करुप की गाडी बेच दी और उन रुपयो के निबट जाने पर दूसरे गाँव में किसी सम्बधी के पास उसकी भैंस गिरवी रखकर कुछ और रुपया उधार ले लिया। पार्वती को उन्होंने जी भरकर कोसा। उनकी समझ मे वही सब मुसीबतो की जड थी।

करुप के वकील ने मजिस्ट्रेट के सामने गवाही पेशकर यह साबित करने की कोशिश की कि दुर्घटना के समय करुप करुमाडूर मे था। उसने पूरे तीन घटे तक जिरह की जिसे सुनकर करुप के भाई-बाप को बडी खुशी हुई।

कादिर खाँ ने भी हलफ उठाकर गवाही दी। उसने बयान मे कहा—"मै अपने बेटे के साथ करुप के घर रुपये का तकाज़ा करने गया था, वहाँ करुप ने मुझे गालियाँ दी और जब हमने अपने रुपयो के

लिए ज्यादा जोर दिया तो करुप ने हँसिया निकालकर मुझपर हमला किया, लेकिन मेरा लडका इस्माइल बीच मे आ गया और चोट उसको लगी। तकदीर से उसकी खोपडी बच गई और सिर्फ दाहिना कान ही कटकर रह गया, नही तो वह वही ढेर हो जाता।"

पार्वती की भी गवाही ली गई। वकील के सिखाने के मुताबिक उसने हर बात से इकार कर दिया और कहा कि मैने जो बयान पुलिस के सामने दिया था वह मुझसे जबरदस्ती दिलवाया गया था।

मजिस्ट्रेट ने मुकदमा सेशन के सिपुर्द कर दिया।

अब करुप के बैल भी बेच डाले गये और सेशन की अदालत के लिए नया वकील करा गया। मुकदमा खतम होने तक के लिए पार्वती भाई के पास रहने पीहर चली गई।

पार्वती का भाई बहुत ही गरीब था। खाने-पीने तक का गुज़ारा मुश्किल से होता था। उसकी स्त्री नल्लायी पार्वती को अपने साथ आकर रहते देख जल-भुनकर राख हो गई। एक दिन जब पार्वती दरवाज़े के पास खडी हुई अपने भाई से रो-रोकर बाते कर रही थी, नल्लायी बाहर आई और चिल्लाकर बोली—"हम ऐरे-गैरे को अपने घर मे नही ठहरा सकते, यहाँ तो अपनी ही रोटी के लाले पड रहे हैं।"

फिर बाहर से दरवाज़ा बन्दकर वह खेत पर चली गई।

"पार्वती, गाय के छप्पर मे से गोबर इकट्ठा कर ले और खेत पर ले जा," उसके भाई ने कहा। पार्वती मुफ्त रोटियाँ नही तोडती थी। दिन-रात कडी मेहनत कर वह घर के काम में भावज का हाथ बँटाने की कोशिश करती थी, फिर भी भावज का हृदय नही पसीजता था। वह सदा पार्वती का अपमान करती रहती थी और बेचारी पार्वती सब कुछ सब्र के साथ सह लेती थी।

एक दिन सुबह ही सुबह एक सिपाही आया। मेशन की कचहरी में करुप का मुकदमा पेश होनेवाला था इसलिए उसने पार्वती से गवाही देने चलने के लिए कहा। पार्वती भावज के ताने-तिशनो से इतनी दु खी हो गई थी कि इस सम्मन तक से उसे कुछ तसल्ली हुई। सिपाही लम्बे कद का बडी-बडी मूँछोवाला एक बूढा मुसलमान था। देखने मे वह बडा भयानक लगता था, लेकिन उसकी बातो में बाप की-सी ममता थी।

वे ईरोड की तरफ, जहाँ उन्हे ट्रेन पकडनी थी, पैदल जा रहे थे। सिपाही ने पार्वती से कहा—"बहिन, सारी बाते सच-सच बता देना, मुमकिन है कि इससे साहब को तुमपर रहम आ जाय और वह तुम्हारे आदमी को रिहा कर दे।"

"मै सच बात कैसे बता सकती हूँ, सिपाही जी ? बडी बेइज्जती होगी।"

"बेइज्जती की क्या बात है ? आदमी से तो भूल-चूक होती ही रहती है। ऐसा तो शायद ही कोई हो जिसने एक दफा भी इस तरह धोखा न खाया हो। खुदा हम सब पर निगाह रखता है, फिर भी वह कभी-कभी हमे गुनाह करने ही देता है। यह सब उसी की मर्जी से होता है।"

"तो तुम्हारी राय है कि मुझे सब कुछ बता देना चाहिए ? मै बिरादरी से निकाल दी जाऊँगी और मेरा आदमी मुझे अपने घर में नही घुसने देगा। तब मै क्या करूँगी ?"

"अगर तुम सच बोल दोगी तो तुम्हारा आदमी छ महीने की ही सजा पाकर छूट जायगा, नही तो छ साल के लिए जायगा। बिल्कुल इसी तरह का मुकदमा पहले हो चुका है। अगर इस वक्त

तुम अपने आदमी की मदद करोगी तो वह तुम्हारा एहसान मानेगा और मदिर मे कुछ भेट-पूजा चढाकर तुम्हे फिर जाति मे मिला लेगा। चाहे जो कुछ हो, सच बोलना हमेशा अच्छा होता है।"

पार्वती चुप हो गई। आत्मा ने कहा कि सच बोल देना चाहिए, लेकिन दूसरे ही क्षण उसके मस्तिष्क मे कुछ और विचार उठे जिन्होने इस सद्भावना को दबा दिया। भय और घबराहट से उसका दिमाग चकराने लगा और वह मन ही मन मे भगवान् को याद करने लगी।

ईरोड पहुँचकर सिपाही ने उसे रेल के डिब्बे मे बैठा दिया। पार्वती के लिए रेल मे सफर करने का यह पहला अवसर था। स्टेशन की भीड और ट्रेन की रफ्तार से वह डर-सी गई। धीरे-धीरे सब बाते उसके विचारो की उलझन मे मिल गई और उसे हर चीज घूमती-सी दिखाई देने लगी।

ट्रेन तेजी से चल रही थी। एकाएक एक मुसकराता हुआ छोकरा न मालूम कहाँ से आ खडा हुआ और गाने लगा। उसकी दोनो आँखे अन्धी थी। चिथडा पहने हुए एक दूसरा लडका भी उसके साथ ही खडा होकर गाने लगा।

"बदमाशो, कहाँ छिपे हुए थे अब तक ?" सिपाही बोला। छोकरे बिना उत्तर दिये मुसकराते और गाते रहे। वे बडे प्रेम से गा रहे थे और उनके गाने मे भावो की एक ऐसी सुकुमारता थी जो बडे-बडे सगीत-विद्यालयो मे नही बल्कि गलियो मे सीखी जाती है। गाना खतम हो जाने पर अन्धे लडके ने अपना हाथ फैलाया और दूसरे ने उसे पकडकर गाडी मे चारो तरफ घुमाया। सब लोगो ने उन्हे कुछ न कुछ दिया। पार्वती ने भी अपनी धोती के छोर से एक पैसा खोल-कर उसे दे दिया। सारे दिन वह गीत उसके कानो मे गूँजता रहा।

उसके गूढ अर्थ को वह समझ तो न सकी लेकिन कुछ कडियाँ और छोकरे की वेदना भरी आवाज उसे बार-बार याद आती रही।

गाने का अर्थ था—"मा और सगे सम्बन्धियो से छिपकर मैंने क्या-क्या पाप नही किये ? क्या मैंने मारकर खाया नही और खाकर मारा नही ? फिर भी क्या मै इच्छा को रोकना सीख सकी ? वह इच्छा, जो दिन पर दिन अधिकाधिक उस वस्तु को चाहती है जिसके लिए कभी इच्छा की ही नही जानी चाहिए। क्या जाति और धर्म का विरोध करके मेरे जन मुझे स्वीकार करेंगे ? क्या धर्मवाले मुझे अगीकार करेंगे ?—मुझे, जिसने ओ मेरी वहिन, निर्लज्जता के साथ धूर्ततापूर्ण जीवन बिताया है।"

## ६.

मेलम पहुँचकर सिपाही पार्वती को एक गरीबो के ढावे मे ले गया और ढावेवाली से पार्वती को 'आधी खूराक' देने के लिए कहा। 'आधी खूराक' ढावो का एक विशेष शब्द होती है।

ढावेवाली ने पार्वती से मेलम आने का कारण पूछा और जब पार्वती ने यह बताया कि मै एक सेशन के मुकदमे मे गवाही देने आई हूँ, तो उसके चारों तरफ भीड इकटठी हो गई। वे सब आदमी लका मे चाय के बगीचो मे काम करने के लिए ले जाये जा रहे थे।

उस दिन अदालत मे खून का एक पुराना मुकदमा चल रहा था, इसलिए करुप का मुकदमा पेश नही हुआ। दूसरे दिन जब मुकदमे की सुनवाई हुई तो पार्वती गवाही देने के लिए नही बुलाई गई। सरकारी वकील ने कहा कि मुझे उसकी आवश्यकता नही है।

लेकिन करुप के वकील ने कहा कि मै उससे मुजरिम के बारे मे गवाही दिलवाना चाहता हूँ; इसलिए उसे रोक लिया जाय। शाम को करुप का बडा भाई पार्वती को अपने वकील के पास ले गया।

वकील ने भी उससे सब बाते सच-सच कह देने के लिए कहा, जैसा कि रास्ते मे सिपाही ने कहा था।

पार्वती अपने पति को बचाना तो अवश्य चाहती थी लेकिन अपने अपराध को स्वीकार करने के विचार से कॉप उठती थी।

अन्त मे उसने कहा—"भगवान् जैसा कहलायगा वैसा कहूँगी।"

"कमबख्त, तू भी भगवान् का नाम ले सकती है ? मारो इसे पुरानी जूतियो से," करुप के बडे भाई ने डपटकर कहा।

इस पर पार्वती डर के मारे कॉप उठी और बोली—"अच्छा तो जैसा तुम कहोगे वैसा ही करूँगी। एक औरत कर ही क्या सकती है ?"

वकील यही चाहता था। उसने सब को चले जाने के लिए कहा और थोडी देर तक करुप के भाई से अकेले मे बातचीत की।

दूसरे दिन पार्वती बहुत काफी देर तक और आदमियो के साथ अदालत के सामने एक वृक्ष के नीचे प्रतीक्षा करती रही। एकाएक किसी ने जोर से उसका नाम लेकर पुकारा। पार्वती चौंक पडी। तभी एक चपरासी ने आकर हाकिमाना ढग से कहा "इधर आओ," और वह उसे गवाहो के कटघरे मे ले गया। वहाँ उसने जो कुछ भी देखा उससे उसका माथा चकरा गया। कमरे के पच्छिमी कोने मे उसका पति सीखचो के पीछे एक जगली जानवर की तरह खडा हुआ उसकी ओर घूर रहा था। उसके सिर के बाल और दाढी-मूँछ बहुत बढ रही थी और वह इतना डरावना दिखाई पडता था कि पार्वती उसे पहचान भी मुश्किल से पाई। जब एक गरीब किसान कैदखाने मे बन्द कर दिया जाता है और दो तीन महीने तक उसे नहाने-धोने और हजामत बनाने नही दिया जाता तो कुछ ही दिनो में वह हत्यारा-सा दिखाई देने लगता है।

"हाय, इस मुसीबत की जड मै ही हूँ," पार्वती ने मन ही मन में कहा और उसे भयकर मानसिक पीडा हुई। अपने सामने के सीखचो को पकडकर वह बडी चेष्टा के साथ सीधी खडी रह सकी और जब पेशकार ने चिल्लाकर हलफ उठाने को कहा तो उसके सिर मे चक्कर आ गया।

"मै भगवान् को साक्षी देकर कहती हूँ कि मै सच कह रही हूँ। उस शाम को जब मै खाना बना रही थी .. "

जज ने सरकारी वकील की तरफ देखा और कहा—"मालूम होता है कि इसने सारी बातें अच्छी तरह से रट रखी है।" पैरवी के गवाहो के साथ ये हमेशा ऐसी ही व्यवहार करते है।

"कोई बात नहीं, अभी सब कुछ भूल जायगी" जज ने फिर कहा।

जज के इस व्यग्य पर इजलास मे बैठे हुए लोगो ने खूब कह-कहा लगाया। सरकारी वकील की हँसी सब से तेज थी। दूसरे वकीलो ने भी ज़रा देर बाद उसका साथ दिया। करुप का वकील भी धीरे से मुसकराया।

"जो मै कहूँ उसे दुहराती चलो," पेशकार ने कठोरता के साथ कहा? इससे पार्वती की घबराहट और भी बढ गई। उसने सोचा—"तो क्या जो बात वकील और जेठ जी ने सिखाई थी वह अब किसी काम नहीं आयगी? क्या अब वही कहना पडेगा जो पेशकार कहेगा?"

हलफ उठाने के बाद जिरह शुरू हुई। कभी-कभी तो पार्वती अपने से पूछे गये सवाल समझ भी नही पाती थी। "जब मै खाना बना रही थी तो इस्माइल आया और मुझसे अनुचित प्रस्ताव करने लगा। मै मना कर ही रही थी कि अचानक मेरा आदमी आ गया और उसने

मुझ पर कुदाली फेंककर मारी। मैं डरकर बाहर भाग गई और फिर क्या हुआ इसकी मुझे बिलकुल याद नही, सिवा इसके कि मैंने इस्माइल के सिर से खून की धारा बहते देखी।" यह थी वह कहानी जो वकील ने पार्वती को बयान मे बताने के लिए सिखाई थी।

"चुड़ैल," करुप अपने कटघरे में से चिल्लाया। उसे अभी तक यही उम्मीद थी कि उसके आदमी गवाही दिलाकर यह सिद्ध करा देंगे कि अपराध के समय वह करुमाडूर मे था। उसके वकील ने उसके पास जाकर कान में कुछ कहा जिससे उसे कुछ ढाढस-सा बँधा। जिरह के खतम हो जाने पर असेसरो ने राय दी कि गवाही से यह साबित नही हो सका कि मुजरिम का इरादा खून करने का था, उसने अधिक उत्तेजित किये जाने के कारण ही इस्माइल को गहरी चोट पहुँचाई थी।

जज ने कार्रवाई अगले दिन के लिए मुलतवी कर दी। दूसरे दिन फैसला सुना दिया गया। जज ने असेसरो की राय ठीक नहीं समझी और कहा कि मुजरिम का खून करने का इरादा साबित हो गया है। उसने कादिर खाँ और इस्माइल के इस बयान को सच मान लिया कि हम दोनो करुप के यहाँ अपना रुपया माँगने गये थे, जब कि मुजरिम ने शराब के नशे में हम पर घातक हथियार से हमला किया लेकिन हम भाग्यवश बच गये और बाद मे गली मे भीड़ इकट्ठी हो जाने से हमारी जान बच गई। जज ने यह भी कहा कि करुप की औरत का बयान विश्वसनीय नही है क्योकि एक तो वह स्वभावत अपने पति को बचाना चाहती है और दूसरे उसके पुलिस और मजिस्ट्रेट के सामने दिये हुए बयान एक-दूसरे से नही मिलते। इसलिए उसने करुप को छ साल सख्त कैद की सजा दी और सरकारी वकील से यह भी कहा

कि आप पार्वती पर झूठी गवाही देने के लिए मुकदमा चलाने का वन्दोवस्त करे।

करुप फैसला सुनकर चिल्ला उठा—"इस चडालिन ने मुझे धोखा दिया है। आप ही वताइये सरकार कि जब अपनी औरत ही धोखा दे जाय तो कोई कैसे चुप बैठ सकता है।"

"ले जाओ इसको," जज ने कहा और सिपाही उसे लेकर चल दिये। उन्होंने उसे ढाढस बँधाने के लिए कहा—"तुम जो कुछ कहना चाहते हो लिखकर हाईकोर्ट मे अपील करो।"

## १०.

मुकदमा खतम हो गया। पार्वती के किसी भी रिश्तेदार ने उसकी खोज-खवर नही ली। बडी कठिनाई से बेचारी रामपुर तक पहुँची। वही पुराना सिपाही जो उसे सेलम लाया था उसे वापस भी ले गया।

"तुम्हें शुरू से ही सच बोलना चाहिए था," सिपाही ने कहा। "चूँकि तुम पहली अदालत मे सच नही बोली थी, इसलिए जज ने तुम्हारी बात का यकीन नही किया। सारी सच्ची बात तो तुमने यहाँ भी नही कही।"

ये शब्द पार्वती के कानो मे पडे अवश्य लेकिन जैसे उसकी कुछ समझ मे नही आया। काफी रात हो जाने पर वे रामपुर पहुँचे। मुसल्मान सिपाही ने कहा कि आज रात यही मेरे बरामदे मे सो जाओ, कल सवेरे अपने भाई के घर चली जाना।

उसके कहने से वह पड तो गई लेकिन उसे नीद नही आई। "हाय अव भाभी को मै कैसे मुँह दिखाऊँगी," उसने सोचा। उसकी सारी आशाएँ टूट चुकी थी। भगवान् तक ने उसे भुला दिया था। उसे अव अपने कष्टमय जीवन का अन्त करने के अलावा कोई चारा नही रह

गया था। भगवान् को धन्यवाद कि अब भी एक ऐसी युक्ति थी जिससे सारे दु:खो का अन्त हो सकता था। इस युक्ति को पार्वती से कोई नही छीन सकता था।

बहुत देर तक जागते रहने के बाद सुबह होते थकावट के कारण पार्वती को नींद आ गई। मुसलमान सिपाही जब सुबह छ बजे बाहर निकला तो उसने पार्वती को गहरी नींद मे सोते पाया। "अपने आदमी को जेल भिजवाकर कैसे मज़े मे सो रही है," उसने सोचा। "इन बेवफा औरतो का यकीन करना कितनी बेवकूफी है!"

पार्वती एक बच्चे के रोने की आवाज़ सुनकर उठ बैठी। वह सपना देख रही थी कि मेरा बच्चा रो रहा है। नींद खुलने पर भी उसे कुछ देर बाद तक यह खयाल नही आया कि मेरे बच्चे को मरे एक जमाना हो गया है और अब मै एक असहाय औरत हूँ, जिसका पति और घर-द्वार सब कुछ छिन चुका है।

जब वह उठकर बैठी तो उसने अपने सामने एक काले-कलूटे लडके को देखा। उसने दोनो हाथो से अपना मुँह ढक रखा था और कभी वह बच्चे के रोने की-सी आवाज निकालता था तो कभी मा की-सी। पार्वती के उठकर बैठते ही वह चुप हो गया और पैसा माँगने लगा।

"तेरा घर कहाँ है?" पार्वती ने पूछा।

"मा मुझे एक पैसा दे दो," लडके ने चिल्लाकर कहा।

"तेरा बाप कौन है?" पार्वती ने फिर पूछा।

"मै नही जानता," लडके ने जवाब दिया।

"क्या तेरे मा भी नही है?"

"मा तो है, लेकिन वह मुझे सूअरवाले के यहाँ छोड गई है।"

"तुझे खाना कौन देता है ?"

"मैं खुद कमाता हूँ। जितने पैसे मुझे मिलते हैं मैं सूअरवाले को दे देता हूँ और वह मुझे खाना खिला देता है। कभी-कभी वह मुझे खाना खिला देता है और बाद मे जब मेरे पास पैसे बचते है तो मैं उसे दे देता हूँ।"

"ये अजीब तरह की आवाजे बनानी तूने कहाँ से सीखी ?"

'इन्हे मैंने तजावूर मे सीखा था। मा मुझे कुछ दे दो, मुझे सूअर-वाले के पास जाना है।"

इतने मे सिपाही बाहर आ गया और उसने लडके को धमकाकर भगा दिया। "ये सब बदमाश होते हैं। इस तरह दिन मे आकर सब भेद ले जाते है और रात को चोरो को लाकर चोरी करा देते है। रात को तुम अच्छी तरह सोई मालूम होती हो ?" सिपाही ने पूछा।

"भगवान् तुम्हारा भला करेगा। तुमने मेरे साथ बाप-जैसा बर्ताव किया है।" यह कहकर पार्वती फूट-फूटकर रोने लगी।

उस आदमी के मन मे अब पार्वती के लिए दया नही थी। उसने सोचा कि यह बन रही है। वह बोला—"तुम अब अपने भाई के घर जा सकती हो। अगर अभी चल दोगी तो दोपहर होने से पहले ही वहाँ पहुँच जाओगी।"

भूखी-प्यासी और बेहद थकी हुई पार्वती दोपहर को अपने भाई के घर पहुँची। उसे आशा थी कि उसके भाई का हृदय कुछ पिघल गया होगा। परन्तु उसके आने से पहले ही उसकी खबर गाँव मे पहुँच चुकी थी। भाई खेत पर चला गया था और भाभी द्वार पर खडी थी, पार्वती को आते देखकर बोली—"तू फिर आ गई ! यहाँ अपना काला मुँह मत दिखा। यहाँ ऐसी औरतो के लिए जगह नही है जो अपने आदमी

का सत्यानाश करके मुसलमानो के साथ भाग जाती है। अब तू चाहती है कि मेरे घर में बैठकर मेरे आदमी का खून चूसे ? मेरे बाल-बच्चे है और मुझे उनकी निगरानी करनी है। मै नही चाहती कि तेरा उनका साथ हो। उसी आदमी के पास जा जिसके लिए तूने अपने आदमी को धोखा दिया। यहाँ तेरे लिए जगह नही है।"

"भइया, भइया," पार्वती ने रोकर पुकारा। वह समझी कि भाई अन्दर है।

"क्या तुम मुझसे बोलोगे नही ? क्या तुमने भी मुझे छोड दिया ? हे भगवान्, अब तू ही रक्षा कर," पार्वती ने सिसकते-हुए कहा और भूखी-प्यासी, थकी-माँदी वह रोती हुई वहाँ से चल दी।

सूरज तप रहा था, परन्तु पार्वती को अब न गरमी सता रही थी, न भूख। उसका गला और उसके होठ प्यास के मारे सूख रहे थे और जिन-जिन देवी-देवताओ के नाम वह जानती थी उन्हें वह बडी कठिनाई से याद कर पा रही थी। दूसरे गाँव में पहाडी पर एक मन्दिर था। वह उसी ओर मुड गई।

पहाडी पर थोडी ही दूर चढने के बाद उसे लगा कि मै अब एक पग भी आगे नही रख सकती। उसे मूर्छा-सी आने लगी और वह एक चट्टान की छाया में बैठ गई।

कुछ देर बाद वह उठी और फिर पहाडी पर चढने लगी। वह मन्दिर तक पहुँच गई, परन्तु भीतर नही गई। बाहर खडे-खडे ही उसने प्रार्थना की। फिर वह मन्दिर से भी ऊँची एक चट्टान पर पहुँची और उसकी चोटी पर चढने लगी। रास्ता मुश्किल था, लेकिन पार्वती में एक नई शक्ति आ गई थी। चोटी पर पहुँचकर वह उसके पश्चिमी छोर पर गई और वहाँ से नीचे की तरफ झाँकने लगी। नीचे से लेकर

चोटी तक पहाड सीधा खडा था। उसे चक्कर आ गया और वह बैठ गई। लेकिन वह फिर उठी और "काली माई, मेरे पापो को क्षमा करके मुझे अपनी गोद में शरण दो" कहती हुई वह नीचे कूद पडी।

अहा, एक ही क्षण मे कितना सुख और आनन्द! पृथ्वी और आकाश घूम उठे। कितना शीतल! कितना सुखकर! कितना आनन्दमय! तव उसे अपने सिर मे एक इतनी ज़ोर का धडाका मालूम हुआ जैसा उसने पहले कभी नही सुना था और वह सदा के लिए अनन्त शान्ति मे लीन हो गई। उसकी आत्मा अपने दुख के पिंजरे को छोड कर उड गई।

# पुनर्जन्म

जब बालक और बंदर मिल जायँ तो फिर खेल-तमाशे की क्या कमी ? वेलमपट्टी गाँव के सब लडके इमली की बगिया मे इकट्ठे हो गये थे। कभी वे दरख्तो पर चढते थे, कभी नीचे कूदते थे और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर डालो पर बैठे हुए बन्दरो को भगाने की कोशिश करते थे। कभी-कभी बन्दर बाज़ी मार लेते थे। जब उनमे से सब से बडा बन्दर खडा होकर गुस्से से खो-खो करता था तो छोटे-छोटे लडके सारी छकडी भूल जाते थे और कुछ-कुछ डर भी जाते थे। हाँ, बन्दरो के छोटे-छोटे बच्चे ज़रूर बुरी तरह डरे हुए थे और उन्हे यह तमाशा बिलकुल अच्छा नही लग रहा था। लडको से बचने के लिए वे एक डाल से दूसरी डाल पर कूद रहे थे। लेकिन लडको को इसमे बडा मजा आ रहा था। उनकी चिल्ल-पो और बन्दरो की किलकिलाहट गाँव तक मे सुनाई दे रही थी।

एकाएक बगिया के पूर्वी किनारे से एक लडके के ज़ोर से चीख़ने की आवाज़ सुनाई दी। सब के सब उधर भागे। उन्होने देखा कि एक बन्दरिया ने मुकुन्द पर हमला कर रखा है और वह उसे नाखूनो से खसोट और उसकी गर्दन पर काट रही है और मुकुन्द के बडे ज़ोरो से खून बह रहा है। मुकुन्द ने बन्दरिया के बच्चे को खदेडा था और वह उससे

वचकर भागने की कोशिश करते वक्त डाल पर से फिसलकर गिर पडा था। मुकुन्द उसे उठाकर भाग खडा हुआ। इस पर वन्दरिया उस पर झपटी और उसे गिराकर बुरी तरह काटने-खसोटने लगी। मुकुन्द घवरा गया और उसकी समझ में नही आया कि क्या करूँ। घवराहट में उसने बच्चे को और भी कसकर पकड लिया। इससे वन्दरिया और भी चिढ गई और मुकुन्द को और भी बुरी तरह से काटने लगी। लडको ने चिल्लाकर कहा—"बच्चे को छोड दे, बच्चे को छोड दे," लेकिन मुकुन्द की समझ मे नही आया कि ये क्या कह रहे है। वन्दरिया वहुत वडी थी और क्रोध मे भर रही थी, इसलिए किसी लडके को उसके पास जाने का साहस नही हुआ।

मारि नाम का एक छोटा लडका दूर खडा-खडा सब-कुछ देख रहा था। "अरे यह मर जायगा" चिल्लाता हुआ वह दौडकर मुकुन्द के पास गया और वन्दरिया के बच्चे को छीनकर भाग खडा हुआ। वन्दरिया मुकुन्द को छोडकर मारि के ऊपर झपटी। मारि ने वच्चे को नीचे फेक दिया और पास ही पडी हुई एक छटी उठाकर वह क्रोध में भरी वन्दरिया का सामना करने को खडा हो गया। वन्दरिया अपने वच्चे को भागते देखकर उसकी ओर दौडी। वच्चा मा से चिपट गया और दोनो पास के एक वृक्ष की सव से ऊँची टहनी पर चढकर शान्ति के साथ वैठ गये, मानो कुछ हुआ ही न हो।

मुकुन्द पृथ्वी पर वेहोश पडा था। लडके यह चिल्लाते हुए कि मुकुन्द मर गया, उसे वन्दरिया ने मार डाला गाँव की ओर भागे। लेकिन मारि चिन्ना के साथ वही रह गया। उसने कहा—"चिन्ना जा मा से माँगकर एक वर्तन मे जल्दी से पानी ले आ" और मुकुन्द के पास वैठकर उसका मुँह पोछा और उसे आराम पहुँचाया। चिन्ना

भागकर मोहल्ले मे से एक मिट्टी के बर्तन मे पानी ले आया। मारि ने पानी लेकर मुकुन्द के मुँह पर छिडका। इससे उसे होश तो आ गया लेकिन उसके घावो से खून बहता रहा।

"चिन्ना इसे एक ओर से तू पकड और दूसरी ओर से मै पकडता हूँ, इसे इसके घर ले चलना चाहिए" मारि ने कहा और दोनो ने मिलकर उसे उठा लिया। मारि और चिन्ना थे तो अभी छोटे, लेकिन गरीब होने के कारण मेहनत के काम से घबराते नही थे।

२.

मुकुन्द की मा विधवा थी और ईश्वर से डरती थी। उसने कभी हिम्मत नही हारी और बडे अच्छे ढग से अपने बेटे का लालन-पालन किया। उसने अपने पति के लेनदारो से सारा कर्जा वसूल किया और चार एकड सूखी जमीन, जो वह छोडकर मरा था, एक किसान को लगान पर उठा दी। उससे जो कुछ भी आमदनी होती उससे वह अपनी गृहस्थी का काम चलाती थी। मुकुन्द को उसने गाँव के छोटे-से स्कूल मे दाखिल कर दिया था और घर पर वह उसे रामायण, महाभारत और भागवत की कहानियाँ सुनाया करती थी। इस तरह बाहर से वह साहसी तो दिखाई देती थी लेकिन अन्दर से उसके जीवन मे थकावट आगई थी। फिर भी परमेश्वर मे विश्वास रखने और परम्परा के अनुसार जीवन बिताते रहने से उसके दिन कटते रहे।

स्नान और दैनिक पूजा-पाठ के बाद वह चौके मे खाना बना रही थी कि मारि और चिन्ना "मा जी, मा जी" चिल्लाते हुए अन्दर आये और खून से लथपथ मुकुन्द को उन्होने उसके सामने लिटा दिया। "मेरे बच्चे", कहकर घबराई हुई मा उसकी तरफ झपटी और उसका सिर पकडकर चीख उठी—"अरे शैतानो, तुमने मेरे बच्चे को क्या

कर दिया ?" उस समय उसका व्यवहार ठीक वैसा ही था जैसा बगिया की उस बन्दरिया का जिसने समझा था कि उसका बच्चा खतरे में है। बन्दरिया हो या सीता, मा का हृदय एक-सा ही होता है।

मारि ने सारा किस्सा कह सुनाया। सुनकर सीता का हृदय कृतज्ञता से भर उठा। उसने उन बच्चो की ओर, जो मुकुन्द को घर लाये थे, प्यार से मुसकराकर देखा और पूछा—"तुम कौन हो, बच्चो ?"

"हम अछूत के लडके है, मा जी," मारि ने कहा।

सुनते ही सीता का चेहरा उतर गया और वह चिल्लाकर बोली—"अरे तुम अछूत के लडके हो! दुष्ट कही के! मेरे घर मे घुस आये! अरे राम, अब मै क्या करूँ? अरे, तुम तो मेरी रसोई के पास आ गये, कमीनो!" वह सब कुछ भूल गई और जोर-जोर से चिल्लाते हुए उसने एक चैला उठाकर बडे जोर से चिन्ना पर फेका। मारि बीच मे आ गया और लकडी उसकी टाँग मे लगी। चोट खाकर वह ज़मीन पर गिर पडा। चिन्ना चिल्लाता हुआ गली मे भाग गया।

"मेरे घर मे अछूत घुस आया," सीता ने चिल्लाते हुए कहा। "हाय मेरा तो जीवन नष्ट हो गया और उसे इतने पर भी सब्र न आया और अब वह सारे गाँव मे मेरा नाम लेता फिर रहा है।"

मारि, जो गिर गया था, उठकर बैठा और अपनी घायल टाँग को धीरे-धीरे सहलाते हुए बोला—"मा जी, मैने तो तुम्हारे बेटे को बन्दरिया से बचाया और तुमने उसका बदला मेरी टाँग तोडकर चुकाया।" गरीबो के बच्चे बाते करने मे बडे चतुर होते है।

"भाड मे पडे तू और तेरी बन्दरिया," सीता ने चिल्लाकर कहा। "इस पाप से मेरा कैसे छुटकारा होगा? अछूतो की तो परछाई से पाप

लगता है और ये तो मेरे घर मे पूजा की जगह चले आये ! हे भगवान्, मेरे ऊपर दया करो, मेरी रक्षा करो।"

मारि अब भी वही खडा-खडा अपनी टाँग सहला रहा था। "चडाल कही का, भाग यहाँ से" मुकुन्द की मा ने कहा और गुस्से मे भरकर उस पर दूसरी लकडी फेककर मारी। इससे उसे पहले से भी अधिक चोट आई। दर्द सह न सकने के कारण वह बिलबिलाता हुआ बाहर भाग गया।

गली मे भीड इकट्ठी हो गई थी। कोई पूछ रहा था "अरे क्या बात है" और कोई उसका जवाब दे रहा था। बडा हो-हल्ला मचा हुआ था। अछूतो के पुरवे से मारि और चिन्ना की मा भी आकर गली के मोड पर खडी हो गई थी और शोर मचा रही थी।

## ३.

इस घटना को दो साल बीत गये। मुकुन्द अब बडा हो गया था और कमलापुर के हाई स्कूल मे पढता था। उसे रोज दो मील जाना और दो मील आना पडता था लेकिन चूँकि उसके साथ दो लडके और जाते-आते थे इसलिए उसे चलना अखरता नही था। बन्दरवाली दुर्घटना सब भूल चुके थे, सिर्फ मुकुन्द के माथे पर का बडा निशान उसकी यादगार-सा रह गया था।

लेकिन मारि की मा कुप्पायी के हृदय मे शान्ति नही थी। "हम लोग ब्राह्मण के घर में कैसे पैर रख सकते है ? यह पाप जरूर हमे खाकर रहेगा। तुम दूसरे लडको के साथ खेलने गये क्यो ? भगवान् हमे माफ नही करेगा। इसीलिए तो आजकल हमे इतनी मुसीबत उठानी पड रही है। अबके तो पानी भी नही पडा है और हम सब भूखो मर रहे है। यह सब उस ब्राह्मणी के श्राप का फल है।" इसी तरह वह अक्सर

अपने लडके के मत्थे दोष मढा करती और अपनी सारी कठिनाइयो का कारण उसी दुर्घटना को समझती। गाँव के मन्दिर में जाकर वह देवी के सामने हाथ जोडकर कहती —"देवी मैया, मेरे बच्चे का कसूर माफ करो, वह नासमझ था।" उसने पोगल के लगातार तीन त्योहारो पर मुर्गा चढाया। लेकिन उसके इतनी श्रद्धा के साथ विनय करने और बलि चढाने पर भी मारिअम्मा ( देवी ) प्रसन्न होती दिखाई नही दी। मुसीबते एक के बाद दूसरी आती ही गई। पहले उसका पति केवल पैठ के दिन ही ताडीखाने जाया करता था, लेकिन अब वह रोज जाने लगा। नशे मे चूर होकर वह घर लौटता और डपटकर खाना माँगता। कुप्पायी जब कहती "खाना कहाँ से आय, सारे पैसे तो तुमने ताडी मे बहा दिये," तो वह उसकी लात-घूसो से मरम्मत करता। बेचारी सारे दिन जगल मे मेहनत कर कुछ लकडियाँ बटोरती और उन्हे बेचकर दो आने पैसे लेकर घर आती, लेकिन उसका आदमी लड-झगड़कर पैसे छीन लेता और ताड़ी-खाने चला जाता। इस तरह जब जीवन का भार असह्य हो उठता तो कुप्पायी अपने लडको को दोष देती और कहती—"यह सब ब्राह्मणी के श्राप का फल है।" इसी तरह जब उसका पति नशे मे घर आता और उसे पीटता तो वह चुपचाप मार सह लेती और कहती—"रोओ मत, बच्चो! हम इस मनहूस घर और गाँव को छोडकर कहीं चले जायँगे। मरे यह आदमी इसी ताडीखाने मे।"

उस साल एक बूँद भी पानी नही पडा। सारे खेत सूख गये और मज़दूरो की कही माँग नही रह गई। जब खुद छोटे किसानो की हालत ख़राब थी तो मजदूरी पर काम करनेवालो की दशा का दयनीय होना स्वाभाविक ही था। अछूतो और चमारो की हालत तो बयान से बाहर थी।

इसीलिए जब एजेन्ट लका के लिए कुलियो की भरती करने आया तो सबने उसका ऐसा स्वागत किया मानो कोई देवता उन्हे दु ख से छुडाने आया हो। इस पर गाँव के बडे किसानो ने कहा—"एजेन्ट गरीबो को धोखा दे रहा है और उनकी नासमझी से फायदा उठाकर उन्हे बहकाकर ले जा रहा है। अफसोस कि कोई इस अन्याय को रोकनेवाला नही।" लेकिन अछूतो और चमारो ने सोचा कि जितना कष्ट हम यहाँ उठा रहे हैं उससे तो कही भी रहेगे कम ही उठाना पडेगा। वे गाँव छोडकर एजेन्ट के साथ लका चले गये। कुप्पायी ने भी सोचा कि कष्ट से छुटकारा पाने का बस यही एक उपाय रह गया है और अपना नाम उन लोगो मे लिखवा दिया जो अपने बच्चो के साथ जाने को तैयार थे। उसके पति ने पहले तो जाने को मना किया और कुप्पायी ने तय किया कि इसका जहाँ जी करे वहाँ जाय, लेकिन बाद मे वह बोला--"मै भी तुम्हारे साथ चलूँगा, यहाँ मुझे खाना कौन देगा ?" उसने कसम खाकर यह भी कहा कि अब मै ताडी या ठर्रा नही छूऊँगा और वह साथ ले चलने के लिए गिडगिडाया। अन्त मे वे सब चले गये।

## ४.

तीन वर्ष बीत गये। स्कूल मे मुकुन्द बडी मेहनत के साथ पढता था। अन्तिम परीक्षा मे वह प्रथम श्रेणी मे पास हुआ। स्कूल में नतीजा सुनते ही मुकुन्द को फौरन घर जाकर मा को खबर सुनाने की उत्सुकता हुई, लेकिन उसके स्कूल के साथियो ने उसे अपने साथ मन्दिरवाली पहाडी पर चलने के लिए आग्रह करते हुए कहा—"चलो, पहाडी पर चले, वहाँ थोडी देर मेला देखकर लौट आयँगे।"

"पहाडी से तो लौटने मे देर हो जायगी और मा इतज़ार मे बैठी रहेगी," मुकुन्द ने जवाब दिया।

"बेवकूफी की बातें मत करो, तुम लडकी थोडे ही हो। अरे, देर हो जायगी तो मै तुम्हे तुम्हारे घर छोड आऊँगा, चिन्ता क्यो करते हो ? क्लास में अव्वल आने का घमड हो गया है क्या ? तुम्हें हमारे साथ चलना ही पडेगा," एक दबग-से बडे लडके ने हठ करते हुए कहा। "हाँ, हाँ चलना ही पडेगा," चारो ओर से लडको ने घेरकर कहा। मुकुन्द को सब पसन्द करते थे।

मुकुन्द को उनका कहना मानना ही पडा। बडा ही सुन्दर दृश्य था। भीड की भीड मेले की ओर जा रही थी। लडको को बडा मज़ा आया। वे मन्दिर मे चक्कर काटते फिरे और बाजार में जी भरकर घूमे। उनमे से एक लडका लाड-प्यार से पला हुआ एक अमीर का बेटा था। उसके पिता ने उसे अपनी इच्छा के अनुसार खर्च करने के लिए पाँच रुपये दिये थे। वे एक मिठाई की दूकान पर गये। वहाँ उन्होने बहुत-सी मिठाई खरीदी और सबने मिल-जुलकर खाया। फिर वे सारे दिन धूप में घूमते फिरे और शाम को घर लौटने के लिए नीचे उतरे। अभी वे आधी दूर भी नही गये थ कि मुकुन्द ने कहा—'रामकिशन, मुझे बडे जोर की प्यास लगी है।"

"यहाँ पानी कहाँ, घर पहुँचने तक इन्तजार करनी पडेगी," दूसरे लडको ने जवाब दिया।

"मूर्खो, तुम्हे इतना भी नही पता कि यहाँ हनुमान-कुण्ड है ?" अगुआ लडके ने कहा। वह उन्हे एक पगडण्डी के रास्ते ले गया और एक बडी चट्टान के पीछे जाकर, जिसपर हनुमानजी की मूर्ति खुदी हुई थी, उसने एक कुण्ड दिखलाया। मुकुन्द ने नीचे उतरकर खूब छककर पानी पिया और फिर "कितना मीठा पानी है !" कहता हुआ वह ऊपर आया। प्यासे मनुष्य को गदा पानी भी मीठा लगता है।

कमलापुर लौटते-लौटते बहुत अँधेरा हो गया और जिस समय मुकुन्द ने घर पहुँचकर द्वार पर धक्का देते हुए मा को पुकारा उस समय बहुत रात हो चुकी थी।

''मुकुन्दा बेटे, तुम्हे इतनी देर कैसे हो गई ? मै तो बहुत घबरा रही थी। तुमने तो कहा था कि नतीजा सुनते ही लौट आऊँगा.'' मा ने कहा।

"हम सब मन्दिरवाली पहाडी पर चले गये थे, मा ! मैने तो जाने को मना किया था लेकिन लडके माने नही । हमने मेला देखा, बडा शानदार था ।"

''खैर, अच्छा है कि तुम राज़ी-खुशी आ गये। पास हुए या नही ?''

'मै अपने क्लास में अव्वल आया हूँ ।''

''यह तो बडी खुशी की ख़बर है बेटे ! मुझे तुमपर बडा अभिमान है।'' यह कहकर सीता ने मुकुन्द को हृदय से लगा लिया और उसकी आँखो से आँसू बरस पडे। उसके इस रुदन मे उस नारी के हृदय की करुणा भरी हुई थी, जिसने अपने पति को खोकर पुत्र को बडे स्नेह और सावधानी से पाला था ।

५.

अभी चार दिन भी नही बीते थे हृदय को हर्ष और अभिमान से भर देनेवाले इस समाचार को सुने। लेकिन कैसा ससार है यह ! एका-एक मुकुन्द का घर उजाड हो गया। जिस रात को वह पहाडी से लौटा उसके पेट मे बडे ज़ोरो का दर्द उठा और उसे दस्त आने लगे। किसी की समझ मे नही आया कि इसे हैजा हो गया है। सबको यह ख़याल हुआ कि मेले की दूकान से खरीदी हुई मिठाई खाने से अपच हो गया है।

मुकुन्द को बडा सख़्त दर्द था। जब किसी गरीब देहाती के घर में किसी को हैजा या छूत की कोई दूसरी बीमारी हो जाती है तो उस

घर में एक भी ऐसा आदमी नही मिलता जिसे उसे रोकने या फैलने न देने का उपाय मालूम हो और अगर किसी को मालूम भी होता है तो न पास पैसा होता है न साधन। सिद्धान्त की बाते वतानेवालो की कमी नही होती और कितावें भी वहुत-सी मिल जाती है। लेकिन इस तरह की कही या लिखी बातो का हमारे दरिद्र गाँवो मे अनुकरण नहीं हो सकता।

मुकुन्द वच गया जैसे किसी ने कोई कमाल कर दिखाया हो। लेकिन बेटे की छूत मा को लग गई। दो दिन तक वह अपनी बीमारी छिपाये-छिपाये मुकुन्द की देखभाल करती रही, लेकिन जव वदन बिलकुल न चला तो पड गई। "पता नही, मेरा लडका अव भी खतरे से वाहर हुआ या नही। मै तो अब मर रही हूँ, उसकी देखभाल कौन करेगा?" वह वडे दु ख के साथ बोली और उठकर वैठ गई। लेकिन वह वैठी न रह सकी और गिरकर बेहोश हो गई। उसके वाद उसे होश नही आया। हाथ-पैरो मे कुछ अकडन सी हुई और फिर प्राण-पखेरू उड गये।

## ६.

पन्द्रह वर्ष वीत गये। अव सारी चीजे वदल गई थी। वेलमपट्टी में ब्राह्मणो के सारे घर खडहर वन गये थे। केवल मन्दिर का पुरोहित कृष्णभट्ट अपने घर मे रह गया था। दूसरे लोग नौकरी की तलाश मे गाँव छोडकर शहर चले गये थे। अछूतो के मोहल्ले में भी विलकुल सुनसान हो गई थी। मजदूरी करने के लिए कुछ लोग कडी, कुछ पेनैग, कुछ शेरवराय पहाडी, कुछ वग्लूर और कुछ दूसरी जगह चले गये थे। हाँ, किसानो के मोहल्ले मे अभी उतनी सुनसान नही थी। अपने खेतो और ढोर-डगरो को न छोड सकने के कारण अनेक कठिनाइयो के होते हुए भी वे वही रह गये थे।

मारि और चिन्ना अपनी मा के साथ लका के चाय के बाग में काम कर रहे थे। उनके बाप ने वहाँ पहुँचते ही ताडीखाने मे जाना शुरू कर दिया था। वह अपना काम ठीक-ठीक नही करता था। इसलिए उसके मालिको ने उसे काहिल शराबी समझकर थोडे ही दिनो में नौकरी से अलग कर दिया। उसने चाय के एक दूसरे बाग मे काम किया, लेकिन वहाँ भी उसकी यही दशा हुई। इसके बाद वह जगह-जगह मारा-मारा फिरता, भीख माँगता और ताडी पीता रहा। थोडे दिनो बाद वह लापता हो गया और किसी को पता न चला कि उसका क्या हुआ।

मारि और चिन्ना बागो मे काम करते थे और हाथ रोककर खर्च करते थे। मारि अब पच्चीस साल का हो गया था। जिस बाग में वह काम करता उसी के कुलियो के क्वाटरो में एक लडकी थी। उसका वही जन्म हुआ था और वही वह पली भी थी। एक दिन मारि की मा ने कहा—"मारि, तुझे अपने गाँव मे इससे अच्छी लडकी नही मिलेगी तू इसी से ब्याह कर ले।" मारि ने उसका कहना मान लिया।

ब्याह से कुछ दिनो बाद मारि ने गाँव वापस जाकर बसने का विचार किया। वह मा से बोला—"मा, यहाँ रहते हमें पन्द्रह साल हो चुके है। बाबू अब तक वापस नही आये। उनकी इन्तजार करने से कोई फायदा नही। अब हमारे गाँव लौट चलने मे क्या रुकावट है? ठेकेदार के पास हमारे करीब दो सौ रुपये है। चलो इन्हे लेकर हम वेलमपट्टी चलें और एक जोडी बैल और गाडी खरीदकर इज्जत के साथ जिन्दगी बितावे। यह जगह तो मुझे बिलकुल अच्छी नही लगती। यहाँ हम गुलामो की तरह रहते है और हम से जानवरो की तरह व्यवहार किया जाता है। यहाँ कोई देवी-देवता नही मानता

और किसी को अपनी औरत पर जोर नही। हम यहाँ और क्यो ठहरे ?"

"हाँ, बेटा, मै भी यही चाहती हूँ कि वेलमपट्टी वापस चली जाऊँ और वही तेरे वाप की झोपडी मे मेरी मिट्टी मकरे," कृष्णायी ने कहा।

सब के सब वेलमपट्टी लौट आये। मारि और चिन्ना अछूतो के मेले मे जाकर एक जोडी वैल खरीद लाये। इसके वाद वे सेलम गये और वहाँ से गाडी भी खरीद लाये। मारि अव आनन्द के साथ जीवन विताने लगा। किसानो को उससे ईर्ष्या होने लगी और वे आपस मे कहने लगे—"इस कडी के चमार को देखो, गाडी और वैल खरीद-कर कैसे मजे में है।"

लेकिन खुशी के ये दिन ज्यादा नही ठहरे। भाग्य ने पलटा खाया। एकाएक एक वैल लँगडा हो गया। कारण कुछ समझ में नही आया और वहुत दौड-धूप करने पर भी वह अच्छा न हो सका। मारि ने कौन्डलपट्टी के मवेशियो के एक डाक्टर को पाँच रुपये दिये। पहले उसने वैल के पैर मे दवाएँ लगाई, फिर झाड-फूँक की और आखिर मे लोहे से दागा भी लेकिन कुछ फायदा नही हुआ और वैल मर गया। मारि ने एक किसान के पास अपनी गाडी गिरवी रख-कर चालीस रुपये उधार लिये। उनमे अपने वचाये हुए कुछ और रुपये जोडकर उसने दूसरा वैल खरीद लिया और कुछ दिन तक उसका काम चलता रहा।

एकाएक आसपास के गाँवो मे मवेशियो की एक छूत की वीमारी फैली और सैकडा मवेशी मर गये। मारि के नये वैल को भी वीमारी हुई और वह एक ही दिन मे मर गया।

दोनो भाई एक किसान के पास रोजाना मजदूरी पर काम करने लगे। उनका मालिक उनसे कसकर काम लेता था और मजदूरी बहुत कम देता था। इतने से वे खुद अपना पेट नही भर पाते थे, इसलिए बूढी और कमजोर मा को पालना कठिन मालूम होने लगा। इसके अलावा, चिन्ना मारि से झगडा भी करने लगा। इन्ही दिनो पेनैंग से एक एजेन्ट कुलियो की भरती करने आया। चिन्ना अपने बडे भाई से कुछ कहे बिना ही उसके साथ चला गया। नेगापट पहुँचकर उसने किसी से मारि को एक पत्र लिखवाया—"भइया, तुमसे बिना कहे चले आकर मैंने बडा पाप किया है। यह काम मैंने अपने को भूख से बचाने के लिए किया है। भूख सही नही जाती थी, इसलिए मैंने सोचा कि चलूँ बाहर चलकर कुछ कमा लाऊँ। मै तुमसे माफी की भीख माँगता हूँ और यही से अम्मा और बडे भाई के चरण छूता हूँ और प्रणाम करता हूँ।" किसी को विश्वास नही हुआ कि ये सब बातें चिन्ना ने लिखी होगी। असल मे यह उस आदमी के लिखने की खूबी थी जिससे चिन्ना ने चिट्ठी लिखवाई थी। फिर भी यह एक बडी बात थी कि चिन्ना ने दो आने पैसे खर्च किये और किसी से कह-सुनकर अपने भाई को आदर का पत्र लिखवाया। एक गरीब अनपढ आदमी इससे ज्यादा और क्या कर सकता है ?

बुढिया कुप्पायी दिन-रात रोती रहती और आप ही आप बड-बडाया करती—"अरे, यह सब इनके ब्राह्मणी की रसोई के पास जाने का फल है। अभी वह श्राप मिटा नही है। मारिआयी, तुम्हारा क्रोध कब शान्त होगा ? हमारे ये दुःख के दिन कब टलेंगे ? हमारे पास फूटी कौडी भी नही है। अगर मेरे पास पैसा होता तो अगले त्योहार पर मै तुम्हे मुर्गा चढाती। हे वेलमपट्टी की देवी माता, मुझे मौत दे दो

तो मैं अपने कष्टो मे छट जाऊँ। वस मेरे बेटे को उम्र लगाओ और उसे अपना आशीर्वाद दो। उसे और उसकी बहू को सुखी रखो।"

मारि की स्त्री पूवायी थी तो पन्द्रह साल की, लेकिन बडी फुर्तीली और मेहनती थी। वह जगल में बेधडक चली जाती और लकडियाँ वटोरकर घर ले आती। वह एक मिनट भी बेकार नही बैठती। जब घर का काम निवट जाता और वह खाली होती तो घास काटने चली जाती या कही हाथ-पैर जोडकर कुछ मजदूरी कर लेती और जो पैसे मिलते घर ले आती। वह जहाँ कही भी घास या लकडी बेचती उसे औरो से अधिक पैसे मिलते। इस तरह वह हर हफ्ते कम से कम दो या तीन दिन एक-एक दुअन्नी कमा लेती और उसे लाकर मुसकराते हुए अपने पति को दे देती।

उस साल एक बूँद भी वारिश नहीं हुई। वैसे तो पिछले चार वर्ष से पानी कम गिरा था, लेकिन उस साल जैसा सूखा पडा वैसा पहले कभी नही पडा था। सारे कुएँ सूख गये। कही हरी घास की एक पत्ती भी दिखाई नहीं देती थी। पीने तक को पानी मिलना मुश्किल हो गया था। इसलिए वहुत-से और आदमी भी उस खडहर गाँव को छोडकर चले गये।

मारि ने भी सोचा कि कही और चलकर पेट पाला जाय, लेकिन उसकी मा ने कहा--"हम यही मर मिट जायँगे। कही भी रहे बात तो एक ही है, जो भगवान् और जगह है वही हमारी यहाँ भी रक्षा करेगा।" बूढी मा की इच्छा का विरोध करना उचित न समझ मारि चुप हो गया।

अछूतो के मोहल्ले में अब सिर्फ पाँच घर आवाद थे। वाकी लोग अपना-अपना घर छोडकर पहले ही कही चले गये थे। जिस तालाव से अछूत पीने को पानी लेते थे वह कभी का सूख गया था। उससे मिली

हुई ज़मीन कुट्टि कौंड की थी। उसमें एक कुआँ था जिसमे अब भी थोडा पानी था। कुट्टि कौंड अपनी फसल के कुछ हिस्से को इसी कुएँ से पानी दे देकर सूखने से बचा सका था। जब वह अपने खेतो मे पानी दे लेता और बैलो को खोलकर नहला लेता तो खेत की ओर बहती हुई नाली मे से अछूतो को पानी लेने देता। उन्हे कुएँ मे अपना बर्तन डालने की छूट नही थी, क्योकि ऐसा करने से कुआँ अपवित्र हो जाता, इसलिए वे बेचारे नाली से ही पानी लेते थे। दूसरे किसान तो उनपर इतनी भी दया नही दिखाते थे। सूखे के कारण पानी वेलमपट्टी में एक अनमोल वस्तु बन गया था, इसलिए इसमे ताज्जुब ही क्या कि किसान एक बूँद भी पानी अपने खेतो से बाहर नही जाने देना चाहते थे। लेकिन कुट्टि कौंड दयालु था, उसने यह सोचकर कि बेचारे अछूत पानी बिना तडप रहे है उन्हें अपनी नाली से पानी लेने की छूट दे दी।

औरते वहाँ सुबह से ही प्रतीक्षा में खडी हो जाती और इस बात पर झगडती कि पहले अपना बर्तन मै भरूँगी। नाली गहरी नही थी, इसलिए उसमे खुदे हुए गडहो में बहुत ही कम पानी ठहरता था। कभी-कभी तो उनके झगडने से सारा पानी गदला हो जाता था और तब वे एक-दूसरी की शिकायत करती हुई किसान से कहती थी—"इसे देखिये सर-कार, इसने मिट्टी घचोलकर सारा पानी गदला कर दिया।" किसान, जो खडे-खडे यह दु खद दृश्य देखा करते, कहते—"ये गधे अछूत होते ही ऐसे हैं।" तब औरते अपना-अपना घडा गदले पानी से ही भरकर चली जाती। थोडी देर बाद जब बर्तनो में मिट्टी नीचे बैठ जाती तो पानी साफ हो जाता और वे उसे पीने के काम में लाती।

# ७.

कुट्टि कौड रोज़ की तरह अपने खेत के छप्पर मे अपने दोनो बेटो के साथ सो रहा था। खेत मे कोई फसल रखाने को नही थी, मगर चार बैल और चार-पाँच बकरियाँ थी जो बहुत दिनो से कम चारा मिलने के कारण हड्डियो का ढाँचा भर रह गई थी। रस्सी और चमडे का डोल भी था। अकाल के दिनो में तो जो हाथ लग जाता है लोग वही चुरा लेते है। इसलिए रात के समय खेत के छप्पर मे कोई न कोई सोता अवश्य था।

पूर्णिमा की रात थी। रीते खेत चाँदनी में सफेद दूध-जैसे चमक रहे थे। अकाल की क्रूर वास्तविकता दिन के समय दिखाई पडती थी। रात में तो प्रत्येक वस्तु थकी और सोती रहती थी। अकाल तक सोता जान पडता था। इस भूतल पर मनुष्य को जो विपदाएँ भुगतनी पडती है उन्हे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि नीद में थोडी देर के लिए भी सारी बातो को भूल सकना मनुष्य के लिए एक वरदान है।

एकाएक एक कुत्ते के भूँकने ने आधी रात की निस्तब्धता भग कर दी। दूसरे कुत्तो ने भी भूँकना शुरु किया। "कौन है? चोर! चोर!" कुट्टि कौड का छोटा लडका चिल्लाया और उठकर बैठ गया। उसे ऐसा दिखाई दिया जैसे कोई आदमी चमडे का डोल लिये चुपके-चुपके पीले फूलोवाले दरख्त की छाया मे कुएँ के किनारे-किनारे बच-कर निकलना चाह रहा है।

"भइया उठो, उठो, चोर हमारा चमडे का डोल लिये भागा जा रहा है।" शेन्नोड उठ बैठा और आँखे मलकर अपने चाचा और पडोस के दूसरे आदमियो को पुकारता हुआ चोर की तरफ लपका।

उस समय तक कुत्ते जोर-जोर से भूँकने लगे थे और बड़ा शोर मच रहा था। चारो तरफ से लोग चिल्ला रहे थे—"खेत मे चोर है, पकडो, पकडो उसे!" आसपास के छप्परो मे से उठकर लोग उधर की ओर भागे और आखिरकार चोर पकड लिया गया। वह एक औरत थी। उसके हाथ में अपनी एक रस्सी और अपना ही एक मिट्टी का बर्तन था। उसने चोरी केवल पानी की थी। उसने अपना बर्तन कुएँ मे डालकर पानी खीच लिया था। 'एक अछूत औरत ने हमारे कुएँ मे अपना बर्तन डाल दिया," लोग चारो ओर से चिल्लाये और फिर 'मारो इसे," "ठोकरे लगाओ," "मार डालो," "बर्तन फोड दो" की आवाज़ें आने लगी। उसका बर्तन फोड़ दिया गया और उसे इतना पीटा गया और इतनी ठोकरें लगाई गई कि वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पडी।

"अरे, मर गई। अब मत मारो इसे," राकिया कौड ने कहा।

'गडहा खोदकर कुतिया को यही दबा दो" दूसरा बोला।

"और क्या! हम एक बला से बच जायँगे," तीसरे ने कहा।

जब गडहा खोदने और दबाने की बातें कही जाने लगी तो लोग कुछ शान्त हुए। कोई किसी को कब तक पीट सकता है? कभी तो उसका अन्त होता ही है!

"देखो तो, यह है कोन? कोई पहचानता है क्या?" एक बूढे आदमी ने पूछा।

"यह तो कड़ी मारि की औरत है। अरे, अरे! यह तो बडी अच्छी औरत थी, इसने ऐसा काम क्यो किया!" कुट्टि कौंड के बडे लडके ने कहा।

"कल मैंने इन्हे पानी लिये बिना ही भगा दिया था, इसीलिए इसने ऐसा किया है," छोटा भाई बोला।

"मारो इसे", "ठोकरें लगाओ", "बर्तन फोड़ दो।"

"इस अकाल मे भला कौन जाति और धर्म की परवा करता है ! आजकल तो सारी बातें गडबड और बेढगी हो गई है, भले बुरे तक की कोई पहचान नही रह गई," एक लम्बे-से किसान ने जमीन पर पडी हुई औरत की ओर देखते हुए कहा।

"अरे, यह मरी नही है, मक्कारी साधे पडी है। इसे ठोकर लगाओ, फिर देखो कैसी उठकर घर भागती है," एक दूसरे आदमी ने कहा और पूवायी को दो ठोकरें जमाई भी। औरो ने भी ऐसा ही किया। लेकिन वह थोडी-सी हिलकर ही रह गई, न उठी और न बोली।

"भाइयो, चलो इस कुतिया को उठा ले चले और अछूतो के पुरवे मे गाड आयें" राकिया कौड ने कहा। वह कुछ-कुछ अनुभवी था, सेशन की अदालत मे एक मुकदमा देख चुका था और जानता था कि हत्या करने पर क्या-क्या परेशानियाँ उठानी पडती है।

उसकी सलाह मानकर तीन-चार आदमी पूवायी को उठाकर अछूतो के मोहल्ले की ओर ले चले।

## ८.

अगर असहाय अनाथो की सारी बातें सच-सच लिखी जायँ तो उनसे सबको लाभ हो। हम चाहे अनाथ हो या न हो, उनके अनुभवो से बहुत-सी बाते सीख सकते है और उनसे लाभ भी उठा सकते है। मुकुन्द के अनुभव भी ऐसे ही थे। जब से उसकी मा ने उसे इस दुनिया में बिलकुल असहाय छोडा अगर तब से अब तक की उसके इधर-उधर भटकने और जीवन से लडने की कथा लिखी जाय तो पूरी महाभारत तैयार हो जाय। उसने अपने अनुभव लिखे नही और उन्हे सुन-सुनाकर लिखने मे कोई मजा नही।

अनाथो को चाहे और कोई लाभ हो या न हो, उन्हे अक्सर दूर-दूर

तक सफर करने का लाभ अवश्य होता है। भूगोल का ज्ञान वे अपने निजी अनुभव से प्राप्त करते है । मुकुन्द सारे भारत मे मारा-मारा फिरा, उसने बडे-बडे कष्ट उठाये और अन्त मे किसी न किसी तरह अपने लिए जीवन-निर्वाह का एक अच्छा रास्ता निकाल ही लिया। उसने डॉक्टरी की परीक्षा पास की और एक-दो जगह डॉक्टर रहने के बाद वह अपने ही गाँव के अस्पताल मे आ गया।

कमलापुर के अस्पताल मे डॉक्टर मुकुन्द हिसाव जाँच रहे थे और सालाना लेखा तैयार करने के लिए अपने सामने की मेज़ पर पडी हुई माल-वही देख रहे थे। उसी समय चार आदमी एक बान की खाट लिये हुए आये और उसे ज़मीन पर रखकर अपनी आदत के मुताबिक गला फाडकर चिल्लाये—"मालिक!"

डॉक्टर मुकुन्द ने कम्पाउण्डर से कहा—"अछूत मालूम होते है। मै समझता हूँ कि कोई खून का मामला है, जाकर देखो तो।"

गाँव के स्कूल के हेडमास्टर उनके पास बैठे थे। वह रोज सवेरे घूमने निकलते, अस्पताल के डॉक्टर से आध घटे गप्प लडाते और फिर चले जाते।

"यहाँ तो हर हफ्ते एक न एक खून होता ही रहता है और मुझे मुर्दे की चीर-फाड कर परीक्षा करनी पडती है। यह बडी बुरी जगह मालूम होती है। ऐसी हालत तो मैने किसी भी दूसरे अस्पताल मे नही देखी," मुकुन्द ने कहा।

"यहाँ सब अनपढ आदमी रहते है। इस जिले के लोग जरा-जरा-सी वात पर लडने लगते है। उनमे जब कभी कहा-सुनी होती है तो वढते-वढते अक्सर मार-पीट और खून तक की नौवत आ जाती है। शिक्षा के फैलने से ये बाते ठीक हो जायँगी," हेडमास्टर ने कहा।

इतने मे कम्पाउण्डर ने लौटकर कहा–' मुर्दा नही है, साहब ! एक लडकी है जिसे लोगो ने बुरी तरह पीटा है और उसे ही खाट पर लाद-कर लाये है ।"

"उसकी क्या उम्र है ?" हेडमास्टर ने पूछा ।

मुकुन्द ने इस सवाल पर ध्यान न देते हुए कहा—"उसे अन्दर लाने को कहो और मेज़ पर लिटाओ ।"

"यह कोई प्रेम का मामला मालूम होता है," हेडमास्टर बोले और जाने के लिए उठकर खडे हो गये ।

"बहुत मुमकिन है, चलिये देखे," मुकुन्द ने कहा । उठकर वह मेज़ के पास चले गये और जो आदमी उस औरत को लाये थे उन्होने उसे धीरे-से खाट पर से उठाकर मेज़ पर लिटा दिया ।

मुकुन्द ने उसके घावो को देखकर कहा—"लोगो ने इसे बहुत बुरी तरह पीटा है ।" ध्यानपूर्वक परीक्षा करने के बाद पता चला कि उसकी बाँहो की दो हड्डियाँ टूट गई है और बाकी चोटे साधारण और ऊपरी है।

उसे लानेवाले लोगो मे एक मारि भी था। उसने पूछा—'यह बच जायगी न, मालिक ?"

"क्या तुम्हारी कोई रिश्तेदार है ?"

"मेरी औरत है, सरकार ! बच जायगी न ?" उसकी आँखो मे आँसू भर रहे थे ।

"हाँ, हाँ, फिक्र न करो, अच्छी हो जायगी । लेकिन इसे यहाँ एक महीना रखना पडेगा।"

यह सुनकर मारि रोने लगा—"हाय, मै खाने को कहाँ से लाऊँगा ?"

"बेवकूफ कही के ! हम खाना भी देंगे और इसकी देखभाल भी करेगे," मुकुन्द ने कहा ।

इस पर, एक दूसरे आदमी ने कहा—"तुम्हे नही पता मारि यह हमारे पुराने मालिक के लडके है वही मालिक जो नीम के पेडवाले मकान मे रहते थे। यह ज़रूर हमारी रक्षा करेगे और इसे अच्छा कर देंगे।"

तीसरा बोला—"अरे यह इसे तो रोटी देगे और चगा कर ही देंगे, साथ ही साथ तेरा भी पेट पालेगे। रोता क्यो है ?"

"हमारे मालिक है, हमारो रक्षा करेगे," सब ने मिलकर कहा।

'हाँ, हाँ" मुकुन्द ने घायल औरत के टूटे हुए हाथो की परीक्षा जारी रखते हुए कहा।

'अच्छा, मै तो चला डॉक्टर!" हेडमास्टर ने नमस्ते करते हुए कहा।

'अच्छा, नमस्कार" मुकुन्द ने हेडमास्टर से कहा और मारि की ओर घूमते हुए पूछा—"किस बात पर झगडा हुआ था ? इसे इतनी चोट कैसे आई ? मुझे बताओ तो, भाई!"

जो कुछ हुआ था उन्होने कह सुनाया, लेकिन सब के एक साथ बोलने के कारण मुकुन्द सारी बाते ठीक से समझ न सका।

९.

"मुत्तु पिल्लै, क्या तुमने यहाँ कुछ फूल रखे है ?" डॉक्टर मुकुन्द ने पूछा।

"नही साहब, फूल कहाँ से आते, सारे पौदे तो मुरझा गये," कम्पाउण्डर बोला।

"अजीब बात है", मुकुन्द ने मन हो मन मे कहा, "जब मैं इस औरत के पास जाता हूँ तो मुझे चमेली के फूलो की महक आती है, बिलकुल वैसे ही फूलो की महक जिन्हे इकट्ठा करने का मा को इतना

शौक था।" इस तरह मरी हुई मा का ध्यान करते हुए मुकुन्द ने पूवायी के घावो पर धीरे-धीरे दवा लगाई। फिर उन्होने टूटी हुई हड्डियो पर तख्तियाँ वैठाई और पट्टी बाँधी।

'अव कैसा जी है ?" उन्होने पूवायी से पूछा।

"अव तो दर्द कुछ कम है, मालिक! भगवान् आपको वढती दे और हमेशा खुश रखे," पूवायी ने आह भरते हुए कहा।

इन शब्दो के मुख से निकलते समय उसकी दृष्टि और मुसकराहट में उस मा का-सा भाव था जो अपने वच्चे को प्रेमपूर्वक खेलाते समय वात्सल्य-सुख का अमृत पिया करती है। मुकुन्द को अपनी मा की और भी अधिक याद आने लगी।

"पता नही क्यो, जव मै इस औरत के पास जाता हूँ तो मुझे अपनी मा की याद आये विना नही रहती," मन में यह सोचते हुए डॉक्टर मुकुन्द हाथ धोने चले गये। वह जहाँ भी जाते उन्हे ऐसा लगता जैसे चमेली की सुगन्ध वस रही है। पति के मरने के वाद उनकी मा फूल पहन तो सकती नही थी, लेकिन वह प्रति दिन कही न कही मे फूल लाकर देवी को अवश्य चढाती थी। उन फूलो की सुगन्ध से सारा घर भर जाता था। वही सुगन्ध अब मुकुन्द को एक वार फिर आई।

यह अक्सर होता है कि कभी एकाएक और अनायास ही वचपन की सुनी हुई किसी गीत की धुन या किसी फूल की सुगध याद आ जाती है और उसके साथ ही साथ उस समय की किसी घटना का भी स्मरण हो आता है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है जैसे हमने इस गीत की धुन कभी सुनी है या इस फूल की सुगध कभी सूँघी है, लेकिन यह नही याद आता कि कब और कैसे ? कुछ लोग इसे पिछले जन्म की याद

बताते है। उस दिन मुकुन्द के मस्तिष्क मे भी उन आनन्दमय दिनो की याद नदी की तरह उमड आई, जो उन्होने वेलमपट्टी में अपनी मा के साथ बिताये थे।

"कितने आश्चर्य की बात है! यह सुगध तो मेरे दिमाग मे से निकलती ही नही। कहते है कि मरे हुए आदमी फिर से जन्म लेते है। शायद मेरी मा ने इस स्त्री के रूप मे फिर से जन्म लिया है। कौन कह सकता है कि यह बात सत्य नही हो सकती?" यह सोचकर डॉक्टर मुकुन्द एक बार फिर पूवायी की खाट के पास गये। पूवायी ने आँखे खोलकर उनकी ओर देखा। उसकी दृष्टि ने उन्हे फिर अपनी मा की याद दिला दी और उन्हे ऐसा मालूम हुआ जैसे चमेली की महक का एक झोका-सा आ गया हो।

## १०.

मुकुन्द बिस्तर पर पडते ही सो जाया करते थे। यह युक्ति उन्होने एक योगी से उत्तर में सीखी थी जहाँ वह कभी घूमते-घामते पहुँच गये थे। लेटने के बाद करीब-करीब सभी लोग इधर-उधर की बातें सोचते और जागते रहते है। लेकिन मुकुन्द ने अपने को ऐसा साध लिया था कि वह इस तरह के विचारो को हटाकर अपने चित्त को वश में कर लेते थे और लेटते ही सो जाते थे। लेकिन आज वह तरकीब काम न दे सकी। उन्होने कोशिश बहुत की, लेकिन नीद न आई। थोडी देर तक बिस्तर पर करवटें बदलते रहने के वाद वह उठकर बैठ गये और लैम्प जलाकर एक किताब पढने लगे। वह भगवद्-गीता थी जो उन्हे एक मित्र ने दी थी। उनकी आँखें दूसरे अध्याय के २२वें श्लोक पर ठहर गईं। उन्हे अपनी मा की याद आई और वह सोचने लगे—"यह तो ठीक है, लेकिन पहला शरीर त्यागने के बाद

जीवात्मा किस तरह के नये शरीर मे प्रवेश करेगी ? क्या वह जिस शरीर में चाहे उसी मे प्रवेश कर सकती है ? नही, यह तो सम्भव नही, यह तो पिछले जन्म मे किये गये अच्छे-बुरे कर्मों पर निर्भर है। हम अक्सर किसी मनुष्य या पशु को कष्ट में देखते है । हो सकता है कि उस शरीर मे हमारी मा, बाप, भाई या किसी मित्र की आत्मा हो जो हमे दु ख के सागर मे छोडकर चल बसा है। इसलिए हमें चाहिए कि हम प्रत्येक दु खी मनुष्य और पशु के प्रति दया का भाव रखें और उसे सहारा या आराम देने की चेष्टा करे । हम अक्सर लोगो को सुखी और समृद्धिशाली देखकर उनसे ईर्ष्या करते है। कितनी मूर्खता की बात है यह ! कौन जाने कि हमारे किसी प्यारे ने, जिसकी अकाल मृत्यु हुई हो, उस शरीर मे फिर से जन्म लिया हो और अपने पिछले अच्छे कर्मों के फलस्वरूप वह अब अधिकार और ऐश्वर्य का भोग कर रहा हो ! कैसी मूढता है ईर्ष्या करना !"

मुकुन्द इस श्लोक को पहले भी कई बार पढ चुके थे। हम जो कविता या गीत पढ चुके होते है उसकी पक्तियाँ कभी-कभी अचानक शीशे की तरह साफ हो जाती है और उनमें हमें एक ऐसा अर्थ दिखाई दे जाता है जो पहले कभी नही दिखाई दिया था । गीता की इन पक्तियो मे भी उस दिन मुकुन्द को कुछ नई और ताजी बात जान पडी ।

मुकुन्द ने सोचा—"शरीर बीमारी या आयु के कारण नष्ट हो जाता है, परन्तु आत्मा की न कोई आयु है न उसे कोई बीमारी होती है, इसलिए वह कभी मरती नही। मेरी मा का शरीर तो नष्ट हो चुका है, परन्तु उसकी आत्मा ने निश्चय ही किसी दूसरे शरीर मे जन्म ले लिया होगा।" इसी भाँति वह सोचते और पढते रहे ।

थी। नीद टूटने पर उन्हे ध्यान आया कि मै इसी कमलापुर के अस्प-ताल में हूँ और शेष सब कुछ सपना था। वह कुरसी से उठकर बिस्तर पर आ लेटे और जल्दी ही गहरी नीद मे सो गये।

## १२.

मुकुन्द पूवायी के घावो की मरहमपट्टी बडे प्रेम और सावधानी के साथ करते थे। घावो के भरने और हड्डियो के जुडने मे एक महीने से भी अधिक लग गया।

एक दिन उन्होने मारि से कहा—"भाई, मै तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ, मानोगे ?"

"कहिये, मालिक !"

"जब मै छोटा था तब तुमने मुझे बदरिया के हाथो से मरने से बचाया था और बदले मे मेरी मा ने तुम्हे पीटा था और घर से बाहर निकाल दिया था। ठीक है न ?"

"इन बातो को एक जमाना बीत गया। मालिक, आपने मेरी औरत की जान बचाकर मेरे जीवन मे प्रकाश भर दिया है।"

"मारि, तुम जानते हो कि मरे हुए आदमी अपने पिछले जन्म के अच्छे या बुरे कर्मो का फल भोगने के लिए फिर से जन्म लेते है।"

"हाँ, मालिक, कहते तो ऐसा ही है। भगवान् सबको देखता है और किसी को दण्ड दिये बिना नही छोडता। उससे बडा कोई नही।"

"मेरी मा ने तुम्हारे साथ बडी बुराई की थी। मुझे विश्वास है कि उसने फिर से जन्म लिया है और वह अपने पापो के कारण कष्ट उठा रही है। मै उसके लिए प्रायश्चित करना चाहता हूँ," मुकुन्द ने कहा।

"मै आपकी बाते समझ नही पाया, मालिक।"

"तुम लोग आजकल जबरदस्त अकाल के चगुल में हो और बडी तकलीफें उठा रहे हो। तुम अपनी औरत के साथ मेरे घर मे आकर रहो। मेरे कोई सम्बन्धी नही है। तुम और पूवायी मेरे घर मे मेरे भाई-बहिन की तरह रह सकते हो।"

मारि सचमुच कुछ नही समझ सका और बोला—"यह कैसे हो सकता है ? यह बिलकुल नामुमकिन है, साहब।"

मुकुन्द ने समझाया—"मारि, तुम लोगो को ऐसा दु खी जीवन बिताने देना पाप है। मै इस बात के लिए भी प्रायश्चित करना चाहता हूँ। तुम मना मत करो।"

"ओह, मालिक!" आश्चर्य से भरे हुए अछूत ने यत्र की भाँति कहा।

"मैंने तुमसे कहा था कि मृत्यु के बाद फिर जन्म होता है। मै नही जानता क्यो, लेकिन जब से मैंने तुम्हारी औरत को देखा है मुझे ऐसा लगता है कि वह मेरी मा है।"

"मालिक, आप क्या कह रहे है, मेरी बिलकुल समझ में नही आ रहा है।"

"कोई बात नही, भाई। तुम्हारी समझ में नही आता न सही। मै जो कह रहा हूँ उसे मना मत करो। तुम्हे मेरे साथ रहना पडेगा।"

"मेरी मा नही मानेगी।"

"उसे मै राजी कर लूँगा।"

"अगर वह मान जाय तो ठीक है।"

मुकुन्द ने कह-सुनकर कुप्पायी को राजी कर लिया। उस दिन से वह वहाँ के लोगो की नजरो मे अछूत बन गये, परन्तु उनके हृदय को शान्ति मिल गई।

---

# स्पर्धा

किसी समय सबेश की कॉफी का सारे देश में नाम था। अँगरेज़ तक उसे पसद करते थे, फिर हम लोगो का तो कहना ही क्या ! मद्रासी समाज के ऊँचे घराने की स्त्रियाँ कहती थी कि बीज चाहे कितने ही अच्छे क्यो न हो और उन्हें चाहे कितनी ही सावधानी से क्यो न भूना जाय, घर पर तैयार की हुई कॉफी सबेश की टीनबद कॉफी की बराबरी नही कर सकती।

सबेश ने कॉफी का कारबार सन् १९२५ मे आरम्भ किया। दो वर्ष तक उसके जीवन मे शायद ही ऐसी कोई घडी आई हो जो सुख और चैन से कटी हो। लेकिन सन् १९२८ में सुब्बु कुट्टि उसके यहाँ क्लर्क होकर आया और तब से सबेश का भाग्य-सूर्य दिन पर दिन ऊँचा उठता गया। छ महीने के भीतर ही भीतर उसका व्यापार तिगुना हो गया और बाद में भी इसी तरह तेज़ी से बढता रहा। स्वय सबेश को इस पर आश्चर्य होता था। वह समझता था कि सुब्बु कुट्टि भाग्यवान है और इसलिए उसके साथ बडे स्नेह का बरताव करता था। उसके बिना कहे ही वह उसे हर तरह की सहायता देता था। उसने उसकी बहिन का ब्याह एक अच्छे और धनी परिवार में करा दिया था और सारा ख़र्चा भी अपने पास से किया था। वह सुब्बु कुट्टि को अपना क्लर्क ही नही बल्कि साझीदार भी मानता था।

सुब्बु कुट्टि की मा ने उसे कॉफी पीसने का एक ऐसा गुप्त ढग सिखा दिया था कि उससे कॉफी में एक विशेष सुगन्ध आ जाती थी। जब सुब्बु कुट्टि सबेश की कम्पनी मे क्लर्क हुआ तो एक दिन सबेश को उस के घर बनी हुई कॉफी का एक प्याला पीने का मौका पडा। "इतनी अच्छी कॉफी मैने कभी नही पी," उसने कहा और सुब्बु कुट्टि की मा से ढेर-सारे सवाल पूछ डाले। "क्या इसके पीसने का कोई खास तरीका है ? या, इसके बीज में कोई विशेषता है ? या, इसे साफ करने की कोई खूबी है ?" आदि, आदि। सुब्बु कुट्टि की मा ने कुछ और न बताकर सिर्फ इतना कहा—"इसका रहस्य सुब्बु कुट्टि से पूछिये।"

इस पर सबेश बोला—"कुछ भी सही, क्या यह बात हमारी कम्पनी मे कॉफी पीसते समय नही की जा सकती ?"

"हाँ, हाँ, क्यो नही ?" सुब्बु कुट्टि की मा ने उत्तर दिया।

उसके बाद जब बीज पीसे जाते तो सबेश सुब्बु कुट्टि को कारखाने भेज देता। वहाँ वह जो कुछ करता सब से छिपाकर करता, यहाँ तक कि सबेश भी भेद न जान पाया। उसे सिर्फ इतना ही पता था कि सुब्बु कुट्टि अपने घर से टीन मे कोई चीज़ लाता है और पीसने समय बीजो में मिला देता है। यह बात निजी तौर पर पहले ही तय हो ली थी कि इस रहस्य के बारे मे सबेश उससे कुछ पूछेगा नही।

कारबार खूब वढा और बड़ा लाभ हुआ। सबेश मद्रास के व्यापारी राजकुमारो मे गिना जाने लगा। वह बहुत-से व्यापार-मण्डलो और क्लबो का मेम्बर भी चुन लिया गया।

दो-चार बार सवेश ने सुब्बु कुट्टि से भेद जानने की चेष्टा की, लेकिन उसकी मा ने उससे शपथ ले ली थी कि वह किसी को, यहाँ तक कि सवेश को भी, अपना भेद नही बतायगा। सबेश ने भी बाद मे ज़िद नही की।

सन् १९३६ में सवेश को चौवीस हज़ार रुपये की बचत हुई। सुब्बु कुट्टि को ढाई सौ रुपये तनख्वाह मिलती थी। वह हर रोज़ सवेश की मोटर में घर जाया करता था। इससे उसके वे मित्र, जो पहले बडा स्नेह दिखाते थे, अब ईर्ष्या करने लगे। उन्हे अब उसमे ऐसी बुराइयाँ दिखाई देने लगी जैसी पहले कभी नही दिखाई दी थी और वे उसकी सवेश से शत्रुता कराने की चेष्टा करने लगे। लेकिन वे सफल नही हो सके, उलटा उन दोनो का एक-दूसरे के प्रति विश्वास और स्नेह वढता गया।

इसी प्रकार दो वर्ष वीत गये। एक दिन सवेश लकडी के एक व्यापारी से वाते कर रहा था।

"तुम्हारा कारवार अच्छा चल रहा है, लेकिन सुना है कि तुम्हारा मैनेजर सुब्बु कुट्टि ऐयर कॉफी का अपना अलग काम शुरू करने जा रहा है," लकडी के व्यापारी ने कहा।

"ऐसी तो कोई वात नही है। तुमसे किसने कहा?" सवेश ने पूछा।

"मुझे पता है, इसके वारे मे वह खुद कुछ आदमियो से वाते कर रहा था," लकडी का व्यापारी जयराम नाडार वोला।

"मुझे इस वात का यकीन है कि तुम्हे गलत खवर मिली है। अगर ऐसी कोई वात होती तो वह मुझे ज़रूर वताता।"

"मै तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ कि यह कोरी अफवाह नही है। तुम खुद सव कुछ सुन लोगे।"

कुछ ही दिनो वाद एक दूसरे मित्र ने सवेश से कहा—"सुनते है कि सुब्बु कुट्टि विश्वनाथ साहूकार से कॉफी पीसनेवाली मशीनो की वावत पूछताछ कर रहा है।" इससे सवेश की शका पक्की हो गयी। किन्तु उसने

सोचा—"व्यापार की उन्नति और मेरी अपनी मर्यादा और प्रतिष्ठा सब कुछ सुब्बु कुट्टि के हाथ में है। कॉफी के चूर्ण का भेद भी वही जानता है। इस विषय में मैं कर ही क्या सकता हूँ ?" उसी समय से उसके मन में सुब्बु कुट्टि के प्रति घृणा और क्रोध का भाव उत्पन्न हो गया और वह भाव दिन पर दिन बढता गया। उसे ऐसा मालूम होने लगा कि मेरे सब नौकर-चाकर सुब्बु कुट्टि को ही अपना मालिक समझते है और मेरा ठीक से अदब नही करते। इस तरह मालिक को अपने क्लर्क से ईर्ष्या होने लगी।

"देखो, सुब्बु कुट्टि! अगर कारीगरो को कुछ कहना हुआ करे तो उन्हे मुझसे कहना चाहिये, तुमसे नही। ऐसे मामलो मे मैं तुम्हारी सिफारिशें नही मान सकता।" यह बात सबेश ने सुब्बु कुट्टि से उस समय कही, जब वह उसके पास एक मजदूर की शिकायत के बारे मे बातचीत करने आया।

इस तरह की बाते कई बार हुई।

एक दिन सुब्बु कुट्टि ने सबेश से कहा—"मैं एक महीने की छुट्टी लेने को सोच रहा हूँ। अप्पुस्वामी ऐयर ने मुझे अपने साथ तिरुवारूर मे रहने के लिए बुलाया है। मेहरबानी करके छुट्टी दे दीजिये।"

"छुट्टी नही मिल सकती," सबेश ने कहा।

सुब्बु कुट्टि की समझ मे न आया कि जो व्यक्ति मुझपर अब तक इतना दयालु रहा है वह अकारण ही मुझसे इतनी कठोरता और शुष्कता का व्यवहार कैसे करने लगा। यह सोचकर कि यह किसी बुरे ग्रह के कारण हो रहा है वह अपना काम तो पहले की ही भाँति अच्छी तरह करता रहा, लेकिन अब उसके हृदय मे शान्ति नही थी। धीरे-धीरे उसका स्वास्थ्य गिरने लगा, दवाओ से कोई लाभ न हुआ और डॉक्टरो ने

उसे दो महीने तक आराम करने की सलाह दी। लेकिन सवेश ने माफ-साफ कह दिया कि जव तक कॉफी का पाउडर वनाने का भेद नही वता दिया जायगा तव तक छुट्टी नही मिलेगी।

"नौकरी छोड दो, वेटा। अव तक हमारे दिन अच्छे थे। जव वे दिन फिर वापस आयँगे तव हम अपना एक छोटा-सा व्यापार अलग चला लेगे। भगवान् जो चाहता है वही होता है।" सुव्वु कुट्टि की मा ने अपने वेटे से कहा और उसे सवेश से भेद न खोलने की सलाह दी। सवेश ने सुव्वु कुट्टि का इस्तीफा मजूर कर लिया और उसे नौकरी से हटा दिया।

इन घटनाचक्र के कारण कुछ समय तक सवेश के कारवार को हानि नही पहुँची। टीन पर नटराज की सुन्दर मूर्ति, सव तरह की कॉफी के प्राकृतिक गुण और सवेश की पुरानी ख्याति के कारण व्यापार चलता रहा। लेकिन फिर समय ने पलटा खाया। किसी ने कहा--"आज की कॉफी उतनी अच्छी नही है।"

"ऐसा मालूम होता है कि छन्ना खराव था या कॉफी का टीन खुला रह गया था, इसीलिये उसकी सुगन्ध उड गई है," घर के लोगो ने कहा।

"सुव्वु यह काम अपने पुराने मालिक के विरुद्ध प्रचार करने के लिए कर रहा है। एक क्लर्क के हटा दिये जाने से कॉफी में खरावी नही आ सकती," सवेश के मित्र वोले।

लेकिन दूसरे ग्राहक यह कहकर कि घर की वनी कॉफी का मुकावला कोई नही कर सकता घर पर भूनने के लिए कॉफी के वीज खरीदने लगे। सक्षेप यह है कि सुव्वू कुट्टि के हटाये जाने के पाँच छ. महीने के भीतर ही भीतर सवेश का कारवार घटने लगा।

सुब्बु कुट्टि के मित्र विश्वनाथ साहूकार ने उससे अपने साथ साझे में काम करने को कहा। "सारा रुपया मैं लगाऊँगा और मुनाफे का आधा तुम ले लेना," वह बोला। पहले तो सुब्बु कुट्टि दो एक महीने तक इस प्रतीक्षा में रहा कि शायद सबेश मुझे फिर बुला ले, लेकिन बाद में उसने विश्वनाथ की योजना मान ली और काम शुरू कर दिया।

सुब्बु कुट्टि मे अब फिर से उत्साह आ गया। उसके सिर पर सबेश को मजा चखाने का भूत सवार हुआ। उसने अपनी तैयार की हुई कॉफी का नाम नटेश रखा, जो सबेश से मिलता-जुलता था। जो वस्तु सबेश की कॉफी मे छिपाकर मिलाई जाती थी उसकी मात्रा डेढगुनी कर दी गई। लेबिल पर छपे हुए नटराज के चित्र मे टाँगो का ढग उलट दिया गया। नई कॉफी बाजार मे आई। मेहनती एजेन्ट नियुक्त किये गये और बिक्री एकदम बढने लगी। विश्वनाथ ने खूब रुपया खर्च करके इश्तहारबाजी की। उसने सुब्बु कुट्टि की उमग को खूब बढावा दिया और सबेश के प्रति उसके क्रोध को हर प्रकार के उपायो से जाग्रत रखा।

सबेश ने हाईकोर्ट मे मुकदमा दायर कर दिया कि सुब्बु कुट्टि ने अपनी कॉफो के टीन का आकार, नाम और लेबिल मेरी कॉफी के टीन से मिलता-जुलता रखा है, जिससे ग्राहको को धोखा हो जाता है और मेरे व्यापार मे घाटा हो रहा है। मुकदमा एक साल तक चलता रहा और अन्त में सबेश की जीत हुई।

जिस दिन अदालत मे फैसला सुनाया गया सबेश को तेज बुखार था। फैसला सुनकर वह हर्ष से फूला न समाया और खाट से उठकर, शोफर के न होने के कारण, स्वयं मोटर ले अपने वकील के घर जा पहुँचा। उसने हुक्म दिया कि सुब्बु कुट्टि के कारखाने के माल

को जब्त करने और बेचने का इतजाम फौरन किया जाय। चिदम्बर के बड़े मन्दिर में उसने विशेष रूप से प्रसाद चढाने का भी प्रबध किया।

सुब्बु कुट्टि की मा के दुख का पारावार न रहा, उसे ऐसा लगा मानो प्रलय हो रहा है। "भगवान्, क्या तुम सवेश को दण्ड नही दोगे? उसने मेरे बेटे के साथ जो अन्याय किया है उसका फल क्या उसे नही मिलेगा?" इस प्रकार उसने अपने देवता से प्रार्थना की और मानो उसकी प्रार्थना के उत्तर मे फैसले के आठवें दिन डॉक्टरो की आशाओ के विपरीत सवेश हृदय की गति बन्द हो जाने के कारण इस ससार से चल बसा।

सबेश की मृत्यु के बाद हाईकोर्ट की डिग्री बेकार हो गई। विश्वनाथ के वकीलो ने उसे कानून समझाते हुए सलाह दी कि तुम्हारी कम्पनी अब बिना किसी रुकावट के अपनी कॉफी बेच सकती है। उन्होने यह भी कहा कि यदि नटराज के चित्र के बदले काल-नाग पर नाचते हुए कृष्ण की तस्वीर बना दी जाय तो किसी भी आपत्ति की सम्भावना नही रह जायगी।

सबेश का भूत हवा मे विरोध कर रहा था—"हाय, हाय, मेरे अनुकूल डिग्री मिल जाने का कुछ भी लाभ नही हुआ।" घृणा और बुरी नीयत का हठ ऐसा ही होता है।

"दुख करने से कोई लाभ नही," एक साधु की आत्मा ने कहा और यह गीत गाया —

"उसने अपनी स्त्री से कहा—'मै बढिया भोजन चाहता हूँ।'
स्त्री ने परोसा और उसने बडे स्वाद से खाया।
अपनी प्रेमिका के सग वह सोने चला गया।
'मेरी बाईं ओर कुछ दर्द है,' उसने कहा।

यह बात कहकर वह खाट पर लेट गया।

परन्तु वह वहाँ सदा के लिए लेटा रहा, क्योकि वह मर गया था, मर गया था।"

वकील की सलाह ने विश्वनाथ और कुट्टि मे फिर से स्फूर्ति भर दी। उन्हे लगा मानो उन्होने फिर से ससार पर विजय प्राप्त कर ली है, परन्तु दुर्भाग्यवश कॉफी के चूर्ण का भेद खुल चुका था।

सारे नगर में चर्चा होने लगी—"इस कॉफी के चूर्ण मे रीठे का मेल होता है।" किसी-किसी ने कहा—"कॉफी के टीन मे एक चौथाई हिस्सा रीठे का चूरा होता है।" और तब सबेश और नटेश दोनो की कॉफियो से लोगो को अरुचि हो गई। जो लोग इन दोनो में से एक भी कॉफी पीते थे उन्हे अपने स्वास्थ्य मे गडबडी मालूम होने लगी। किसी को कब्ज हो गया, किसी को दस्त आने लगे और किसी-किसी को तो उसे पीने के बाद उलटी तक होने लगी। फल यह हुआ कि सभी वडे आदमी अपनी कॉफी आप भूनने लगे। सुब्बु कुट्टि सचमुच अपनी कॉफी मे रीठे का चूर्ण एक टीन मे एक चाय के चम्मच के हिसाब से मिलाया करता था। वेही लोग, जिन्हे पहले उसकी कॉफी को पीने में मजा आता था, अब उसे असह्य रूप से बुरा समझने लगे।

---

# भविष्य-वाणी

श्री स्वामीनाथ ऐयर टोन्डामन्डल हाई स्कूल मे बारह साल से हेडमास्टर थे। उनका और उनकी पत्नी अखिला का दाम्पत्य-जीवन बडा सुखपूर्ण था। लेकिन अखिला को एक रज था। उसके कोई बच्चा नही हुआ था।

"तो क्या बात है, अखिला! स्कूल मे दो सौ लडके है। वे सब भी तो मेरे ही बच्चे है," हेडमास्टर कहते।

"तुम्हारे लिए कोई बात न हो। तुम उन्हे अपने बच्चे समझ सकते हो, लेकिन मै तो घर में सारे दिन अकेली पडी रहती हूँ। एक स्त्री के लिए बिना अपने बच्चे के जीवन बिताना बडा मुश्किल होता है," उनकी पत्नी उत्तर देती।

समय के साथ-साथ अपनी पत्नी की पुत्र-लालसा को बढते देखकर स्वामीनाथ ऐयर ने तीर्थयात्रा करने का निश्चय किया। उन्होंने दो महीने की छुट्टी ले ली और दक्षिण में पलनि और रामेश्वर-जैसे पवित्र स्थानो की यात्रा करते हुए वह मैसूर पहुँचे। वहाँ उन्होने पवित्र मन से एक-दो अश्वत्थ (पीपल) वृक्षो की परिक्रमा की, जो बाँझ स्त्रियो को पुत्र का सौभाग्य प्रदान करने के लिए प्रसिद्ध थे। इसके बाद वह घर लौट आये और, जैसी कि अखिला की जन्मपत्री बनानेवाले एक तेलगू

ज्योतिषी ने भविष्य-वाणी की थी, वह समयानुसार गर्भवती हो गई।

"ज्योतिष गलत नही हो सकती," स्वामीनाथ ऐयर ने हर्ष से फूल-कर कहा। अखिला ने कहा कि यह अश्वत्थ वृक्षो की भक्तिपूर्वक पूजा करने का फल है। जो कुछ भी हो, उन्होंने निश्चय किया कि बच्चा होने के बाद हम एक बार फिर पलनि चलेंगे। उन्होने अपना समय यह अनुमान करने में भी लगाया कि वह शुभ अवसर कब आयगा।

स्वामीनाथ ऐयर के कुछ मित्रो ने उन्हे सलाह दी कि चूँकि शादी के बहुत साल बाद गर्भ रहा है इसलिए आपकी पत्नी की विशेष रूप से देखभाल होनी चाहिये। उन्होने उन्हे अपनी पत्नी को ऐगमोर जच्चा-अस्पताल मे भरती कराने की भी सलाह दी। अखिला की मा बहुत पहले मर चुकी थी और औरतो में सिर्फ उनकी भुआ बची थी। उम्मीद थी कि वह अखिला की देखभाल करने के लिए आ जायँगी। लेकिन किसी कारण से वह न आ सकी। तब यही तय हुआ कि घर पर बच्चा कराने के बजाय अखिला को अस्पताल मे भरती करा दिया जाय।

प्रसव मे कोई कष्ट नही हुआ। स्वामीनाथ की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उन्होने अस्पताल के डॉक्टर और नर्सों को बडे-बडे उपहार देने का विचार किया।

बच्चा रात को नौ बजे हुआ था। नियमानुसार नर्स उसे फौरन नहला कर दूसरे दफतर में तोलने के लिए ले गई। उस दिन लगभग एक ही समय तीन बच्चे पैदा हुए थे। नर्सें इतने उत्साह और उतावली में थी मानो वे ही उन बच्चो की मा हो।

अस्पताल के नियमानुसार जो कुछ हुआ करता है वही इन तीनो बच्चो के साथ भी हुआ और इस डर से कि वे एक दूसरे से मिल न जायँ उनके कूल्हो पर नम्बर के कार्ड बाँध दिये गये।

इन तीनो बच्चो मे से एक का रंग साँवला था, लेकिन दो गोरे थे और उनका रग और वज़न करीब-करीब एक-सा था।

अखिला के बच्चे को जो नर्स लाई थी वह उसे दूसरी नर्सों को सौप-कर चली गई। वैसे तो प्रत्येक बच्चे के आते ही उस पर उसके नम्बर का कार्ड लगा दिया जाता था, लेकिन उस वक्त नर्सें गप्प लडा रही थी इसलिए वे कार्ड लगाना भूल गईं और बाद में उनकी समझ में न आया कि अखिला का बच्चा कौन-सा है। साँवले बच्चे का तो कोई सवाल था ही नही, दूसरे दोनो बच्चो पर उन्होंने अपनी समझ के अनुसार कार्ड बाँध दिये। अखिला का बच्चा कुछ ज्यादा गोरा था। आठवें वार्ड में जो मुसलमान औरत थी उसका रग साँवला था इसलिये उन्होंने सोचा कि साँवला बच्चा उसी का होगा। जो बच्चा कुछ ज्यादा गोरा था उसे उन्होंने अखिला के पास जाकर लिटा दिया। इससे कुछ गडबडी नही हुई।

"तुम्हारा बच्चा बडा सुन्दर है," एक फ्रासीसी नर्स ने कहा। "इसका वज़न सात पौंड है। क्या यह तुम्हारा पहला ही बच्चा है?"

"जी हाँ," स्वामीनाथ ने जवाब दिया। बच्चे की मा खाट पर थकी हुई पडी थी। उसके भीतर की खुशी उसकी मुसकराहट में फूट-कर निकल पडी। उसके आनन्द का कोई ठिकाना नही था। अब उसे पुत्रवती कहलाने का सौभाग्य प्राप्त हो गया था और उसके जीवन का एक उद्देश्य भी बन गया था।

"क्या बच्चा तन्दुरुस्त और हट्टाकट्टा है?" पिता ने पूछा। पिता सदा व्यवहारिक और वैज्ञानिक प्रकृति के होते है।

"आज के जन्मे हुए तीनो बच्चो में यह सब से अच्छा है," नर्स ने अँगरेज़ी में कहा, जिसका अर्थ स्वामीनाथ ने अखिला को तमिल मे समझा दिया।

इसी बीच वह नर्स, जो पहले-पहल बच्चे को ले गई थी, वार्ड में आई। उसने बच्चे को उठा लिया और कुछ देर तक वह उसे खेलाती रही; फिर दोनो नर्सें बाहर चली गईं।

"इस बच्चे की टूँडी के पास एक तिल था, वह इतनी जल्दी कैसे गायब हो गया ?" पहली नर्स ने पूछा।

"क्या तिलवाला बच्चा इस औरत का था ? हमने तो उस पर मुसलमान बच्चे का नम्बर बाँधकर वार्ड नम्बर आठ में भेज दिया," दूसरी नर्स ने जवाब दिया।

"या भगवान् ! अब हमे इस बारे मे चुप रहना चाहिए," पहली नर्स बोली।

"नही, यह बहुत.बुरी बात है, अगर तुम्हे यकीन है तो हमे अब से भी बच्चे बदलकर अपनी गलती सुधार लेनी चाहिये," दूसरी नर्स ने आपत्ति करते हुए कहा।

"तुम तो पागल हो गई हो," पहली नर्स बोली। "अब ऐसा करने से गडबडी होगी और हमें अपनी नौकरियो से हाथ धोना पडेगा। माओ के दिल में शुबहा तो फिर भी बना ही रहेगा। दोनो दु:खी होगी। अब तो चुप रहने मे ही भलाई है।"

बारह दिन बाद अब्दुल तैयब जी की पत्नी और अखिला अपने अपने घर क्रमश एन्डर्सन स्ट्रीट तिरुवल्लिकेण वापस चली गईं। दोनो घरो में दोनो बच्चो का खूब लाड-प्यार से लालन-पालन हुआ। सेठ तैयब जी के घर धन और आराम बहुत था और स्वामीनाथ के घर प्यार और सतोष अनत। दोनो बच्चो की देखरेख मे किसी ने कोई कसर नही की।

जब स्वामीनाथ का बच्चा एक साल का था तो उसकी मौसी आई। "बच्चे की आँखे तो हमारे भाई मुत्तु स्वामी जैसी है, सिर्फ इसकी नाक स्वामीनाथ के घरवालो से मिलती-जुलती है," उसने बच्चे को देखकर कहा। इससे स्वामीनाथ को बडा सतोष हुआ और मा को दुहरी खुशी हुई।

सेठ तैयब जी के घर मे भी ऐसा ही हुआ।

× × ×

सेठ तैयब जी को मरे २२ वर्ष हो गये है। अब उनका बेटा सुलेमान, जो जन्म से ही बडा चतुर था, अपने पिता की बडी तिजारत को खूब होशियारी के साथ चला रहा है।

स्वामीनाथ ऐयर का लडका अश्वत्थ नारायण बेहद कोशिश करने पर भी स्कूल लीविंग परीक्षा से आगे नही बढ सका। वह बम्बई अपने मित्रो के यहाँ गया और वहाँ ठहरकर उसने इधर-उधर सिफारिशे कराने और नौकरी ढूँढने की चेष्टा की, लेकिन अत में वह असफल होकर लौट आया। इन सब बातो का स्वामीनाथ पर गहरा असर पडा। ज्योतिषी ने जो कागज उन्हे लिखकर दिया था उसमे लिखा था—"तुम्हारा बेटा बहुत बडा सौदागर होगा। वह भाग्यशाली होगा, लेकिन अपने माता-पिता के किसी काम न आ सकेगा।"

"इसकी तो कोई बात नही कि वह हमारे किसी काम आयगा या नही। वह खुश रहे, यही काफी है। लेकिन उसे तो कही सफलता मिलती ही नही। ज्योतिष एक ढकोसला है," स्वामीनाथ ने बिगडते हुए कहा।

"यह तुम कैसे कह सकते हो कि ज्योतिष झूठी है? क्या बच्चे का

जन्म ठीक भविष्य-वाणी के ही अनुसार नही हुआ ? विधाता का लिखा कोई नही मेट सकता। कौन जाने, अभी क्या होगा और क्या नही। उसे किसी चेट्टियार (बनिये) के यहाँ काम सीखने को भेज दो। मुमकिन है कि वह तिजारत मे होशियार निकले," अखिला ने कहा।

स्वप्न में लक्ष्मण खड़े दिखाई दिये

# पश्चाताप

अशोक वाटिका में कितनी ही राते जागते विता देने के वाद एक रात अनजाने ही दु खी सीता को गहरी नीद आ गई।

वहाँ के अपने दु खपूर्ण कारावास में उन्हे अक्सर लक्ष्मण की याद आती थी। राम का ध्यान करते समय भी उन्हे ऐसा लगता था मानो लक्ष्मण उनके सामने खडे-खडे आँसूभरे नेत्रो से मौन भाषा में कह रहे है—"वहिन, तुमने मुझसे ऐसी वाते कैसे कही ?" यह विचार सीता के लिए असह्य था। इससे उन्हे अपने कारावास से भी अधिक कष्ट होता था।

"हाय, मैने उनके निर्दोष हृदय को न कहने योग्य वाते कहकर चोट पहुँचाई। मेरा पाप तो उस रावण से भी वढकर है जो मुझे यहाँ उठा लाया है।" ऐसी वाते वह वार-वार सोचती और अपनी नासमझी के लिए अपने आप को कोसती।

ऐसे ही विचारो से थककर सीता सो गई। स्वप्न में लक्ष्मण सामने खडे दिखाई दिये। उन्हे वहाँ देखकर वह आनन्द से नाच उठी और हर्ष के आँसू वहाती हुई वोली—"तो तुम आ ही गये, भइया ! क्या अव तक के मेरे सारे कष्ट स्वप्न थे ?"

"हाँ, मै सचमुच आ गया हूँ, वहिन ! अव भय और शोक की कोई वात नही। मुझे कभी आपको अकेले नही छोडना चाहिए था। क्या इसके लिए आप मुझे क्षमा कर देगी ?" लक्ष्मण ने पूछा।

फिर वह हँसते हुए बोले—"ओह, आपने भी कैसा हठ किया और उसके कारण हम कितने भयानक सकट में पड गये !"

लक्ष्मण की हँसी में सवेरे को ओस पर पडनेवाली सूर्य की किरणो-जैसी चमक थी। दु ख, आँसू और आनन्द से मिली हुई उस हँसी की सुन्दरता का शब्दो द्वारा कैसे वर्णन किया जाय !

"सचमुच मेरा सिर फिर गया था। लेकिन क्या तुम्हारा मुझे इस तरह अकेले छोड जाना ठीक था ? मैंने तुमसे चाहे कितनी ही कडवी बातें क्यो न कही हो, तुमने अपने बडे भाई के सामने की हुई प्रतिज्ञा कैसे तोडी ? मुझे तो क्रोध आ गया था और मैंने तुमसे ऐसी बाते कह दी थी जो मुझे नही कहनी चाहिए थी। लेकिन तुम्हें तो उसके कारण अपने भाई के सामने की हुई प्रतिज्ञा नही तोडनी चाहिए थी," सीता ने कहा।

"कैसी प्रतिज्ञा ? क्या तुमने राम से कोई प्रतिज्ञा की थी ? मैंने तो इसके विषय में कुछ नही सुना," नारद मुनि बोले, जो वहाँ न मालूम कैसे आ पहुँचे थे। वह ऐसा ही करते थे और सपनो में ऐसा ही होता भी है।

"क्या लक्ष्मण ने प्रतिज्ञा नही की थी ?" सीता बोली। "आप-जैसे पूजनीय पुरुष को ऐसी बातें नही कहनी चाहिएँ।" स्पष्टत जगज्जननी सीता को नारद से कोई भय नही था।

नारद ने उत्तर दिया—"तुम्हारी प्रार्थना पर राम लक्ष्मण से यह कहकर कि जहाँ खड़े हो वही रहना शीघ्रता से हिरन के पीछे भाग गये। उस समय वह लक्ष्मण की बात सुनने के लिए रुके नही। लक्ष्मण ने अपने मुँह से कोई प्रतिज्ञा नही की।"

यह सुनकर लक्ष्मण हँसे और बोले—"मुझे इस प्रकार के वाद-विवाद अच्छे नही लगते। सम्भव है ऋषियो मे ऐसी वाचालता

निषिद्ध न हो। मै एक सिपाही हूँ। जब राम ने कहा 'यहाँ रहो' और मै कुटिया के द्वार पर खडा हो गया तो वह मेरी ओर से प्रतिज्ञा ही हुई।"

'जाने से पहले मेरे पति मुझे अपने इस भाई को सौंप गये थे," सीता ने कहा।

"अरे, जब तुम दोनो ही एक दूसरे की हाँ मे हाँ मिलाने लगे तो मुझे क्या पडी है ? है तो यह तुम्हारा ही आपस का झगड़ा," नारद बोले।

"यदि मैने कोई बात कह दी थी तो उससे तुम्हारा बिगड ही क्या सकता था ?" सीता ने कहा। "हमने अपना नगर, अपना महल, केवल वचन निभाने के लिए ही तो छोडा था ! हमने भरत और प्रजा की प्रार्थनाएँ इसी कारण तो नही मानी कि हम समझते है कि एक बार वचन दे देने पर उसे, चाहे कुछ भी हो जाय, निभाना अवश्य चाहिए।"

"अपनी कही हुई असहनीय बातें याद दिलाकर मेरा हृदय मत दुखाइये," लक्ष्मण ने कहा।

"चाहे सारा ससार तुम्हे लाछित क्यो न करता, तब भी क्या तुम्हारे लिए मुझे इस भाँति अकेले छोडकर चला जाना उचित था ?" सीता ने पूछा।

"मै मानता हूँ कि आपका कहना यथार्थ है। जब मै आपको छोड-कर आधी दूर चला गया तो मेरे मन मे भी ऐसे ही विचार उठे—'भाभी की गालियो से मेरा क्या बिगडेगा ? मुझे तो केवल अपने भाई के सामने की हुई प्रतिज्ञा निभानी चाहिए,' मैने मन ही मन मे सोचा और घूमकर दस डग पीछे लौटा।"
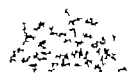
तभी साधु के वेष में छिपा हुआ रावण, जो सीता का दिया हुआ फल खा रहा था, एकाएक भय से काँप उठा। यह उस समय की बात है अब लक्ष्मण वापस मुडे थे। रावण को बुरे शकुन होने लगे और उसका बायाँ हाथ और बाईं आँख फडकने लगी। उसने फल को पत्ते पर रख दिया और द्वार की ओर देखा। उसे भय हुआ कि कही लक्ष्मण न आ जायँ और मुझे भागना पडे।

"डरो मत," नारद ने राक्षस से कहा।

झगड़ा करानेवाले यह ऋषि न मालूम कहाँ से और कैसे टपक पडे और झट बीच मे बोल उठे।

यह कहानी आश्चर्यजनक, अशुद्ध और असम्बद्ध-सी मालूम होती है। कहाँ अशोक वाटिका और कहाँ पचवटी! किन्तु विस्मय की कोई बात नही। यह स्वप्न था और वह भी एक दु खी नारी का। ऐसे स्वप्नो मे न कोई नियम होता है, न कारण।

"मै कुटिया की ओर दस डग बढा," लक्ष्मण ने कहा, "परन्तु तभी आपकी लाल-लाल आँखे और चढी हुई भौंहें मेरे नेत्रो के सामने घूम गईं। ऐसा लगा मानो आपने कहा 'दुष्ट! तू फिर आ गया' और मेरी ओर फुफकार मारकर काली की तरह झपटी। बस मै वापस चला गया और मुझे अपने भाई के सामने की हुई प्रतिज्ञा की सुधि नही रही। केवल मेरा अभिमान और आपके शब्द मेरा मस्तिष्क विचलित बनाते रहे। 'होने दो जो कुछ भी होना है, मै अपना मान नही खोऊँगा,' मैने दाँत पीसते हुए कहा और उस ओर चल दिया जिधर हिरन के रोने का शब्द सुनाई दिया था।"

"यदि तुम उस समय आ जाते तो मै बच जाती," सीता ने रोकर कहा।

"जो हो गया, सो हो गया । उठिये, अब चले । पिछल दुख को क्यो याद करती है ? अब तो मै यहाँ हूँ," लक्ष्मण बोले।

"भइया, मैने बडा अन्याय किया है। क्या ऐसा कोई भी प्रायश्चित नही, जो मै इस पाप के लिए कर सकूँ ?" सीता ने पूछा ।

"उठिये, खडी होइये," लक्ष्मण ने कहा और सीता को हिलाकर जगा दिया ।

सीता उठकर बैठ गई। वहाँ न लक्ष्मण थे, न नारद, केवल राक्षसनियाँ उन्हे घेरे खडी थी। उनमें से एक ने कहा--"उठो, उठो, अब तक क्यो सो रही हो ? महाराजा रावण आ रहे है। तुरही की आवाज़ नही सुनाई दे रही है ? और देखो, जैसा राजा कहे वैसा करना, बेकार ज़िद न करना। राम-लक्ष्मण तो समुद्र-पार है, वे यहाँ किसी तरह भी नही पहुँच सकते। अब तुम रावण की स्त्री हो, उन्हे कृतज्ञता के साथ स्वीकार कर लो। सुख और सौभाग्य को ठुकराकर व्यर्थ ही विरोध मे जीवन क्यो नष्ट करती हो ?"

सीता ने ठढी साँस ली और वृक्षो और झाडियो ने भी उनका साथ दिया ।

इसके दूसरे दिन सागर लाँघकर हनुमान सचमुच लका जा पहुँचे। सीता का सपना हनुमान के पहुँचने की पूर्व सूचना मात्र था। जो कुछ होनेवाला था वही उन्हे सपने में दिखाई दिया था। चूँकि वह हनुमान को नही जानती थी, इसलिए हनुमान के बदले लक्ष्मण दिखाई दिये थे ।

इसके बाद अशोक वाटिका में क्या हुआ, इसे कौन नही जानता ? जब सीता को पता लग गया कि हनुमान कौन है तो उन्होने पहले

लक्ष्मण के ही कुशल-क्षेम की बात पूछी और अपने पति राम के विषय मे बाद में बातचीत की ।

लक्ष्मण को अपमानित करने का दु ख उनके हृदय में कांटे की तरह चुभता रहता था । जो दु ख किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा बँटाया नही जा सकता वह सबसे अधिक कष्टदायक होता है ।

यदि हम सीता के कष्ट और दु:ख का स्मरण करे तो कुछ हद तक अपने कष्टो को ,भूल सकते हैं । कहा जाता है कि हनुमान अमर है, वह सदा हमारे पास हमारी सहायता करने को तत्पर रहते हैं। कष्ट आने पर हमे 'राम राम' कहकर उसका डटकर सामना करना चाहिए । हनुमान अवश्य हमारी रक्षा को आयँगे ।

# मा

रॉयप हमारे यहाँ अखबार बेचने का काम करता था। था तो वह ईसाई का लडका, लेकिन उसे इस बात की आदत थी कि रात के समय वह किसी विनायक की मूर्ति के सामने जाकर दण्डवत करता और फिर उसके पीछे लेटकर सो जाता। वह कभी यह मानने को तैयार नही होता कि सोने के लिए इससे भी कोई अच्छी जगह हो सकती है।

अगर कोई उससे पूछता कि तू ऐसी जगह क्यो सोया करता है तो वह केवल मुसकरा देता और ज्यादा पूछने पर कहता—"इससे मेरे मन को शान्ति मिलती है।"

"तेरा बाप ईसाई था या तू ही ईसाई हो गया है?" कुछ लोग उससे पूछते। इसका वह गर्व के साथ उत्तर देता—"मै ही ईसाई हो गया हूँ," और फिर अखबार बेचने चल देता।

कन्दस्वामी ऐयर कृष्णगिरि तालुका के पजपट्टी गाँव के एकाउन्टेट थे। एक दिन उनकी पत्नी शैतान-कुन्ड से नहाकर ऊपर आते समय फिसलकर पानी में गिर पड़ी। डूबते वक्त तक वह लगातार यही चिल्लाती रही—"हाय, मेरे बच्चे का क्या होगा?" उस समय वेंकटराय केवल छ महीने का था। कुछ साल बाद कदस्वामी ऐयर ने दूसरा ब्याह कर लिया। कुछ दिनो तक तो सब कुछ ठीक ढग से

चलता रहा, लेकिन बाद में बालक वेकटराय को यह महसूस होने लगा कि मेरे पिता और सौतेली मा दोनो ही मुझे नही चाहते। धीरे-धीरे उन्हें उससे अकारण ही घृणा भी हो गई। सौतेली मा उसे यह कहकर पीटती कि यह जानबूझकर मेरा कहना नही मानता और जब वह रोता हुआ पिता के पास पहुँचता तो वह भी उसे पीटते। यह बात अभागे बच्चे की समझ मे न आती। अगर कोई कुत्ते को पीटता या उस पर पत्थर फेंककर मारता और वह दर्द से चीखता हुआ भागता तो उसे देखकर वेंकटराय के हृदय में भ्रातृत्व की भावना जाग उठती और वह देर तक उस बेचारे जानवर को खडा-खडा देखता रहता। अब वह सात साल का था और स्कूल जाने लगा था। लेकिन पढाई में उसका मन नही लगता था। उसके मास्टरो ने पहले उसे डाँटा-धमकाया और फिर थोडा मारा-पीटा भी, लेकिन अन्त मे उसे गधा समझकर छोड दिया।

एक दिन उसके स्कूल का एक मित्र शौरिमुत्तु उसे अपने घर ले गया। उसकी मा द्वार पर खडी प्रतीक्षा कर रही थी। उसके पहुँचते ही उसने उसे छाती से लगाकर प्यार किया और फिर हाथ पकडकर भीतर ले गई।

"तुम्हारे साथ कौन आया है ?" उसकी मा ने पूछा।

"वह मेरी क्लास मे पढता है और गाँव के एकाउन्टेंट का लडका है। मै उसे अपने साथ खेलने के लिए बुला लाया हूँ। क्या उसे कुछ खाने को दे सकती हो ?"

शौरिमुत्तु के घर की हर चीज़ वेकटराय को बडी अच्छी लगी। वह उसके साथ दो तीन दिन तक उसके घर गया।

"मेरी मा मुझसे इतनी मुहब्बत क्यो नही करती जितनी शौरि की

मा उससे करती है ?" उसने अपने मन मे सोचा। एक दिन उसने शौरि को अलग ले जाकर पूछा—"मा कैसे बनाई जाती है ? तुम्हें अपनी मा कैसे मिली ?"

शौरिमुत्तु इसका जवाब नही दे सका। उसकी समझ में नही आया कि बच्चो को अपनी माताएँ कैसे मिलती है। आखिरकार उसने कहा—"हमें मा भगवान् देता है। पता नही क्यो उसने तुम्हें अच्छी मा नही दी। शायद वह तुमसे नाराज़ है।"

अपनी मा के आने पर उसने कहा—"मा, पता नही क्यो वेंकटराय की मा उसे हमेशा मारा करती है। क्या उसे तुम-जैसी अच्छी मा नही मिल सकती ?"

मेरी ने मुसकराकर कहा—"अगर तुम अच्छे होगे तो तुम्हारी मा तुम्हें नही पीटेगी।" यह कहते हुए उसने शौरि के मुँह को थपथपाया और उसका सिर चूम लिया।

"मुझे मेरी मा कब मिली ? तुम शौरि की मा कब बनी ?" वेंकटराय ने पूछा।

मेरी लडके के भोलेपन पर दया दिखाते हुए मुसकराई और बोली—"क्या यह बात तुम्हें किसी ने नही बताई ? जब तुम नन्हे-से थे तभी तुम्हारी मा शैतान-कुन्ड में गिरकर डूब गई। उसके बाद तुम्हारे बाप ने दूसरा व्याह किया। व्याह के वक्त मै वहाँ थी और मुझे पान-सुपारी मिली थी। जो तुम्हें पीटती है वह तुम्हारी अपनी मा नही है, वह तो बेचारी मर गई।"

"तो मेरी मा अब कहाँ है ?" वेंकटराय ने आँखें फाडकर पूछा।

"बेटे, अगर तुम भगवान् से प्रार्थना करोगे तो तुम्हारी मा मिल जायगी।"

"भगवान् कहाँ है ? मैं उसकी प्रार्थना कहाँ करूँ ?"

"उधर देखो," शौरि की मा ने दीवाल पर लटकती हुई वर्जिन मेरी की तस्वीर दिखाते हुए कहा। वेंकटराय बहुत देर तक खड़ा-खड़ा तस्वीर देखता रहा। इससे उसमें एक नया जीवन आ गया। वह घर को चल दिया। रास्ते में एक गिरजा पड़ता था। एक खिड़की में से उसने भीतर झाँककर देखा। वहाँ भी उसे दीवाल पर एक बड़ी तस्वीर दिखाई दी। वह उसे टकटकी बाँधकर देखता रहा। धीरे-धीरे ऐसा मालूम हुआ मानो तस्वीर में जान आ गई और वह दीवाल से उतर आई। वह एक स्त्री थी, प्रेम की साक्षात मूर्त्ति। वह आई और वेंकटराय के पास खड़ी हो गई। उसे लगा मानो उसकी प्रार्थना सुनकर सचमुच उसकी मा उसके पास आ गई। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।

"मेरे बच्चे, मेरे प्यारे वेंकटराय," उसने उसे कहते हुए सुना। कितनी प्यारी आवाज़ थी! उसे अपने मुँह पर उसके हाथ का स्पर्श अनुभव हुआ और उसे रोमाञ्च हो आया। आखिर उसे अपनी मा मिल ही गई। उसने उसे छाती से लगाकर प्यार किया और कहा—"मेरे पीछे-पीछे आओ।" वह आगे-आगे चलने लगी और चलते-चलते वे दूर निकल गये। बीच-बीच में वह रुकती और वेंकटराय को उठाकर प्यार कर लेती।

"मेरे बच्चे, तूने इतने दिन तक दुःख उठाये! तूने मुझे पहले क्यों नहीं बुला लिया ?" उस स्त्री ने कहा।

"मुझे पता नहीं था, मा !," वेंकटराय बोला और रोने लगा।

"रो मत," मा ने कहा और अपनी साड़ी के छोर से वेंकटराय के आँसू पोंछ डाले।

वे चलते रहे और अन्त में एक ईसाई पादरी के मकान पर पहुँचे। वेकटराय फाटक पर खडा हो गया। "यह बहुत अच्छी जगह है, आओ, यही बाग मे बैठे। घर जाने पर तो मा मारेगी," वह बोला और अन्दर जाने की चेष्टा करने लगा।

"वहाँ मत जाओ," उसकी मा ने उसे सावधान करते हुए कहा।

"क्यो ? वहाँ जाने से क्या होगा ?" वेकटराय ने पूछा।

"कोई आ जायगा और फिर मै नही ठहर सकूँगी, मुझे चला जाना पडेगा," मा ने कहा।

"मुझे बहुत प्यास लगी है। चलो, बाग के कुएँ से पानी पीकर लौट आयँगे," यह कह वेंकटराय मा का हाथ पकडकर भीतर चला गया।

"लडके, तुम कौन हो ?" पादरी ने मुँह से सिगार निकाल हाथ में पकडते हुए बच्चे के पास आकर पूछा। मा अदृश्य हो गई।

"मा, मा," कहकर वेंकटराय चीख पडा। वह बाग मे इधर-उधर दरख़्तो के बीच भागा-भागा फिरा और चिल्लाता रहा—"मा, तुम कहाँ चली गई ?लौट आओ, लौट आओ।"

पादरी उसे शान्त कर अपने घर ले गया और थोडा पानी पिलाने के बाद बोला—"बच्चे तुम कौन हो ?" उस समय वेकटराय को बडा तेज़ बुखार था।"

"बच्चे, हमे सिर्फ ईशू बचायगा। खुदा का वही एक लाजवाब बेटा है। देखो यह उसकी तस्वीर है। वह तुम्हारी रक्षा करेगा। और इधर देखो, यह उसकी मा मेरी की तस्वीर है, जिसने उसे इस पृथ्वी पर जन्म दिया था। वही तुम पर दया करके तुम्हे यहाँ लाई थी।"

"नही, नही, वह 'मेरी' नही, मेरी मा थी। मै उसे ढूँढ निकालूँगा। मै उसके बिना नही जी सकता।" तेज़ बुखार मे इस तरह

बक-बक करता हुआ वेंकटराय भाग खडा हुआ। अँधेरा हो चुका था। पादरी ने उसका पीछा नही किया।

इधर-उधर टक्करें खाता हुआ वह बैलगाडियो के अड्डे के पास विनायक के एक छोटे-से मन्दिर में पहुँचा। पैठ का दिन न होने के कारण वहाँ कोई भी आदमी नही था। मूर्ति के सामने किसी का जलाया हुआ एक छोटा-सा दीप टिमटिमा रहा था। वेंकटराय जाकर मूर्ति के सामने गिर पडा और पड़ा-पडा "मा, मा" बडबडाता रहा। जल्दी ही उसे गहरी नींद आ गई। बीच रात मे एकाएक वह उठ बैठा। उसकी मा उसके पास बैठी थी।

"मा!" वेंकटराय चिल्लाया और उसके गले से लिपट गया।

"तुम फिर तो मुझे छोडकर नही जाओगी," उसने रोकर पूछा।

"नही, अब नही जाऊँगी," मा ने वादा किया और उसका मुँह थपथपाते हुए उसे प्यार किया।

"अगर तुम रोज यहाँ आकर सोया करोगे तो मै भी जरूर आया करूँगी। दिन में मैं तुम्हारे पास नही आ सकती," वह बोली और पौ फटने से पहले ही अदृश्य हो गई।

उस दिन से वेंकटराय सदा उसी मन्दिर में सोने जाया करता। उसके चेहरे पर एक नई ज्योति आ गई थी और वह सारे दिन मनमाने गीत गाता हुआ इधर-उधर फिरा करता था। गाँववाले समझते थे कि लडका पागल हो गया है और उस पर तरस खाते थे। लेकिन सच बात यह थी कि वेंकटराय आनन्द के सागर में तैर रहा था। रात को वह हाथ जोड़कर मूर्त्ति की तीन बार परिक्रमा करता और प्रार्थना करने के बाद उसके पीछे सो जाता। उसकी मा हर रात को बिना नागा उसके पास आती। बहुत दिनो तक यही क्रम चलता रहा।

"नहीं, अब मैं नही जाऊँगी," मा ने वायदा किया

"बेचारा पागल लडका ! कितनी छोटी उम्र मे यह बीमारी लग गई इसे !" कुएँ पर औरतें कहती।

"यह सब बहानेबाजी है," कदस्वामी की पत्नी कहती।

"सच है या झूठ, यह तो भगवान् ही जाने," कदस्वामी कहते और अपने मन को समझाने की कोशिश करते। इससे उन्हे क्रोध आने लगा और गाँव के हँसमुख बच्चो को देखकर ईर्ष्या होने लगी।

एक दिन शाम को जब वेंकटराय रोज़ की तरह मन्दिर मे सोने गया तो वहाँ विनायक की मूर्त्ति नही थी। मन्दिर धराशायी हो पत्थरो और खम्भो का ढेर बना पडा था। किसी ने उसे फिर से बनवाने के लिए गिरवा दिया था । काम शुरू हो गया था और मूर्त्ति दूसरे स्थान पर रख दी गई थी।

बेचारा लडका उन पत्थरो के बीच बैठा-बैठा सारी रात जागता रहा, परन्तु उसकी मा नही आई। उसका सपना टूट गया और ससार एक बार फिर उसके लिए प्रेम से रिक्त हो गया।

वेंकटराय ने गिरजा के पास जाकर पुरानी खिडकी मे से झाँककर देखा। दीवाल पर उसे मेरी की तस्वीर दिखाई दी। वह उसकी मा-जैसी लगती थी, लेकिन इस बार उतरकर उसके पास नही आई, एक तस्वीर की तरह दीवाल पर ही टँगी रही।

कितने ही दिनो तक वेंकटराय टूटे हुए मन्दिर और गिरजा के इधर-उधर इस तरह चक्कर लगाता रहा जैसे किसी खोई हुई चीज को ढूँढ रहा हो। एक दिन वह पादरी के पास जाकर बोला—"पिता, मै ईसाई बनना चाहता हूँ।"

पादरी ने उसे बुलाकर बडी दयालुता के साथ बातचीत की। बाद मे उसने कदस्वामी ऐयर से कहा—"मा मेरी की मेहरबानी से

तुम्हारे लडके का पागलपन दूर हो गया है। वह ईसाई बनना चाहता है। हमें उसकी इच्छा के विरुद्ध नही चलना चाहिए।"

"ऐसा नही हो सकता, हम ब्राह्मण है," कदस्वामी ने उत्तर दिया और फिर पादरी ने इस बात पर ज़्यादा ज़ोर नही दिया।

"जाने दो उसे। इसके सिवा और चारा ही क्या है ? झूठ हो या सच, भगवान् करे उसका पागलपन दूर हो जाय और वह कही खुश रहे," ऐयर की पत्नी ने कहा।

"राम, राम ! ऐसी बातें न कहो,' कदस्वामी ऐयर ने जवाब दिया।

लेकिन एक दिन वेंकटराय गाँव से गायब हो गया और ऐसा गायब हुआ कि किसी को पता नहीं चला कि कहाँ गया।

मद्रास जाकर वेंकटराय ने एक बडे पादरी से बपतिस्मा ले लिया और अपना नाम बदलकर रॉयप रख लिया। एक अख़बार के मालिक ने उसे अख़बार बेचने पर रख लिया। उसके मा-बाप को इसका कुछ पता नही चला।

ईसाई हो जाने पर भी रॉयप विनायक की कोई मूर्त्ति देखता तो हाथ जोडकर खडा हो जाता। उसकी रातें सदा विनायक की किसी मूर्त्ति के पास ही बीतती। अब भी ऐसा प्रतीत होता है मानो वह अपनी मा के लौट आने की प्रतीक्षा कर रहा है। अख़बार बेचनेवाले लडके उसे बहुत चाहते हैं।

× × × ×

"यह तो अजीब कहानी है! भला इसका कोई आदर्श भी है! जरा समझाइये तो," सम्पादक ने पूछा।

"कोई आदर्श नही है। यह तो मैंने सिर्फ अपने चित्त की शाति के लिए लिखी है," लेखक ने मुसकराकर उत्तर दिया।

"आप तो बिलकुल रॉयप-जैसे हँसते हैं। क्या यह कहानी विधुरो को दूसरा ब्याह करने से रोकने के लिए लिखी गई है ?"

"नही, नही, ब्याह करना तो हमेशा अच्छा होता है।"

"तो क्या यह विनायक की पूजा का समर्थन करने को लिखी गई है ?"

"पूजा सब की अच्छी होती है। आप इस कहानी का यह उद्देश्य मान सकते है।"

"तो शायद यह सौतेली माताओ के लिए चेतावनी है ?"

"क्या सौतेली माएँ भी आपका अखबार पढती हैं ? तब तो यह अच्छी बात है।"

"आजकल की सौतेली माएँ बच्चो की देखभाल सगी माओ से भी ज्यादा अच्छी तरह करती है।"

'हो सकता है। ज़माना बदल गया है। लेकिन सौतेली माएँ हर तरह की होती है, यह तो आप जानते ही हैं। एक सास जिसे अपनी छोटी-सी बहू की देखभाल करनी पड़ती है एक तरह की सौतेली मा होती है। इसी तरह वह स्त्री भी जो अपने यहाँ किसी छोटी लडकी को नौकर रखती है, सौतेली मा ही होती है। किसी पिल्ले को पालनेवाला आदमी भी सौतेली मा का ही काम करता है। साराश यह कि जिस किसी भी स्त्री या पुरुष पर विकास पाते हुए मस्तिष्क और शरीर की देखभाल करने की जिम्मेदारी होती है वही उसके लिए सौतेली मा हो जाता है। स्वाभाविक प्यार तो सिर्फ मा का होता है। लेकिन वह एक आदर्श है, जिस तक दूसरे प्रेमो को पहुँचाने की चेष्टा करनी चाहिए। दूसरो को चाहिए कि वे भी मा की ही तरह चौकसी, समझदारी और पवित्रता के साथ व्यवहार और प्रेम करने का प्रयत्न

करे। दूध बढते हुए बच्चे के शरीर को पोषण देता है, लेकिन मस्तिष्क की बढती के लिए प्यार के दूध की आवश्यकता है। इसके बिना बच्चे की आत्मा मुरझा जाती है।"

"बस, रहने दीजिये। किसी ने आपसे लेक्चर पिलाने के लिए नही कहा था। आपने मेरे सिर मे दर्द कर दिया। हमसे जितना भी होता है हम अपने अखबार बेचनेवाले लडको की चिन्ता रखते है। वे सुस्त और शैतान होते है, फिर भी हम इन बातो पर ध्यान नही देते।"

"यह सुनकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई। रॉयप की अच्छी तरह देख-भाल किया कीजिये और अगर कभी आपको उसके व्यवहार मे विचित्रता दिखाई दे तो उस पर क्रोध न करके उसे विनायक के मन्दिर मे भेज दिया कीजिये।"

# शान्ति

वहू चौदह साल की थी। "लक्ष्मी, मै चार घडे पानी खीच चुकी; चार घडे और खीचकर हमाम भर दे। मै चौके मे जा रही हूँ," सास ने कहा।

वहू ने घडा कुएँ में डाला और हाथ बढाकर रस्सी नीची कर दी, ताकि घडा भर जाय। जव वह उसे ऊपर खीचने लगी तो उसका बायाँ हाथ दुखने लगा, यहाँ तक कि वह घडे को मुश्किल से खीच पाई। वह हाय-तोबा करना नही चाहती थी, इसलिए पैर से रस्सी दबाकर दाहिने हाथ से पानी खीचने लगी। इस तरह चार या पाँच घडे पानी खीचकर उसने हमाम भर दिया।

लक्ष्मी की सास का घराना गरीब और पुराने ढग का था। जवान होते ही वहू का गौना कर लिया गया और वह अपने पति के साथ रहने के लिए बुला ली गई। सास वहू पाकर बडी खुश हुई। जब किसी पर हुक्म चलाने को मिल जाता है तो किसे खुशी नही होती।

सास जो काम बताती उसे लक्ष्मी मेहनत और प्रसन्नता से करती, लेकिन पानी खीचना उसे वश से बाहर की बात मालूम होती। दो दिन तक उसने बडी मुश्किल मे काम चलाया। तीसरे दिन रात

को उसने झिझकते हुए अपने पति से कहा—"मुझे तुमसे कुछ कहना है, नाराज तो न होगे ?"

"कहो, क्या बात है ?" नटेश ने दयालुता के साथ पूछा।

"तुम नाराज़ होगे," लक्ष्मी ने फिर कहा।

"डरो नही, मै वादा करता हूँ कि नाराज़ नही हूँगा, बताओ, क्या बात है ?" नटेश ने आश्वासन देते हुए कहा।

"मुझसे कुएँ से पानी नही खीचा जाता, मेरे हाथ मे दर्द होने लगता है। अगर मै मा मे कहूँगी तो डर लगता है कि कही वह गलत न समझ बैठे," यह कहकर लक्ष्मी ने अपने पति की ओर इस तरह देखा जैसे उससे कोई बडा अपराध हो गया हो।

पहले तो नटेश को क्रोध-सा आया। उसने सोचा कि शायद सास-बहू के प्रचलित झगडे का आरम्भ हो रहा है। लेकिन जब उसकी छोटी-सी पत्नी ने उसे अपनी कठिनाई बतलाई तो उसकी समझ मे आ गया और उसे विश्वास हो गया कि यह जबरदस्ती लडने के लिए ऐसा नही कर रही है, बल्कि इसके हाथ में कुछ खराबी है।

उस रात नटेश बहुत देर तक सो नही सका। सुबह वह एक नये इरादे के साथ उठा। उठने के बाद वह अक्सर थोडी-सी कसरत किया करता था। उसने सोचा कि अगर इसके बजाय मै पानी खीचकर हमाम भर दिया करूँ तो कसरत की कसरत हो जायगी और मेरी स्त्री की परेशानी भी दूर हो जायगी। उसने उसकी बाँह के बारे मे किसी डॉक्टर से सलाह लेने का भी इरादा किया।

× × ×

"नटेश, पानी तू क्यो भर रहा है ? यह तो तेरी बहू का काम है। क्या तू मुझे इस बात की सजा दे रहा है कि मैने उससे घर के लिए

थोडा-सा पानी भरने को कह दिया है ?" नटेश की मा ने क्रोध में भरकर पूछा ।

"नही मा, यह बात नही है । यह काम मैं उसकी खातिर नही, बल्कि इसलिए कर रहा हूँ कि इससे मेरी तन्दुरुस्ती को फायदा पहुँचेगा । तुम दोनो घर का काम किया करो, मैं कसरत के खयाल से रोज़ सवेरे पानी भर दिया करूँगा," नटेश ने कहा । उसने सोचा कि अगर मैं अपनी स्त्री के हाथ की बात मा से कह दूँगा तो वह चिड-चिडाने लगेगी । इसलिए उसने सच्ची बात नही बताई ।

लेकिन उसकी मा बराबर भुनभुनाती रही । उसने सोचा कि यह करतूत बदतमीज बहू की है । वह लक्ष्मी को बुरा समझने लगी ।

नटेश की मा का नाम पार्वती था । उसकी बडी लडकी सीता विधवा हो जाने के बाद से उसी के पास रहती थी । वह दिन भर आलसियो की तरह पडी रहती और दूसरो मे ऐब निकाला करती ।

"नटेश का तन्दुरुस्ती और कसरत का बहाना बिलकुल झूठा है, यह सब बहू की शरारत है । नटेश की तन्दुरुस्ती अब तक तो बिलकुल अच्छी थी, अब क्या हो गया ?" सीता ने कहा ।

"ज़रा सोचो तो भला, मर्द घर के लिए पानी खीचता हुआ कैसा लगेगा ! कितनी शर्म की बात है !" मा बोली ।

"रानी जी को आराम करने दो । हमाम भरने के लिए पानी मै खीच दिया करूँगी," सीता ने कहा ।

इस तरह की बकझक चलती रही । नटेश के गृहस्थ-जीवन का नया बाग कॉटेदार झाडियो से भर गया और वहॉ प्रेम को पनपने को जगह ही नही रही । लक्ष्मी की आत्मा बडी दुखी थी ।

एक दिन लक्ष्मी सोकर जल्दी उठी और उसने चुपके से कुएँ के पास जाकर पहले दिन की तरह अपने पैर से रस्सी दवाकर किसी तरह हमाम भरने के लिए काफी पानी खीच लिया। इसके बाद वह फिर खाट पर जाकर सो गई। जब और दिन की तरह नटेश उठकर पानी खीचने गया तो उसने देखा कि हमाम भरा जा चुका है। उसने समझा कि मा ने भर दिया होगा और वह चुपचाप अपने काम में लग गया।

यही बात दूसरे दिन भी हुई। "क्या किया जाय इसके लिए ? मा नही चाहती कि मैं पानी खीचकर अपने को तकलीफ पहुँचाऊँ" नटेश ने मन ही मन में सोचा और किसी से कुछ कहा नही। उस रात को लक्ष्मी को बुखार चढ आया और उसका हाथ बुरी तरह सूज गया। तब नटेश की समझ मे आया कि बात क्या है। वह बडा परेशान हुआ और खाट पर पडा-पडा जागता रहा। कुछ देर बाद उसे नीद आ गई।

"इसके हाथ में तो कोई जन्म की खराबी है, किन खोटे कर्मो से हम इस पाप को अपने घर उठा लाये ?" नटेश की निर्दय मा ने दूसरे दिन कहना शुरू किया। नटेश यह सहन नही कर सका। वह मा से झगड पडा और सख्त दर्द में पडी हुई बीमार पत्नी पर भी बात-बात पर बिगडने लगा। इसी तरह दो दिन बीत गये। तब उसने अपने ससुर को लिखा कि आकर अपनी लडकी को ले जाओ। ससुर आ गया।

"तुम्हारी लडकी के हाथ मे कोई जन्म की खराबी है। तुमने हमें यह बात क्यो नही बताई थी ?" पार्वती ने पूछा।

"नही, यह जन्म की खराबी नही है। कभी-कभी इसका हाथ सूज जाया करता था, बस इतनी-सी ही बात है। अब मैं इसे घर ले

जाऊँगा और बिलकुल अच्छी हो जाने पर यहाँ लाऊँगा," लक्ष्मी के बाप ने अपने को शान्त रखते हुए कहा। वह अपनी लडकी को बुखार चढे मे ही घर ले गया।

"इतने रिश्ते आ रहे थे कि पूछो मत ! क्या हमने उन सब को इसीलिए नामजूर किया था कि हमारे लडके को एक अपाहज लडकी और एक हज़ार रुपया मिल जाय ? क्या हमारे सिर पर से कर्ज़ा उतारने का कोई और उपाय नही था ? हमारा भाग तो देखो।"

मा-बेटी रोज इसी तरह बातें किया करती। नटेश को ससुर का एक पत्र मिला, जिसमे लिखा था कि लक्ष्मी के हाथ की सूजन उतर गयी है और बुखार भी कम है, लेकिन अभी वह खाट से उठ नही सकती।

एक महीने बाद दूसरा पत्र आया जिसमे लक्ष्मी के पिता ने सूचना दी कि बीमारी ने पलटा खाया है और लक्ष्मी को फिर से बुखार चढ आया है।

"यह बीमारी अच्छी नही हो सकती, यह पिछले कर्मों का फल है," पार्वती ने कहा।

"शायद ऐसा ही हो। हमे अपने पापों का दण्ड भोगना ही चाहिए," नटेश बोला।

"तुम दूसरा ब्याह कर लो, मै यह बात ज्यादा दिन नही सह सकती," मा ने कहा।

"बकवास मत करो," नटेश बोला और अपने दफतर चला गया। वह तालूका के दफतर मे क्लर्क था।

इसी तरह एक वर्ष बीत गया। एक दिन पार्वती का छोटा भाई अपनी बारह साल की लडकी मीनाक्षी को लेकर नटेश के घर आया।

"देखो, कितनी अच्छी है यह लडकी ! तुम्हारे ब्याह के वक्त यह बहुत ही छोटी थी, नही तो हम जरूर इससे तुम्हारा ब्याह कर देते। अब हम इसके लिए वर की तलाश मे क्यो टक्करें खाते फिरे ? यह हमारी बच्ची है, हमारे ही घर मे आ जाय," पार्वती ने कहा।

शुरू-शुरू मे ऐसी बातो से नटेश को घृणा मालूम हुई। लेकिन किसी बात के पीछे पडे रहने पर वह पूरी होकर ही रहती है। दूसरे साल चैत्र के महीने में तिरुपति देवता के सामने नटेश का दूसरा ब्याह हो गया।

## २.

लगभग छ महीने बाद मीनाक्षी अपने पति के घर पहुँची। पार्वती उस पर बडी दयालु थी और मीनाक्षी स्वय बडी फुर्तीली और अच्छी लडकी थी। अवस्था में छोटी होने पर भी वह घर का सारा कामकाज कर लेती थी। लेकिन इन सब बातो के होते हुए भी नटेश के हृदय मे शान्ति नही थी। कोई बात उसे सताती रहती थी।

"तुम मुझसे प्रेम क्यो नही करते ?" मीनाक्षी ने पूछा।

"तुम ऐसा क्यो सोचती हो कि मै तुमसे प्रेम नही करता ? मै तुम्हें डाँटता या पीटता तो नही ?" नटेश ने कहा।

"तुम मेरे सवाल का जवाब नही दे रहे हो। असल बात तो यह है कि तुम्हारा मन कृष्णपुर मे रहता है," मीनाक्षी बोली।

कृष्णपुर उस गाँव का नाम था जहाँ लक्ष्मी बीमार पडी हुई थी। नटेश के दूसरे व्याह के थोडे दिन बाद ही लक्ष्मी का बुखार कम हो गया और उसके हाथ की सूजन भी उतर गई। जल्दी ही वह बिलकुल चगी हो गई।

"देखो उसकी मक्कारी ! मैने सुना है कि अब वह अपनी मा के घर का सारा पानी भर लेती है और यहाँ उसे चार घडे खीचने भी भारी थे" पार्वती ने चिल्लाकर कहा।

"और अब वह मक्कार यहाँ आने की सोच रही है। ऐसा मालूम होता है कि मेरे गरीब लडके को दो-दो लुगाइयो का बोझ सम्हालना पडेगा। यह नामुमकिन है," उसने फिर कहा।

"यह तो कुछ भी नही है, मा ! तुमने उसके चालचलन के बारे मे भी कुछ सुना है ?" सीता ने पूछा।

"अरे रहने भी दे उस बेशर्मी के जिक्र को," मा ने कहा।

"मै तो यही चाहती हूँ कि ये बाते नटेश के कानो तक न पहुँचने पायँ, लेकिन दुनिया का मुँह कौन पकड सकता है ?" सीता बोली।

परन्तु कृष्णपुर के लोगो मे ऐसी कोई चर्चा नही थी। वे सब लक्ष्मी पर तरस खाते थे और कहते थे—"यह अन्याय तो देखो ! थोडे दिन बीमार रहने की वजह से ही बेचारी को छोड दिया !"

"ऐसा लगता है कि इसके पति ने दूसरा व्याह कर लिया है। कैसा खुल्लमखुल्ला अन्याय है यह ! हीरा-जैसी लडकी की जिंदगी खराब कर दी," कोई-कोई कहता।

"उन्हे अदालत के सामने ले चलकर खडा करना चाहिए, जिससे कुछ सबक तो मिले," दूसरे कहते।

इसी प्रकार कुछ दिन बीत गये। पहले तो लक्ष्मी को अपना मुँह दिखाते भी लज्जा आती थी और वह घर मे बद रहती थी। लेकिन इस तरह वह कितने दिन रह सकती थी ? वह नदी किनारे हनुमान जी के मन्दिर मे जाने लगी। नदी में नहाकर वह मूर्त्ति के सामने एक फल चढाती और प्रार्थना करती—"हे पिता, तुमने एक बार सीता को कष्ट से उबारा था। तो फिर मेरी ओर कृपा-दृष्टि क्यों नही करते ?" इसी प्रकार वह प्रति दिन देवता के सामने प्रार्थना करती।

ऐसे ही दो वर्ष और बीत गये। "मैंने जरूर पिछले जन्म मे कोई

बडा पाप किया होगा," लक्ष्मी अपने मन को समझाने के लिए कहती और ईश्वर के प्रति उसका विश्वास कम नही होता।

धीरे-धीरे कृष्णपुर मे भी कुछ लोग ऐसी ही बाते उडाने लगे जैसी लक्ष्मी को सास और नन्द को सुहाती थी।

"उन्होने इसे ऐसे ही थोडे ही निकाल दिया होगा ? कोई न कोई खराबी होगी जरूर," उन्होने कहना शुरू किया। फिर तो एक की दस बात होने लगी। एक दिन उसकी बडी भावज बोली—"कोई लडकी अपने पति से इतने दिन तक कैसे अलग रह सकती है ! इससे तो अच्छा कि वह जीभ खीचकर मर जाय।" ये बातें उसने ज़ोर से कही जिससे कि लक्ष्मी भी सुन ले और उसे ऐसी बाते कहने से रोकनेवाला था ही कौन ? लक्ष्मी की मा को मरे बहुत दिन हो चुके थे और उसका बाप बीमार पडा-पडा मरने की तैयारी कर रहा था। पैर मे ज़हर फैल जाने से वह तीन महीने से खाट पर पडा था। उन तीन महीनो मे बीमार बाप की सेवा करते रहने से लक्ष्मी अपना दु ख बहुत-कुछ भूली रही।

एक दिन उसके पिता ने अपने लडके को बुलाकर कहा—"बेटा, मै अब नही बचूँगा, लेकिन मरने से पहले मै तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ। तुम जाकर नटेश के हाथ-पैर जोडो और लक्ष्मी को वहाँ छोड आओ। वहाँ उसके साथ जो कुछ भी हो, भगवान् मालिक। मेरे मरने के बाद वह यहाँ नही रह सकती।" यह कहकर वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा और बेहोश हो गया। तीन दिन तक इसी दशा से रहने के बाद उसकी मृत्यु हो गई।

## ३.

लक्ष्मी के भाई ने पिता की इच्छा पूरी करने के लिए कई प्रकार से चेष्टा की, लेकिन सब विफल।

"उस बदनाम को मै अपने घर मे कदम नही रखने दूँगी," पार्वती ने साफ-साफ कह दिया और उसकी बेटी ने हाँ मे हाँ मिलाई। नटेश की इच्छा तो थी, लेकिन उसे इतना साहस नही हुआ कि लक्ष्मी को फिर से अपने पास रख ले। उसने उसके भाई को यह कहकर वापस भेज दिया कि अब मै लक्ष्मी को नही रख सकता।

लक्ष्मी रोज़ की तरह हनुमान मन्दिर में पूजा कर पास ही बैठी रो रही थी।

"तुम रो क्यो रही हो ?" वहाँ खडे हुए एक ग्वाले के लडके ने पूछा। लक्ष्मी उसे प्रति दिन हनुमान जी पर चढाया हुआ केला दिया करती थी, इसलिए दोनो मे मित्रता हो गई थी।

लड़के की बात का जवाब न देकर लक्ष्मी रोती ही रही।

"रोओ मत मा, भगवान् तुम्हारी मदद करेगें," उसने कहा।

"भगवान् को मुझ पर दया नही आती भइया! मै इसीलिए तो रो रही हूँ कि मै मरना चाहती हूँ और मौत नही आती," लक्ष्मी ने कहा।

"मेरी बडी बहिन भी इसी तरह रोया करती थी और एक दिन उसने कुएँ में डूबकर जान दे दी। उसका आदमी उसे बहुत बुरी तरह पीटा करता था। उससे यह बरदाश्त नही हो सका। उसका आदमी शराबी था और उसने उसको इस दशा तक पहुँचा दिया।"

"अगर मेरा आदमी मुझे पीटता तो मै सह लेती। चाहे वह कितना ही पीटता, मै परवा नही करती।"

"तो फिर क्यो रोती हो ?"

"अगर मै तुम्हे बताऊँ तो तुम समझ नही पाओगे। तुम्हारी बहिन मरकर सुखी हो गई, भइया। मैने भी मरने की ठान ली है, लेकिन मुझे डर लगता है। क्या तुम मेरे साथ तालाब तक चले चलोगे ?"

"ताकि तुम पानी मे गिर पडो ? नही, मै तुम्हारे साथ नही चलूँगा ।"

"नही चलोगे ? अच्छा, मै अकेली चली जाऊँगी ।"

लक्ष्मी हनुमान जी के सामने साष्टाग लेट गई और बहुत देर तक चुपचाप पडी रही। फिर वह उठी और तेजी से बडे कुण्ड की ओर चल दी ।

"मत जाओ मत जाओ, मै तुम्हारे हाथ जोडता हूँ। सब ठीक हो जायगा। अगर तुम पानी मे डूब मरोगी तो भूत बन जाओगी, ऐसा काम मत करो।" ग्वाले का लडका यह कहता हुआ उसके पीछे-पीछे दौडा।

नदी की तली मे एक गहरा गडहा था। उसी को बडा कुण्ड कहते थे। नदी ऊपर तक भरी हुई थी और दोपहर का वक्त था। आसपास कोई आता-जाता नही दिखाई देता था। कुछ चरवाहे नदी के दूसरे किनारे पर दूर अपने ढोर चरा रहे थे। उन्होने न कुछ देखा, न सुना। जैसे ही लक्ष्मी पानी मे कूदी ग्वाले का लडका डरकर भाग गया।

## ४.

"कहते है कि वह नदी मे डूबकर मर गई। बडा अच्छा हुआ।"

"अब गाँववाले हमे नाम नही धरेगे, हम बदनामी से बच गये।"

"मैने सुना है कि जो आदमी बेमौत मरते है वे भूत बन जाते है।"

"हाँ, हाँ, भूत तो बनेगी ही वह। बनने दो, वह इसी लायक थी।"

ये बाते पार्वती, सीता और मीनाक्षी कर रही थी। मीनाक्षी को सात मास का गर्भ था।

दो महीने बाद मीनाक्षी को बिना किसी विशेष कष्ट के प्रसव हुआ और एक लडकी पैदा हुई। नटेश के घर में वह बडी खुशी का दिन था। हम मृत्यु को बडे दुर्भाग्य की बात समझते है, लेकिन वह

वहुत-से रजो और दु खो का अन्त कर देती है। उसके विना जीवन एक अमर नरक वन जाय। लक्ष्मी के डूवने के समाचार से कितनो को खुशी हुई। नटेश तक को तसल्ली और शान्ति मिली।

वच्चे के जन्म के दस दिन वाद से मीनाक्षी को हलका-हलका बुखार रहने लगा। "कोई वात नही है, ठीक हो जायगी," एक वूढी औरत ने कहा जो उसे देखने आई थी।

दूसरे दिन मीनाक्षी वकझक करने लगी मानो उसे सरसाम हो गया हो। "चुप रहो," सास ने डपटकर कहा।

मीनाक्षी ने उसे घूरकर देखा। "हूँ, मै जरूर चुप रहूँगी," वह चिल्लाकर बोली। "तुमने मुझे घर से वाहर निकाल दिया था, अव मैं तुम्हे नही छोडूँगी।" कुछ रुककर वह फिर चिल्लाई—"मेरे बच्चा पैदा हुआ है न! यह किसका बच्चा है? उठ, भाग, जा नदी मे गिर-कर मर जा।"

मारे क्रोध के मीनाक्षी की आँखें घूमने लगी और उसका शरीर लकडी की तरह ऐठ गया। थोडी देर तक वह इसी दशा मे रही फिर विछौने से उछलकर भागने लगी।

"या भगवान्! यह तो उसका भूत है," सीता भय से चिल्लाई।

"हे ईश्वर! हे माता! मै तुम्हे जो कुछ कहोगे दूँगी। हे मारि-अम्मा हमारी रक्षा करो," पार्वती घवराकर बोलीं।

पार्वती ने चुपके से मन्दिर के पुजारी को बुला भेजा और मुर्गे की वलि चढाने का प्रवन्ध किया।

ज्योतिषी सीताराम ऐयर ने मन्त्र पढे और वीमार को पान मे रख-कर पवित्र भस्म दी। मीनाक्षी ने उसे लेकर विछौने पर रख लिया और कुछ शान्त हो गई। भस्म का प्रभाव देखकर सवको प्रसन्नता हुई।

"इसे अपने मुँह मे रख लो," नटेश ने कहा ।

"हाँ, रखती हूँ," यह कहकर मीनाक्षी ने भस्म अपनी हथेली पर लौट ली और फिर एकाएक उसे फूँक मारकर उडा दिया । इसके बाद वह ठठाकर हँस पडी ।

"अब मै तुझे नही छोडूँगी । कहाँ है वह औरत ? उसे मै भुगतूँगी । भस्म देकर मुझसे धोखा करना चाहती है ?" वह चिल्लाई और पागलो की तरह हँसी ।

"अरी चुडैल ! यह तो वही साँपन है जो डूबकर मरी है । झाडू तो ला," पार्वती ने कहा ।

सीता झाडू उठा लाई और पार्वती ने उसे लेकर मीनाक्षी के सिर पर मारना शुरू किया ।

"मुझे मत मारो, मुझे मत मारो, म जाती हूँ," मीनाक्षी चिल्लाई ।

"भाग यहाँ से, निकल यहाँ से," यह कहकर पार्वती उसे फिर मारने लगी ।

"बस, बहुत हो चुका । ठहरो," नटेश चिल्लाकर बोला । वह बेचारा इस करुण दृश्य को देखकर पागल-सा हो गया था ।

"तू नही समझता , इन बातो को, नटेश ! दूर खडा रह," पार्वती ने चिल्लाकर कहा ।

इस तरह वे लोग चुडैल के पीछे पाँच दिन तक पडे रहे, लेकिन कोई लाभ नही हुआ । बेचारी बहू का पागलपन बढता गया ।

"यह प्रसव का पागलपन है," एक ने कहा ।

"नही. किसी के श्राप का फल है," दूसरे ने कहा ।

"मुझे पक्का यक़ीन है कि यह लक्ष्मी का भूत है," सीता बोली ।

"मुर्गे की बलि काफी नही है, देवी बडी बलि चाहती है। बकरा चढाना होगा," पुजारी ने अकेले में पार्वती से कहा और पार्वती ने नटेश से छिपकर इसका भी इन्तज़ाम कर दिया। लेकिन सब बेकार।

चार महीने बीत गये और तब, जैसा कि सीतारामैयर ज्योतिषी ने भविष्य-वाणी की थी, मीनाक्षी को आराम हो गया और वह बिलकुल चगी हो गई। सारी बाते सपने-सी लगने लगी, लेकिन उनका नतीजा यह हुआ कि हर एक के मन मे, यहाँ तक कि पार्वती के मन में भी, लक्ष्मी के प्रति भय और आदर का एक नया भाव उत्पन्न हो गया। उन्होने अब उसके बारे में बातचीत करनी बद कर दी।

मीनाक्षी एक बार फिर बडे स्नेह और चतुराई के साथ काम करने लगी। उसे बस धुँधली-सी याद भर रह गई कि बीमारी के दिनो मे मैंने मूर्खतापूर्ण व्यवहार किया था। घर के सब आदमियो की भी जान में जान आई, वे उस घटना के बारे में चुप रहे और चतुराई के साथ अपना काम करते रहे।

एक वर्ष बाद मीनाक्षी फिर गर्भवती हुई। पार्वती ने छिप-छिपकर और प्रकट रूप से भी देवताओ की मानताएँ मानी, उनकी पूजा की और बलि चढाई। जब बच्चा होने का समय आया तो नटेश ने पास के कस्बे पाग्लूर के मिशन-अस्पताल से एक नर्स बुला ली। इस बारे मे किसी ने कुछ कहा सुना नही। पिछली बार गाँव की दाई ने बच्चा कराया था और मीनाक्षी बीमार हो गई थी। इसलिए हर एक की यही राय हुई कि इस बार एक होशियार नर्स को बुलाना ठीक रहेगा।

मीनाक्षी का दूसरा प्रसव भी आसानी के साथ हुआ और इस बार लडका जन्मा। बच्चा होने के समय अस्पताल की नर्स उसके पास

रही और बाद मे भी एक महीने तक रोज़ उसे देखने आती रही। उसने इस बात का ध्यान रखा कि मा को कोई दिमागी गडबडी न हो और बच्चे को समय पर दूध मिलता रहे। नटेश को डर था कि कही पिछले प्रसववाली बीमारी फिर न हो जाय। सब बातो के ठीक रहने से उसे बडी खुशी हुई और वह नर्स को दस रुपये देने लगा। लेकिन नर्स ने यह कहकर कि मुझे रुपयो की ज़रूरत नही है, रुपये लौटा दिये।

"मुझे दु ख है कि मै आपको इतने थोडे रुपये दे रहा हूँ। इससे ज्यादा मै दे नही सकता। मेहरबानी करके इन्हे ले लीजिये और नाराज़ न होइये।"

"नही, नही, मै मेहनताना नही चाहती। मैंने यह काम रुपये की वजह से हाथ मे नही लिया है। मै तो मोहब्बत की वजह से चली आई हूँ।" ऐसा कहकर नर्स ने मीनाक्षी के बच्चे को उठा लिया और कुछ देर तक वह उसे खेलाती रही।

फिर मीनाक्षी से नमस्ते कर उसने सब से विदा ली। जिस समय वह बातें कर रही थी, न जाने क्यो नटेश को अपनी पहली पत्नी की याद आ गई। लेकिन यह सोचकर कि मुझे ऐसी बातो का ध्यान नही करना चाहिए उसने अपने आपको शान्त किया।

५.

"जब तुम घर मे थी तो क्या तुम्हे किसी ने पहचाना नही, शान्ति देवी ?" पाग्लूर अस्पताल के पादरी ने पूछा। शान्ति देवी लक्ष्मी का नया नाम था।

"अस्पताल के कपडो ने मुझे पहचाने जाने से बचा लिया। औरतो ने तो मुझे बिलकुल ही नही पहचाना। जिस लड़की के बच्चा हुआ था वह
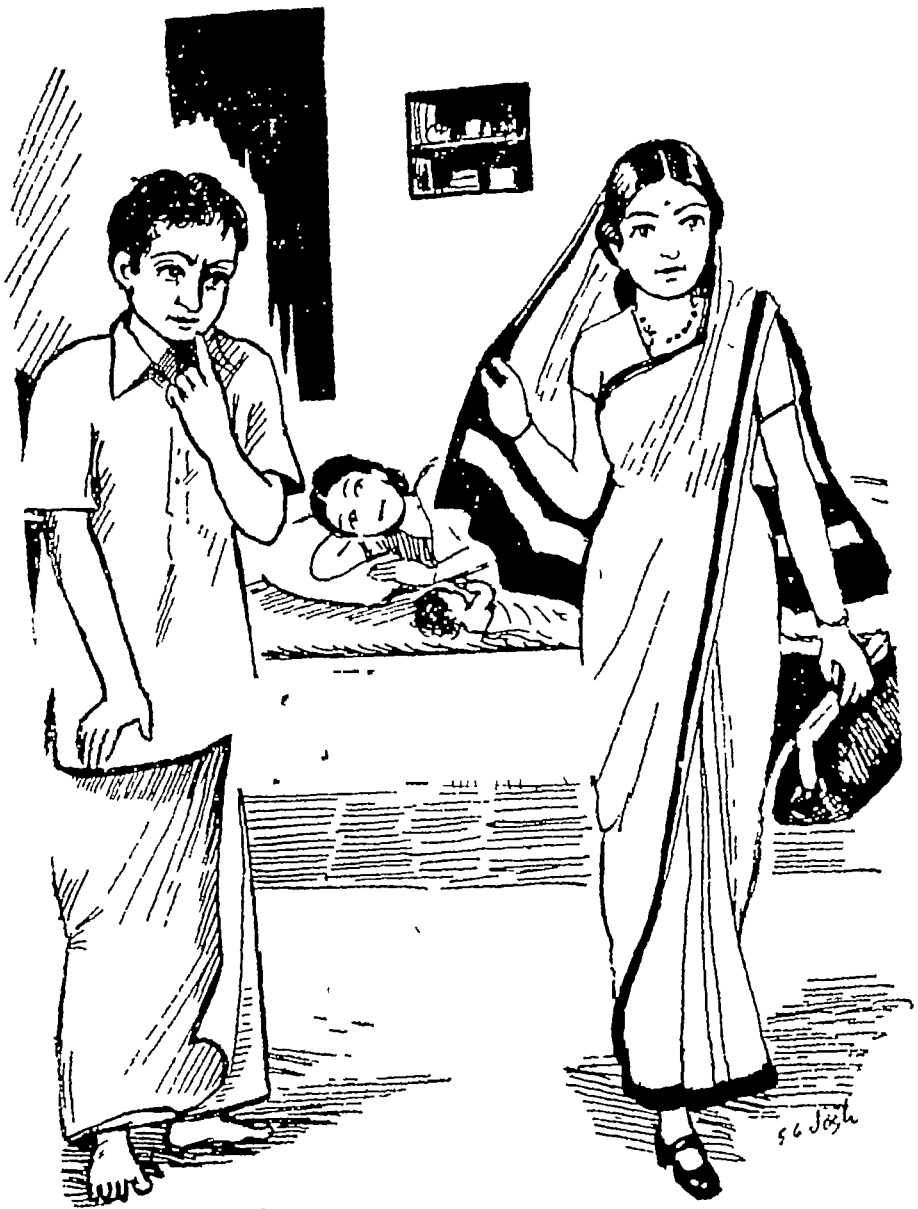
साड़ी का पल्ला अच्छी तरह मुँह पर खींच लिया

तो मुझे जानती ही नही और उसके पति ने भी शिष्टता के कारण मेरी तरफ ध्यान से नही देखा। आखिरी दिन उसे कुछ शक हुआ था, लेकिन मैंने साडी का पल्ला अच्छी तरह मुँह पर खीच लिया और इस तरह मै पहचाने जाने से बच गई।"

"वहुत खूब! तो क्या तुम्हारे मन मे शान्ति है ?"

"हाँ, मेरा मन सचमुच शान्त है। बीमारो की सेवा करने से मुझे खुशी होती है। अगर आप मुझे नदी से वाहर नही निकालते तो मै भूत बन जाती, जैसा कि ग्वाले के लडके ने कहा था।"

पादरी हँसा। "भूत प्रेत कुछ नही होता। ये सब वेवकूफी की बातें है। तुम खुश तो हो ?" उसने पूछा।

"मै खुश तो नही हूँ, लेकिन मेरे चित्त में शान्ति है। मेरे लिए यही काफी है। भगवान् और आप मेरी रक्षा के लिए कम नही है।"

"क्या तुम अपने पति के पास जाने को राजी हो ? मै उसे सब बातें बताकर मामला तय करा सकता हूँ," पादरी ने कहा।

"नही पिता, वह भोली लडकी खुश है, मै वहाँ क्यो जाऊँ ?"

"अगर तुम अपने पति के पास जाना नही चाहती, तो फिर बपतिस्मा लेकर हम लोगो मे मिलकर क्यो नही यहाँ रहती ?" बूढे पादरी ने पूछा।

"हनुमान जी नाराज होगे," लक्ष्मी बोली और हँस पडी।

## ६.

अगली दीवाली पर शान्ति देवी अपने थैले में एक पाकिट पटाखों का, एक डिब्बा मिठाइयो का और कुछ फूल रखकर मीनाक्षी के गाँव गई। मीनाक्षी की नन्ही लडकी घर के सामने गली मे खेलती हुई मिल गई।

"कमला, मै तेरे लिए पटाखे लाई हूँ," शान्ति देवी ने कहा। लडकी

ने पहचान लिया कि यह वही मौसी है जो छोटे भइया के होने मे मा की देखभाल करने आई थी। उसने पटाखे और मिठाइयाँ ले ली और अपने बालो में फूल लगवाने के लिए वह लक्ष्मी की ओर पीठ करके खडी हो गई। लक्ष्मी ने उसके बालो में फूल खोसकर उसे प्यार किया।

"यह नर्स तो बडी भली मालूम होती है," मीनाक्षी ने अपनी सास से कहा।

नटेश के घर आते ही पार्वती ने उससे कहा—"अस्पतालवाली नर्स आई थी। वह कमला को मिठाई और पटाखे दे गई और बिना किसी से मिले ही चली गई।"

---

बालों में फूल लगवाने के लिए लक्ष्मी की ओर पीठ करके खड़ी होगई

# देवयानी

रामनाथ अपनी पत्नी सीतालक्ष्मी के साथ कार मे बैठकर चीना बाज़ार गये । खरीदारी खतम करने के बाद दोनो ने पास के एक होटल में चाय पी और फिर वे कार में आ बैठे ।

"चलो, समुद्र-किनारे चले," रामनाथ ने कहा ।

"हाँ चलिये, लेकिन ड्राइवर से कह दीजिये कि कार ऐसी जगह रोके जहाँ भीड-भक्कड न हो । मुझे भीड अच्छी नही लगती । देखिये, फेरीवाला खिलौने बेच रहा है, बच्चो के लिए दो-चार खरीद लीजिये ।"

सीतालक्ष्मी की बात पूरी भी नही हो पाई थी कि खिलौनेवाला उसका मतलब भाँपकर कार के पास आ गया । खिलौने पसन्दकर वे कार मे ही बैठे-बैठे मोल-भाव कर रहे थे कि कार के दूसरे दरवाज़े की ओर एक युवती भिखारिन गोदी में एक छोटा-सा बच्चा लिये आई और बच्चे को आगे कर बोली—"बाबू जी, इस नन्हे बच्चे पर दया करो ।"

"ये सब जापानी खिलौने है न ?" रामनाथ ने खिलौनेवाले से पूछा ।

"जी हाँ, भला हमारे देश में ऐसी चीज बन सकती है ?" खिलौने-वाले ने उत्तर दिया ।

भिखारिन ने फिर गिडगिडाना शुरु किया।

"हम खिलौने खरीद रहे हैं और यह बला आकर हमारे पीछे पड गई। भीख माँगने का रोग दिन पर दिन बढता जा रहा है," सीता-लक्ष्मी बोली।

"बाबू जी, मै भूखी हूँ। बच्चे पर दया करो, भगवान् तुम्हारा भला करेगा।"

"जाती है या बुलाऊँ पुलिस को ?" सीतालक्ष्मी ने धमकाया।

"बच्चा दूध के लिए रो रहा है, मा जी ! एक इकन्नी दे दो, तुम्हारे लिए कोई बडी बात नही है।"

रामनाथ ने खरीदे हुए खिलौने कार के अन्दर रख लिये और शोफर से समुद्र-किनारे चलने को कहा।

शोफर ने भिखारिन से एक तरफ हटने के लिए कहकर कार चला दी।

भिखारिन दरवाजा पकडे थोडी दूर तक साथ-साथ दौडने की कोशिश करती रही और चिल्लाती रही—"बाबू जी, बाबू साहब।"

"हट, हट, नही तो दब जायगी," रामनाथ ने चिल्लाकर कहा। उस समय उन्हें भिखारिन को गौर से देखने का मौका मिला और ऐसा लगा मानो इसे कही देखा है।

जब कार तेजी से चल दी तो वह बोले—"बेचारी लडकी ! यह तो हमारे गाँव की दिखाई देती है।"

"कही से भी आई हो, हमें क्या ? ज़रा इस खिलौने को दिखाना, यह तो नई तरह का मालूम होता है। यह तो हवाई जहाज़ है ! क्या चाबी लगाने पर चलेगा ?" सीतालक्ष्मी ने पूछा और वह एक-एक खिलौना उठाकर देखने लगी।

भिखारिन को गौर से देखने का मौक़ा मिला

## २.

सेलम ज़िले के पोन्नम्मापेट नाम के कस्बे मे पेरियन्न मुदलि गली में जुलाहे का एक गरीब परिवार रहता था। वैयापुरी तीस वर्ष का था और उसकी क्वारी बहिन देवयानी बीस वर्ष की। उनकी मा का नाम पलनि था। वे करघे पर कपडा बुनकर अपनी जीविका चलाते थे और यही उनका ख़ानदानी पेशा था। वे तीनो आदमी सारे दिन मेहनत करके हफ्ते मे कुल मिलाकर चार रुपये कमा पाते थे।

धीरे-धीरे करघे का काम ठढा पडता गया और साथ ही साथ मज़दूरी भी कम होती गई। कुछ दिनो बाद बहुतो को इतनी भी मज़दूरी मिलनी बद हो गई। सेलम में वैयापुरी के अलावा बहुत-से और लोगो के करघे भी बद हो गये। देवयानी को दो ब्राह्मण अफसरो के घर मकान के सामने के हिस्से को झाडने बुहारने और पानी-गोबर से लीपने का काम मिल गया। उसे और भी छोटे-छोटे काम करने पडते थे और इनके लिए तीन रुपया महीना मिलता था। उसकी मा एक दूसरे घर मे यही झाडने-बुहारने का काम करके एक रुपया महीना पाती थी। वैयापुरी कपडे के व्यापारियो के पास काम की तलाश में चक्कर काटता फिरा, लेकिन उसे कोई काम नही मिल सका। निराश होकर वह बिना अपनी मा से कहे-सुने बग्लूर चला गया। कुछ दूसरे जुलाहे भी वहाँ की बडी मिलो में काम मिलने की आशा से उसके साथ-साथ गये।

कुछ दिनो तक मारे-मारे फिरने के बाद वैयापुरी ने लिखा कि मुझे एक मिल मे नौकरी मिल गई है। वह कुछ लिखना-पढना जानता था क्योंकि जब वह छोटा था तो उसके बाप ने उसे पोन्नम्मापेट के म्युनिसि-

पल स्कूल मे भरती कर दिया था। उन दिनो जुलाहो की दशा इतनी दयनीय नही थी।

"बहुत-से लोगो की जेब भरने के बाद मुझे एक मिल मे जगह मिल गई है। रोज आठ आने मिलते है और एक महीने मे छब्बीस दिन काम होता है। इसलिए मुझे एक महीने मे तेरह रुपये मिला करेगे। खाने-पीने का खर्च निकालकर और कुछ कर्ज चुकाने के बाद मै दो रुपये बचाकर हर महीने तुम्हारे पास भेजा करूँगा। बाकी के लिए भगवान् मालिक है," वैयापुरी ने अपने पत्र मे लिखा, जिसे एक पडोसी के लडके ने पढकर उसकी मा और बहिन को समझाया। बूढी मा और देवयानी बडी प्रसन्न हुई।

दस दिन बाद दूसरा पत्र आया। उसमे लिखा था—"मा को मेरा प्रणाम! भगवान् की दया से मै यहाँ पर कुशलपूर्वक हूँ। उम्मीद है तुम और देवयानी भी अच्छी तरह होगी। मिल का काम मुझे बिलकुल अच्छा नही लगता। जब मुझे याद आता है कि अपने घर मे करघे पर काम कर मै कैसे सुख से दिन बिताया करता था तो मुझे रोना आ जाता है। मुझे ऐसा लगता है कि मै यहाँ पागल हो जाऊँगा। मेरा सिर चकरा रहा है और मुझे यहाँ इतना दुःख और रज है कि क्या कहूँ। मुझे ताज्जुब होता है कि मै सेलम से क्यो चला आया। पडोस में रहनेवाले लडके से लिखवाकर चिट्ठी भेजने की कोशिश करना। पता यह है–सेलम पोन्नम्मापेट वैयापुरी कुली लाइन, मल्लेश्वर।"

३.

जिन दो घरो में देवयानी झाड़ने और पानी छिडकने का काम करती थी उनमें से एक घर एक सरकारी पेन्शनर का था। उसकी पत्नी बडी नेक और दयालु थी। देवयानी से काम तो वह कसकर लेती थी, लेकिन

और वातो मे उसके प्रति दया दिखलाती थी। उसने देवयानी को एक पुरानी साडी दे दी थी और घर में खाने के वाद जो दाल-चावल वचता था वह भी उसे मिल जाता था। कुछ दिन इसी तरह बीत गये, लेकिन शायद भगवान् से उसका इतना सुख भी नही देखा गया। घर का रसोइया /जो उसे वचा हुआ खाना दिया करता था, उससे प्रेम जताने लगा। एक दिन उसने उससे वहुत वुरी तरह छेडखानी की।

देवयानी की आँखो मे खून उतर आया, लेकिन शर्म के मारे उसने किसी से कुछ कहा नही। "किसी से कहना मत, मै हर महीने तुझे दो रुपये दिया करूँगा," बदमाश ने कहा।

अपना रंज रोककर देवयानी घर गई और मा से बोली—"अम्मा मै उस नीम के पेडवाले मकान में अव काम नही करूँगी।'

जव मा ने इसका कारण पूछा तो शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया। उसने सारी वाते वता दी, जिस पर उसकी बूढी मा यह कहती हुई उठी—"मै घर की मालकिन से अभी जाकर सव वाते कहती हूँ।"

"जाने दो अम्मा! क्या फायदा इससे? मुझे वहाँ अव काम तो करना नही है," देवयानी ने उससे कहा।

मा-वेटी ने दूसरी जगह काम ढूँढना शुरू किया, लेकिन वे जहाँ भी जाती वही मालूम होता कि कोई पहले से ही लगा हुआ है। दो महीने तक इसी तरह टक्करें खाने के वाद उन्हे काम मिला।

छ महीने वीत गये। जिस मिल मे वैशपुरी काम करता था, उसमें मज़दूरो ने हडताल कर दी। वहाँ के अँगरेज़ मैनेजर ने एक मिस्त्री को पीट दिया था और वाद मे उसे और कुछ दूसरे मज़दूरो को नौकरी मे अलग कर दिया था। मजदूरो ने एक सभा की और महीने पर

तनख्वाह लेने के बाद काम बन्द कर दिया। वैयापुरी को भी हडताल मे साथ देना पडा।

हडताल एक महीने तक रही। मजदूरो ने सभाएँ की और शुरू-शुरू में तो वडा उत्साह दिखाई दिया, लेकिन जब गाँठ का रुपया खर्च हो लिया तो जोश ठढा पड गया। अन्त में समझौता हुआ और मजदूर फिर काम करने लगे। एक हफ्ते बाद दरवाजे पर एक नोटिस छिपका हुआ मिला। उसमे पच्चीस आदमियो के नाम थे, जो नौकरी से हटा दिये गये थे और जिन्हे मिल के इलाके में कदम न रखने की आज्ञा दी गई थी। उनमें वैयापुरी भी एक था।

"मै विलकुल बेकसूर हूँ। मै तो नया आदमी हूँ, मेरा इन बातो से क्या वास्ता ?" वैयापुरी ने मिस्त्री से शिकायत करते हुए कहा।

"मैनेजर का यही हुक्म है। यह काम उस बदमाश टाइमकीपर रगस्वामी नायक का है। उसी ने दूसरो के साथ तुम्हारा नाम भी भेजा था। मै इस मामले मे कुछ नही कर सकता," मिस्त्री ने जवाब दिया।

वैयापुरी ने रगस्वामी नायक के पास जाकर हाथ जोडे, लेकिन उसने कहा—"मै कुछ नही जानता। यह खजानेवाले क्लर्क का काम है।" मतलब यह कि किसी ने वैयापुरी की सहायता नही की और अन्त में मैनेजर ने कहा—"तुम लिखना-पढना जानते हो, तुमने ही दूसरो को भडकाया होगा, मै तुम्हे वापस नही ले सकता।"

बहुत दिनो तक ठोकरें खाने और पास की कौडी-कौडी खर्च कर चुकने के बाद वैयापुरी बडी कठिनाई से मद्रास पहुँचा। नौकरी से अलग किये गये पच्चीस आदमियो में से भी दस आदमी उसके साथ-साथ नौकरी की तलाश में मद्रास गए। उनके पास जितना भी रुपया था उन्होने एक जगह इकट्ठा कर लिया और उसी से गुजारा करते हुए

वे नौकरी के लिए एक मिल से दूसरी मिल में गिडगिडाते फिरे। कुछ दिनो बाद वैयापुरी को एक मिल में काम मिल गया।

ड्योढीवान और मिल के दूसरे छोटे-छोटे अफसरो की मुट्ठी गरम करने के लिए वैयापुरी को पाँच रुपयो की जरूरत थी। इसके लिए और खाने-पीने मे जो कर्ज हो गया था उसे चुकाने के लिए उसने अपनी सोने की मुरकियाँ गिरवी रखकर रुपये उधार लिये। अपने दु ख को भुलाये रखने के लिए उसने थोडा नशा करना भी शुरू कर दिया, गोकि सेलम मे रहते हुए उसने कभी शराब छुई भी नही थी। कुछ मित्रो के यह सुझाने पर कि जुए से काफी रुपया कमाया जा सकता है वह जुआ भी खेलने लगा। खाने और कोठरी का किराया देने के बाद उसके पास जो कुछ बचता उसे वह घर न भेजकर इन बातो मे खर्च करने लगा। स्वभावत: पठान से लिया हुआ कर्ज बढता गया और इन परेशानियो को भूलने के लिए वह ज्यादा नशा करने लगा।

पहले तो उसने घर रुपये न भेज सकने के लिए बहाने लिख-लिखकर भेजे। बाद मे उसने लिखा कि अब मै घर रुपये नही भेज सकता, अगर देवयानी चाहे तो मद्रास आकर किसी मिल मे नौकरी कर ले। इस पत्र को सुनकर देवयानी और पलनि का दिल टूट गया।

बहुत दिनो तक सब्र के साथ दु:ख और परेशानी उठाते-उठाते एक दिन देवयानी बोली—"मा, मै मद्रास क्यो न चली जाऊँ? मै काम करूँगी और वैयापुरी की तरह रुपये कमाकर कुछ तुम्हे भेजने की कोशिश करूँगी। मैने सुना है कि मद्रास की मिलो में बहुत-सी औरते काम करती है।"

पहले तो मा इस बात के लिए राजी नही हुई और कुछ दिनो तक कहती रही कि ऐसी बात कैसे हो सकती है, जवान और अकेली

औरतें किस तरह ऐसी जगह काम करने के लिए जा सकती है, लेकिन आखिरकार वह मान गई। देवयानी ने एक पडोसी के यहाँ अपने सोने के बुदे गिरवी रख दिये और उससे बारह रुपये उधार लेकर वह मद्रास के लिए चल दी।

## ४.

वैयापुरी ने देवयानी को मद्रास की एक मिल मे सूत कातने के विभाग मे नौकरी दिलवा दी। उसमे डेढ सौ औरतें काम करती थी, जिनमे से बहुत-सी अवस्था मे देवयानी से भी छोटी थी। देवयानी और दस दूसरी औरतो को एक मेठ के नीचे काम करना पडता था। शुरू-शुरू में उसने देवयानी के साथ बडी दयालुता दिखलाई। लेकिन कुछ ही दिनो बाद वह उसे डाँटने-डपटने लगा और फिर उससे बडी आज़ादी से बातचीत करने लगा, खास तौर से जब वह अकेली मिल जाती।

देवयानी ने अपने साथ काम करनेवाली एक स्त्री से पूछा—"इसका क्या मतलब, बहिन! यह मुझसे इस तरह की बातें क्यो करता है?"

"तुम इतना भी नही समझी? गाँव की हो न! अगर तुम उसे खुश नही करोगी तो तुम्हारी आधी मजदूरी जुरमानो मे कट जायगी और अगर वह खुश रहेगा तो तुम्हें बहुत तरह के आराम देगा," उस औरत ने हँसते हुए कहा।

कुछ दिनो तक देवयानी यह सब सहती रही। धीरे-धीरे उसका परमेश्वर पर से विश्वास उठने लगा और उसने मेठ का विरोध करना छोड दिया। उसने अपना मस्तिष्क परिस्थिति के अनुकूल बना लिया और वह उससे घुलमिलकर बाते करने लगी। जल्दी ही उसे इन बातो मे आनन्द आने लगा और उसकी मज़दूरी बढ गई।

कुछ महीने बीतने पर देवयानी को पता चला कि मै मा बनने

वाली हूँ। वह बडी डरी और जितने भी देवी-देवताओ के नाम जानती थी उन सब की प्रार्थना करने लगी। "हाय, अब मैं किससे कहूँ ?" उसने मन ही मन में सोचा। उसका चित्त बडा उद्विग्न हुआ और वह भय के मारे थर्रा उठी, ठीक वैसे ही जैसे जगल मे शिकारियो से पीछा किये जाने पर हिरनी काँपने लगती है। उसे अपने भाई वैयापुरी से कहते हुए डर लगता था। साथ में काम करनेवाली कुछ लडकियो को इस बात की खबर थी, लेकिन वे उसका मज़ाक उडाया करती थीं और हँसती थी। उसने सोचा कि गाँव चली जाऊँ, लेकिन वह जानती थी कि वहाँ जाने पर अपमान होगा और मैं विरादरी से निकाल दी जाऊँगी। अपनी मा का ध्यान आते ही उसने वहाँ का विचार बिलकुल छोड दिया। अन्त में उसने अपने को भगवान् के ऊपर छोड दिया और वह मिल मे काम करती रही।

लेकिन जल्दी ही उसे फिर वडी घवराहट होने लगी—"हाय, अब मैं क्या करूँगी ? मैंने अपने कुल को कलक लगा दिया।"

"घवरा मत, देवयानी! ऐसा तो हम सवको होता है। इसके लिए एक दवा होती है जिसके पीने से तेरी सारी चिन्ता दूर हो जायगी," उसकी एक सहेली ने तसल्ली देते हुए कहा।

"मैंने उसके वारे मे सुना तो है, लेकिन मुझे डर लगता है कि कहीं मर न जाऊँ। हे भगवान्, मैं कहाँ जाकर अपना पाप छिपाऊँ ?" देवयानी रोकर बोली।

उसकी सहेली ने कहा—"कही से दो रुपये ले आ। मुत्तुस्वामी आचारी गली में एक औरत रहती है, वह तू जो चाहती है कर देगी।"

"अगर पुलिस को खबर हो गई तो वह मुझे ज़रूर पकड लेगी।"

"इसकी फिक्र मत कर, पुलिसवालो से उसका बडा मेलजोल है।

तुझे मालूम होना चाहिए कि रुपये से सब कुछ हो सकता है।"

"रुपये के लिए मैं किसके पास जाऊँ ? हे भगवान्, तूने तो मुझे छोड ही दिया। मै इस कमबख्त शहर मे आई ही क्यो ?" यह कहकर देवयानी रोने लगी।

कुछ दिन बाद एक दूसरी औरत ने उसे दूसरी सलाह दी—"तुझे अपने बच्चे को मारना नही चाहिए। इस पाप का फल तुझे तीन जन्म तक भोगना पडेगा। गणेश मदिरवाली गली मे एक बुढिया रहती है। वह बडी नेक औरत है। अगर तू उसके पास चली जायगी, तो वह सारी बातो की देखभाल कर लेगी। तेरी तरह बहुत-सी औरते उसके घर ठहर चुकी है और सही सलामत निबट आई है।"

देवयानी ने उसे धन्यवाद दिया और कहा—"भगवान् तुम्हे सुखी रखे, बहिन।" वह गणेश मदिरवाली गली मे, उस उदार बुढ़िया के पास चली गई। समय पर प्रसव हुआ और बच्चे के कोमल स्पर्श ने देवयानी की दुनिया ही बदल दी। उसे ऐसा मालूम हुआ मानो किसी ने जादू कर दिया है। उस बच्चे मे उसका सारा ससार समा गया।

वह अपने बच्चे को उठाती और छाती से लगाकर कहती—"यह फूल मुझे भगवान् ने दिया है। इसका क्या दोष है, पापिन तो मै हूँ।" सब दु:खो को भूलकर वह कुछ दिनो तक सुख से रही।

"तुम अभी काम पर जाने लायक नही हो। तुम्हें अभी कुछ दिन तक यहाँ और ठहरना होगा," गणेश मदिरवाली गली की उदार स्त्री बोली।

देवयानी ने भगवान् को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और मन मे सोचा—"जिस दुनिया मे ऐसे अच्छे आदमी मौजूद है, उसे गालियाँ देना मेरे लिए कितना गलत था!"

एक महीने बाद देवयानी को असली बात का पता चला। वह बूढी औरत उन असहाय अभागिनो से, जो धोखेबाज़ मर्दों के चगुल मे फँस जाती थी, दुष्कर्म कराया करती थी। देवयानी फँस गई और मिल में फिर से काम करने नही गई।

५.

"क्या तुम्हे उस लडकी देवयानी की याद है जो सेलम मे हमारे घर काम करती थी? वह भिखारिन उसी-जैसी दिखाई पडती थी" रामनाथ ने कहा।

रामनाथ सेलम के उस पेन्शनर के सब से बडे लडके थे जिसके घर जाकर देवयानी ने पहले-पहल काम किया था। वह मद्रास के एक बडे बैंक में खज़ाची थे।

"आप तो सपना देख रहे है, भला सेलम की लडकी यहाँ कैसे आ सकती है?" सीतालक्ष्मी बोली।

"यह बडे शर्म की बात है कि ऐसी लडकियाँ भीख माँगने के लिए तुरन्त के हुए बच्चो को गोद मे लिये सडको पर फिरती है। हमारे देश की कैसी दशा हो गई है?" रामनाथ ने कहा।

"आप हमेशा देश की ही बात सोचते रहते है। क्या अपने घरबार की ही फिक्र कर लेनी काफी नही है?" उनकी पत्नी ने पूछा।

रामनाथ दूसरे दिन शाम तक भी उस भिखारिन को भूल न सके। वह दफ्तर से सीधे चीना बाज़ार चले गये, इस उम्मीद में कि अगर वह फिर मिल जाय तो उसकी बात पूछूँ। रामनाथ बाज़ार में एक कोने से दूसरे कोने तक कार लेकर गये और उस दिनवाले होटल के सामने रुक-कर कुछ देर प्रतीक्षा करते रहे। बहुत-से भिखारी आये और उन्हें घेर कर "बाबू साहब, बाबू जी" चिल्लाते रहे, लेकिन वह नही आई।

शनिवार की शाम को रामनाथ और उनकी पत्नी फिर चींना बाजार पहुँचे।

"देखिये, वह रही आपकी भिखारिन," सीतालक्ष्मी ने कहा।

हाँ, वही भिखारिन थी। अपने बच्चे को लिये हुए वह किसी की कार के पास जा रही थी और कह रही थी—"मा जी, एक इकन्नी दे दो, इस बच्चे का खयाल करो।"

उसने रामनाथ की कार और उसमें बैठे हुए आदमियो को देख लिया था, लेकिन वह उसे छोडकर दूसरी कार के पास चली गई थी क्योकि वह जानती थी कि इनसे मुझे कुछ नही मिलेगा। भिखारी लोग अपने अनुभवो से ही निर्णय करना सीख लेते है। चतुराई और समझ की गुजाइश तो हर काम मे होती है।

रामनाथ को इतना साहस नही हुआ कि वह स्वय जाकर भिखारिन को पुकारे। कुछ देर तक वह इस प्रतीक्षा मे रहे कि शायद वह बाद मे हमारी कार के पास आवे। लेकिन वह भीड में गायब हो गई और फिर दिखाई नही दी।

"अब चलिये," सीतालक्ष्मी ने कहा।

आठ दिन बाद रामनाथ और सीतालक्ष्मी सिनेमा देखने गये। कहानी वही पुरानी राजा नल की थी। दरवाज़े के सामने बहुत भीड थी। दमयन्ती का काम नई स्टार धनभाग्य कर रही थी।

"सारी सीटें भर गईं। अब एक भी जगह नही रही।" तख्ती पर यह लिखा हुआ देखकर रामनाथ ने कहा—

"तो चलो, घर चलें, दूसरे शो में आ जायँगे,"

सीतालक्ष्मी के उत्तर देने से पहले ही कोई कार के दरवाज़े के पास आकर चिल्लाया—"मा जी, कुछ भिक्षा मिले।"

रामनाथ यह देखने को मुडे कि मेलमवाली लडकी तो नही है। उन्ह उसके लिए एक वैराग-सा हो गया था, लेकिन वह कोई दूसरी भिखारिन थी।

"अगर हम यहाँ कार रोके रखेगे तो भिखारी हमे तग करेगे। राम नायर, कार जल्दी से घर ले चलो," सीतालक्ष्मी ने शोफर से कहा।

उसी समय एक पुलिसवाले ने आकर अपना डडा घुमाया और भिखारिन को भगा दिया।

उस रात रामनाथ ने भिखारिन को देखा, लेकिन स्वप्न मे।

"तुम देवयानी हो ? कहाँ से आई हो ?" रामनाथ ने पूछा।

औरत ने उन्हे आँखे फाडकर देखा और खुश होकर पूछा—"आप सेलमवाले बाबू जी के लडके हैं न, जो नीम के पेडवाले मकान मे रहते थे ?"

"नायर, उससे कहो सामनेवाली गद्दी पर बैठ जाय," उन्होने ड्राइवर से कहा। घर पहुँचने पर उनकी पत्नी बोली—"इस कमबख्त को यहाँ क्यो ले आये ?"

"हम इसे अपने यहाँ नौकर क्यो न रख ले ? चार रुपये महीना और खाना दे दिया करेंगे," वह बोले।

"क्या ही अच्छा खयाल है आपका ! पतित स्त्रियो को घर मे रखना भी क्या कोई बुद्धिमानी की बात है ? निकल यहाँ से," सीता-लक्ष्मी ने कहा और भिखारिन को बाहर निकाल दिया।

"मै चोरी नही करूँगी और आप जो हुक्म देगी वही करूँगी," उस दुःखी स्त्री ने गिडगिडाते हुए कहा।

"यह कभी नही हो सकता, निकल जा मेरे घर से," सीतालक्ष्मी ने जवाब दिया।

रामनाथ ने उसे एक रुपया देने के लिए बटुआ निकालने को जेब में हाथ डालना चाहा, लेकिन न तो वह अपना हाथ हिला सके, न उनका हाथ बटुए तक पहुँच ही सका। भिखारिन का बच्चा जोर-ज़ोर से रोने लगा।

'रामनाथ की नीद टूट गई। यह सब सपना था, उनकी अपनी लडकी राधा पलग पर बैठी-बैठी रो रही थी।

"भगवान् को धन्यवाद है, सीतालक्ष्मी इतनी निष्ठुर नही हो सकती थी, यह केवल सपना था।" अपने मन मे यह सोचकर रामनाथ प्रसन्न हुए।

इसके बाद बहुत दिनो तक रामनाथ देवयानी को बाज़ार मे, रेलवे स्टेशन पर, सिनेमा मे, हर जगह खोजते रहे, लेकिन वह उन्हे फिर दिखाई नही दी।

# चुनाव

कोट्टूर ज़िले के इसी नाम के सब से बडे कस्बे मे हरिजनो का एक मोहल्ला है जो पहले कट्टाचेरी कहलाता था लेकिन अब पिछले चार वर्ष से जेम्सपेट कहलाने लगा है। उसी मोहल्ले मे सीरग नाम का एक हरिजन रहता था। वहाँ के करीब तीस अछूतो मे अकेला वही ऐसा था जो अपना पेट अच्छी तरह पाल लेता था। जेम्सपेट के निवासी अधिकतर कुली थे जो सोनाई पहाड के बगीचो मे रोज की मजदूरी पर काम कर अपनी जीविका चलाते थे। सीरग कुलीगीरी नही करता था, वह कोट्टूर और पास के दूसरे बाजारो से चीजे खरीदकर लाता था और चाय और कॉफी के बगीचो के यूरोपियन मालिको के यहाँ थोडे-से मुनाफे पर बेच देता था। इस तरह वह अच्छी खास। रकम पैदा कर लेता था। पहाड के सभी स्त्री-पुरुष उससे दयालुतापूर्वक व्यवहार करते थे और उस पर विश्वास करते थे।

ठेकेदार सीरग की ईमानदारी और अच्छी आदतो की खबर कोट्टूर के कलक्टर को भी मिल चुकी थी। जब म्युनिसिपल बोर्ड मे हरिजन मेम्बर की जगह खाली हुई तो पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट, ज़िला के मेडिकल अफसर और लन्दन मिशन के पादरी ने अँगरेजी क्लब के खानसामा स्वामिप्रिय को उस जगह पर नामज़द करने के लिए कलक्टर पर जोर डाला, लेकिन कलक्टर की पत्नी ने इस प्रस्ताव का विरोध किया और कहा कि पहाड पर रहनेवाली सब अँगरेज़ औरते सीरग

ठेकेदार के पक्ष मे है, इसलिए इस जगह पर उसी को नियुक्त करना चाहिए। स्वभावत वह अपने पति को यह समझाने में सफल हो सकी कि जो कुछ मै कह रही हूँ वही ठीक है।

"आप लोग नही समझते कि अगर हम क्लब के चपरासी को नामजद करेंगे तो शहर के देशभक्त इसके विरुद्ध आन्दोलन करेंगे और उपद्रव उठायँगे। हमे होशियारी से काम करना चाहिए," कलक्टर ने दूसरे अफसरो को समझाते हुए कहा और इस प्रकार उनकी आपत्तियो का समाधान करते हुए सीरग का नाम पेशकर उसे नामजद करा दिया।

सीरग की समृद्धि उसी समय से कम होने लगी। अब वह बडा आदमी बन गया था। कलक्टर और बडे-बडे अफसर उससे हाथ मिलाते और बातचीत करते थे। अब उसने अपने कारबार की ठीक तरह से देखभाल करनी छोड दी थी। चीज़े खरीदने के लिए ख़ुद न जाकर वह अब अपने भतीजे वरद को भेजता था। पहाडी पर वह दिन मे केवल एक बार जाता था और अपने बदले ज्यादातर भतीजे को ही भेज देता था। उसे वह अपने मुनाफे में से हिस्सा देता था।

जैसे-जैसे सीरग का ध्यान अपने व्यापार की ओर से कम होता गया वैसे-वैसे मुनाफा भी कम होता गया। उसे अब अपने परिवार के खर्च के लिए रुपया नही बचता था, इसलिए वह बागवानो की पत्नियो से पेशगी मिला हुआ रुपया खर्च करने लगा। यह सोचकर कि यह हमारा पुराना और ईमानदार ग्राहक है और अब म्युनिसिपल कौंसिलर के पद पर है, दूकानदार उसे उधार दे देते थे। लेकिन अब सीरग को औरतो को हिसाब देते समय कुछ झूठ बोलना पडता था। व्यापार मे जब कोई बेईमानी करने लगता है, चाहे वह कम हो या ज्यादा, तो उससे जल्दी ही उलझने पैदा होने लगती है और

अन्त मे व्यापारी सदा के लिए नष्ट हो जाता है। यही बात सीरग के साथ हुई। उसने पहले जो मान पाया था उसे अब वह खो बैठा। पहले लोग—कुछ तो हँसी मे और कुछ गम्भीरता के साथ—कहा करते थे कि सीरग सब से ज्यादा ईमानदार कौसिलर है, लेकिन अब उनका यह कहना भी बन्द हो गया।

## २.

म्युनिसिपेलिटी के चेयरमैन गोपाल चेट्टियार की एकाएक मृत्यु हो गई और उनकी जगह दूसरे आदमी के चुनाव के लिए तैयारियाँ होने लगी। एक ओर तो सूत के बडे व्यापारी धनपाल चेट्टियार खडे हुए और दूसरी ओर वकील रामस्वामी मुदलियार उनके विरोध मे उठे। एक महीने तक बाजार में और वकीलो के बीच बस इसी चुनाव की चर्चा रही।

रायो के लिए दौडधूप शुरू हुई। चुनाव की तारीख निश्चित होने से चार दिन पहले सुनाई पडा कि रुपया पानी की तरह बहाया जा रहा है। कुछ ने कहा कि चेट्टियार ने हर मेम्बर के वोट के लिए एक-एक दो-दो हजार रुपये लगाये है। यह बात कुछ अशो में ठीक थी और कुछ अशो मे गलत भी। रामस्वामी मुदलियार ने बिलकुल साफ तौर पर कह दिया कि मै इस तरह की चाले नही चलूँगा। इससे उनके मित्रो का उत्साह ठढा पडा गया। उनकी सलाह न मानकर मुदलियार अपने इरादे पर दृढतापूर्वक जमे रहे।

चुनाव सोमवार की सुबह आठ बजे होनेवाला था। एक दिन पहले, इतवार की रात को आठ बजे मुदलियार के गाढे मित्र उनके घर पर जमा हुए।

"ठीक है, तुम्हारा तो कुछ नही बिगडेगा, लेकिन हम लोगो की नाक कट जायगी," मूँगनी के व्यापारी रग पिल्लै ने कहा।

"इस हार के बाद हम कोट्टूर मे नही रह सकते, हमे कही और चला जाना पडेगा," सीतारामैयर दूकानदार बोले।

मुदलियार ने कोई जवाब नही दिया।

सीतारामैयर ने फिर कहा—"तो इसका मतलब यह है कि यह आदमी पब्लिक को बेईमान बनाता और म्युनिसिपेलिटी को बरबाद करता रहे और हम खडे-खडे तमाशा देखते रहे।"

"आजकल की बेईमानी को हम कहाँ तक रोक सकते है? पहले के चेयरमैन बडे इज्जतवाले होते थे। आजकल तो ईमानदार आदमियो को कही कोई मौका ही नही है," मुदलियार ने कहा।

"मुदलियार साहब! ज़हर को ज़हर ही मारता है। आपको इस मामले मे ज़्यादा दिलचस्पी लेनी चाहिए। इस तरह की उदासीनता से काम नही चलेगा," वैद्य राघवाचारी बोले।

दो मिनिट बाद घडी ने नौ बजाये। "देखिये, घडी भी हमे अच्छा शकुन बता रही है, अब हमें वक्त बरबाद नही करना चाहिए?" यह कहते हुए सीतारामैयर खड़े हो गये और मुदलियार के कधे पर हाथ रख-कर उन्हे बडी मोहब्बत के साथ उनके दफ्तर मे ले गये।

एक घटे तक दोनो ने एकान्त मे बातचीत की। तब सीतारामैयर मुसकराते हुए बाहर आये और सभा को सम्बोधित करते हुए बोले—"सब कुछ ठीक है। काम पूरा हो गया। अब आप लोग जो कुछ जरूरी समझें करे। सब कुछ एक रात मे ही करना है।" यह समाचार सुन सब खुशी से खिल उठे।

## ३.

सारी रात मोटरे दौड़ती रही। दो बजे मुदलियार के घर ख़बर पहुँची कि पैतीस मेम्बरो में से सत्तरह उन्हे राय देने के लिए पक्के हो

गये है। इनमे से दस ने तो चेट्टियार के भेजे हुए रुपये लौटा दिये है और सात ने कहा है कि हम किसी ओर से भी रुपया नही लेगे लेकिन मुदलियार को अपनी राय अवश्य देंगे। बस एक राय और पक्की करनी रह गई थी। बाकी अठारह कौसिलरो में से एक किसी काम से नागपट्टन गया हुआ था और वह दूसरे दिन तक वापस नही लौट सकता था। सोलह रायें धनपाल चेट्टियार की पक्की थी, उनमे से एक भी नही तोडी जा सकती थी। केवल सीरग की राय बची थी और वह अनिश्चित थी।

चारो ओर ढूँढने पर भी अभी तक सीरग का पता नही लगा था। मालूम हुआ कि वह पहाडी पर गया है।

"उसके छोटे भाई मास्टर मुनिस्वामी से भी पूछा ?" सूँघनी के व्यापारी रग पिल्लै ने कहा।

"हाँ, हम उसके पास गये थे। वह कभी कुछ कहता है, कभी कुछ। पहले उसने कहा कि शायद सीरग पहाडी पर गया है, फिर बोला कि घर में ही कही छिपा है। परेशानी की इन बातो में भला गरीब आदमी अपने को क्यो फँसायें ? उन्हे तो चतुराई से काम करना होता है। अगर वे एक के भले बनेंगे तो दूसरा उनसे बिगड जायगा।"

"ऐसा मालूम होता है कि एडी-चोटी का पसीना एक करने पर भी नतीजा कुछ नही निकलेगा," सीतारामैयर बोले।

"निराश होने से क्या फायदा ?" यह कहते हुए रग पिल्लै गुस्से में उठकर खडे हो गये।

"तो तुम खुद ही क्यो नही कोशिश करके देखते ?" सीतारामैयर ने ताना मारते हुए कहा।

"हम गरीबो का कौन विश्वास करेगा ? हम अमीर थोड़े ही है," रग पल्लै ने उत्तर दिया।

"मुदलियार ! सब कुछ रग पिल्लै को ही करने दो, अब मै कुछ नही करूँगा, मेरा अब इस मामले से कोई वास्ता नही," सीतारामैयर ने कहा।

"यह झगडने का वक्त नही है," वीरराघव चेट्टियार ने कहा और सीतारामैयर को, जो उठकर खड़े हो गये थे, पकड़कर फिर उनकी जगह पर बैठा दिया। फिर वह मुदलियार के पास जाकर बोले—"हमे तो इस काम मे हाथ ही नही डालना चाहिए था, लेकिन जब हमने एक बार काम उठा लिया है तो उसे कामयाबी के साथ पूरा करना चाहिए। हम जो कुछ चेष्टा करके पा रहे है उसे क्या मुँह से बोलकर खो दे ? सीरग का मामला रग पिल्लै के सिपुर्द कर दो, आगे भगवान् मालिक। हम जरूर जीतेगे।"

मुदलियार भी उस समय जोश मे थे। वह अन्दर गये। बक्स के खुलने और बन्द होने की आवाज आई। मुदलियार हाथ मे एक थैली लिये हुए बाहर निकले और रग पिल्लै को साथ लेकर दूसरे कमरे मे चले गये।

## ४.

सूँघनी के व्यापारी रग पिल्लै जेम्सपेट पहुँचकर मुनिस्वामी से मिले। उन्होने बिना कुछ कहे-सुने कागज के पाँच बडलो मे लपेटे हुए चाँदी के सौ रुपये उसके हाथ पर रख दिये। मुनिस्वामी ने अपने जीवन में, कभी सपने तक मे भी, इतने-सारे चाँदी के रुपये एक साथ नही छुए थे। वह रग पिल्लै की ओर टकटकी बाँधकर देखता रहा। उसकी आँखो मे पागलपन की-सी झलक थी।

रग पिल्लै ने कहा—"बहुत-से आदमियो ने तुम्हे बुरा-भला कहा होगा। इन दिनो गरीबो की मदद कौन करता है और कौन उन पर

विश्वास करता है ? यह तो गरीब ही जानते है कि उन्हे कैसी-कैसी मुश्किलो का सामना करना पडता है। भाई ! ये रुपये तुम्हारे हो चुके, हम जीते, चाहे हारे। मुझे सच-सच बता दो कि सीरग कहाँ है ?"

"मै आपसे झूठ नही बोलूँगा। सीरग को धनपाल चेट्टियार ने अपने अस्तबल मे ताले मे बन्द कर रखा है और कडा पहरा लगा रखा है। आपको शायद पता नही कि उसने चेट्टियार से डेढ सौ रुपये उधार ले रखे है। वे कल उसे अपने साथ म्युनिसिपेलिटी के दफ्तर ले जायँगे," अध्यापक मुनिस्वामी ने बताया।

"अच्छा, मुनिस्वामी सुनो, इस मामले मे जैसा मै कहूँ वैसा करो। रुपये का कोई खयाल नही," रग पिल्लै ने कहा।

थोडी देर तक वे कानाफूसी करते रहे। तब यह कहते हुए कि जरा ठहरिये, मुनिस्वामी घर के भीतर चला गया।

कुछ समय तक सीरग की मा से बातचीत करने के बाद वह बाहर आया और चेरी मारिअम्मा मन्दिर के सामनेवाली पत्थर की बेंच पर रग पिल्लै को बैठाकर और स्वय उनकी गाडी पर चढकर धनपाल चेट्टियार के मकान की ओर चल दिया।

धनपाल चेट्टियार अपने घर की बरसाती मे अपने मित्रो के साथ बेंच पर बैठे हुए थे। लालटेन की रोशनी मे वह पेंसिल से कुछ लिख रहे थे। मुनिस्वामी गाडी से उतरकर चेट्टियार के पैरो में गिर पडा और बोला—"मालिक, इस वक्त आकर मैने आपके काम मे जो रुकावट डाली है उसके लिए माफ कीजिये। सीरग की मा मर रही है, कह नही सकता कि वापस लौटने पर जिन्दा मिलेगी या नही। आप सीरग को भेज दीजिये, वह अपनी मा से मिल आय।"

'एकाएक उस बुढिया को क्या हो गया ? यह सब गडबडघोटाला

है। मालूम होता है मुदलियार ने तुम्हे यहाँ भेजा है," धनपाल चेट्टियार ने कहा।

"भगवान् जनता है, मालिक! झूठ बोलकर हम बच थोडे ही सकते है। बुढिया को सचमुच दस्त आ रहे है, वह बचेगी नही। उसे कल से बीस दस्त आ चुके है और वह बेहोश पडी है। मै हाथ जोडना हूँ, किसी तरह मेरे भाई को भेज दीजिये नही तो हमारी मा की आत्मा तडपती रह जायगी," यह कहकर वह बडे करुणाजनक ढग से रोने लगा।

"अच्छी बात है। श्रीनिवासैयर, तुम सीरग के साथ जाओ और देखकर आओ कि बात क्या है," चेट्टियार ने अपने क्लर्क से कहा।

"इसमे कोई चाल है। चेट्टियार तो सब पर विश्वास कर लेते है।" किसी ने कहा।

क्लर्क श्रीनिवासैयर अन्दर गया और सीरग को अस्तबल से निकालकर पीछे के रास्ते गाडी के पास ले गया। मुनिस्वामी भी वही पहुँच गया।

"तुम सोच क्या रहे हो? गाडी मे बैठ जाओ," धनपाल चेट्टियार ने कहा।

छुआछूत का विचार उस समय मिट गया था। चुनाव के कामो मे इन बातो पर कैसे ध्यान दिया जा सकता है! दोनो एक ही गाडी मे सवार हो गये।

## ५.

जेम्सपेट पहुँचकर जब गाड़ी सीरग के घर के सामने ठहरी तो अन्दर से बडे जोर से रोने की आवाज़ आई।

"बात तो सच मालूम होती है," श्रीनिवासैयर ने मन में सोचा और सीरग से कहा कि घर में जाकर देखो क्या बात है।

सीरग और मुनिस्वामी अन्दर गये। थोडी देर बाद मुनिस्वामी बाहर निकला और ब्राह्मण के कान मे यह कहकर कि प्राण निकल गये, फिर अन्दर चला गया।

"हाय, तुम तो चल बसी, हाय तुम हमे छोड गई, हमारा तो घर बरबाद हो गया," अन्दर से विलाप करने की आवाज़ आई।

श्रीनिवासैयर ने एक लडके से, जो उसके पास खडा उसे देख रहा था, पूछा—"इस घर में क्या हो गया है ?"

"आपको नही मालूम ? बुढिया को हैज़ा हो गया था, वह मर गई," लडके ने जवाब दिया।

श्रीनिवासैयर के होश उड गये। एक तो अछूतो की बस्ती और दूसरे हैज़ा ! उसने तय किया कि यहाँ रुकने से कोई लाभ नही। इतने मे मुनिस्वामी भी बाहर आ गया और बोला—"बुढिया बेहोश है, साहब ! न तो वह बोलती है, न उसे साँस आती है। शायद वह मर चुकी है। सीरग की ज़िम्मेदारी मै लेता हूँ, आप जाइये।" ऐयर जल्दी-जल्दी घर की ओर चल पडा।

घर के अन्दर बुढिया ने इशारा करके अपने बेटे को अपने पास बुलाया। सीरग अपना कान अपनी मा के मुँह के पास ले गया।

"मेरे बच्चे, वे एक हज़ार रुपया देने को कहते है। इसे इन्कार नही करना चाहिए। पागलपन मत कर और बुढिया का कहना मान।"

"बात क्या है ? क्या तुमने सीलिए मुझे बुलाया है ?" सीरग बोला।

"ओह !" मुनिस्वामी ने ज़ोर से कहा और दूसरो ने भी उसका साथ दिया। वे सब के सब ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे।

"मेरे बच्चे !" बूढी औरत ने फिर कहा, "मुझे हैज़ा-वैज़ा कुछ नही हुआ है, लेकिन मुझे कुछ अजीब-सा लग रहा है। सूँघनी बेचनेवाला

जो हजार रुपये लाया हूँ वह ले लो और इस अभागे कारबार को बद कर दो। अपना कर्ज उतारकर भले आदमियो की-सी जिन्दगी बिताओ। मुझे अब ज्यादा दिन जीना नही है।"

सीरग भय, क्रोध और आश्चर्य से परेशान चुपचाप खडा रहा। घर-वाले मुनिस्वामी के सकेत के अनुसार एक बार फिर "हाय, हाय" कर रो बैठे।

## ६.

सीरग आकर रग पिल्लै के पास खडा हो गया। रग पिल्लै ने कहा—"सीरग, गाडी मे बैठो। मुदलियार के घर पहुँचकर मै तुम्हे सब बाते समझा दूँगा।" वे सब अन्दर बैठ गये और रग पिल्लै ने कहना शुरु किया—"सीरग, तुम बडे भाग्यवान् हो। जब सारे आदमी इस तरह रुपया कमा रहे है तो तुम ही क्यो चूको? तुमने ही क्या कसूर किया है? इस मौके को हाथ से न जाने दो। बताओ, तुम क्या चाहते हो? उसे पूरा कराने की जिम्मेदारी मै लेता हूँ।" जब तक गाडी मुदलियार के घर पहुँची तब तक वह सीरग से इसी तरह की बात करते रहे।

रग पिल्लै ने जाकर मुदलियार से थोडी देर एकान्त मे बातचीत की। तब वह हाथ मे एक कपडे की पोटली लिये हुए सीरग के पास आये। सीरग बरामदे के बाहर बैठा था। पोटली उसके सामने रखते हुए रग पिल्लै ने कहा—"देखो, इसमे इतना रुपया है जितना तुम जिन्दगी भर काम करके भी नही कमा सकते। अपना सारा कर्ज चुका दो और कोई कारबार शुरू करो। मुदलियार तुम्हे इससे भी ज्यादा रुपया देगे। वह इस बात का ध्यान रखेगे कि तुम्हे किसी बात की कमी न रहे।"

सीरग गूँगा बना बैठा रहा।

वीरराघव चेट्टियार ने पोटली उठाकर सीरग की गोद मे डाल दी और कहा—"उठो और शपथ लो। सब बात पक्की हो गई, अव किस सोच-विचार मे पडे हो ?"

सीरग ने पोटली अपनी गोद मे से उठाकर एक तरफ जमीन मे रख दी और एक मिनिट तक वह सोचने का बहाना करता रहा। सब लोग चुपचाप इस इन्तजार में रहे कि यह कुछ कहेगा।

लेकिन लोगो के देखते ही देखते वह कूदकर गली मे भाग गया। कुछ आदमी उसके पीछे दौडे, लेकिन वह इतना तेज भाग कि जल्दी ही सब की आँखो से ओझल हो गया। "चला गया," यह कहते हुए सब लोग वापस आ गये।

मुदलियार रुपयो की थैली उठा अन्दर चले गये। उसे ताले मे बदकर वह लौटे और बोले—"देखा, बदमाश ने हमे कैसा धोखा दिया ?"

"अपनी नीच जाति का सबूत दिया है," सबने मिलकर कहा।

× × ×

दूसरे दिन चुनाव के समय सीरग मौजूद नही था।

"उसकी मा मर गई," एक ने कहा।

"नही, नही, वह सब चाल थी," दूसरे बोले।

जो कौंसिलर नागपटन गया था वह लौट आया था और राय देने को तैयार था।

"धनपाल चेट्टियार को छब्बीस रायें मिलेंगी," किसी ने कहा।

"नही जी, दोनो को सत्तरह-सत्तरह मिलेंगी और एक निर्णायक राय होगी," दूसरे ने कहा।

"सब रुपये का खेल है," तीसरा बोला।

"वे रुपया भी लेंगे और बदमाशो को धोखा भी देंगे," एक और बोला।

अन्त मे धनपाल चेट्टियार को तेइस वोट मिले और मुदलियार को दस। एक कोरा कागज था। इस परिणाम को सुनकर बाहर भीड ने धनपाल चेट्टियार की जय पुकारी।

"बेईमानी," दूसरी तरफ के आदमियो ने चिल्लाकर कहा।

"ईमानदार तो सिर्फ सीरग है," मुदलियार ने कहा।

---

# देव-दर्शन

सुन्दर चेट्टियार एक बज़ाज़ था। थोडी सी पूँजी से कारबार शुरुकर उसने अपनी ईमानदारी और चतुराई से जल्दी ही बहुत-सा धन कमा लिया था। उसकी पत्नी मीनाक्षी बडी धर्मात्मा थी। वह जीवन के पुराने नियमो का पालन करती थी और हर महीने इकादशी के दिन कडा व्रत रखती थी। दोपहर को वह प्रतिदिन घर से बाहर जाकर पहले कौओ और चिडियो के लिए चावल फैला आती और उसके बाद स्वय भोजन करने बैठती। चेट्टियार उसका बडा आदर करता था। उसे विश्वास था कि मेरे व्यापार में उन्नति मेरी पत्नी की धर्मपरायणता के ही कारण हुई है।

' जय सीताराम !" साधु के वेश मे एक अधेड उम्र के पुरुष ने चेट्टियार के घर मे प्रवेश करते हुए कहा। उसके हाथ मे कमण्डलु था और मुख पर तेज।

यह दीपावली से एक दिन पहले की बात है। चेट्टियार की पत्नी ने अजलि में चावल भरकर साधु का स्वागत किया, किन्तु उस आदरणीय व्यक्ति ने कहा--' मुझे चावल नही चाहिए, भोजन की इच्छा है।"

"भोजन अभी तैयार हुआ जाता है, कृपा कर थोडी देर ठहर जाइये," मीनाक्षी ने कहा और साधु को बैठने के लिए एक पटिया बिछा दी।

भोजन कर चुकने के बाद साधु बोला--"देवि, तुम्हे कभी किसी बात की कमी नही रहेगी। तुम धर्मात्मा और पतिव्रता स्त्री हो। मैं तुम्हें एक पवित्र मत्र सिखाता हूँ। अगर तुम सिर पर तेल मलकर स्नान करने के बाद इस मत्र का जाप करोगी तो तुम अपने पुरखो, स्वर्ग के देवताओ और ऋषियो के दर्शन कर सकोगी।"

सुन्दर चेट्टियार की धर्मपरायणा स्त्री यह सुनकर बहुत आनन्दित हुई और उसने मत्र सीख लिया। अगले दिन वह बडे तडके उठी और तेल मलकर नहाई। इसके बाद उसने साधु के कहने के अनुसार मत्र का १००८ बार जाप किया। जाप के समाप्त होते ही उसे जयजयकार और शखो की ध्वनि सुनाई दी। पूजा के स्थान के सामने एक बहुत बडी भीड खडी थी, जहाँ चमकते हुए सिहासन वृत्ताकार मे सजे हुए थे और उन पर देदीप्यमान महापुरुष विराजमान थे।

सुन्दर चेट्टियार की पत्नी ने देखा कि उनमे उसके पति के परपितामह के अतिरिक्त और भी कई व्यक्ति थे। एक के हाथ में बाँसुरी थी, वह कृष्ण भगवान् मालूम होते थे। उनके बराबर ही हाथ मे बडा-सा धनुष लिये जो खडे थे वह राम-जैसे दिखाई देते थे। उनके बाद वृद्ध ऋषि वसिष्ठ खडे थे। अपना हल लिये बलराम भी वहाँ विद्यमान थे और अपना फरसा सम्हाले क्रोधी परशुराम भी। दूसरी ओर अर्जुन, भीम और धर्मपुत्र युधिष्ठिर बैठे थे। मीनाक्षी ने जिधर भी दृष्टि फेरी उधर ही उसे भारत के ऋषियो और महापुरुषो के दर्शन हुए। ऐसा मालूम होता था कि वे अपना रूप बदल रहे है, कभी वे एक रूप में दिखाई देते थे, कभी दूसरे मे। भीड इतनी थी कि तिल रखने को भी जगह नही थी। इस दृश्य को देखकर मीनाक्षी आनन्द से गद्गद् हो गई और "नारायण" कहकर मूर्च्छित हो गई।

पत्नी की चीख सुनकर चेट्टियार जल्दी-जल्दी सीढियो से उतरता हुआ नीचे आया। वहाँ उसने जो कुछ देखा वह उसकी समझ मे नही आया। "ये अजीब तरह की पोशाके पहने यहाँ कौन लोग बैठे है ? किसने यह अभिनय रचा है ?" चारो ओर देखकर उसने अपने मन में सोचा। बज़ाज होने के कारण उसका ध्यान सबसे पहले उनके कपडो की ओर गया। "यह तो गाधी जी के अनुयायियो का प्रदर्शन मालूम होता है," उसने फिर मन में सोचा। सब के सब खद्दर पहने हुए थे। किसी ने बहुत मोटा खद्दर पहन रखा था, किसी ने बहुत महीन और किसी ने बीच के सूत था। लेकिन थे सब कपडे खद्दर के ही।

"श्रीमानो! आप यहाँ क्यो पधारे है ? पुलिस आपत्ति करेगी," चेट्टियार ने कहा।

सब के सब खिलखिलाकर हँस पडे।

"आप हँस सकते है। हो सकता है कि आप जेल जाने को तैयार हो, लेकिन मै तैयार नही हूँ," चेट्टियार बोला। "आप लोग कृपा कर कही दूसरे घर में चले जायँ। अगला ही मकान एक वकील का है, आप वहाँ जाकर यह प्रदर्शन कर सकते है।"

एक बूढे महाशय ने चेट्टियार के पास आकर कहा—"बेटा, क्या तूने मुझे पहचाना नही ? सुन्दर, मै तेरे बाबा का बाप हूँ जिसने तेरे बाप को जन्म दिया था। तू डरता क्यो है ?" यह कहकर उन्होने चेट्टियार को छाती से चिपटाकर स्नेहपूर्वक प्यार किया।

"वृद्ध महाशय! आपका अभिनय सचमुच बहुत सुन्दर है, मै आपके चरण छूता हूँ। लेकिन कृपा कर मेरे घर से चले जाइये, मै अपने घर में यह खद्दर की सभा नही चाहता। आज त्योहार है, इसलिए मै उचित नही समझता कि ऐसे दिन पुलिस आकर हमें परेशान करे," चेट्टियार ने कहा।

"खद्दर से तुम्हारा क्या मतलब है, बेटे ? हम तो इसके सिवा और कोई दूसरा कपड़ा ही नही जानते। मैं जब यहाँ इस पृथ्वी पर रहता था तब भी सिर्फ इसी तरह के कपडे पहनता था। मैं ही नही, हम सब इसी किस्म के कपडे पहनते थे। हम करते भी क्या ? इसके अलावा कोई दूसरा कपडा ही नही था। इन्ही कपड़ो को पहने-पहने मैं स्वर्ग चला गया। स्वर्ग मे कपड़े न घिसते न फटते। तुम्हारी पतिव्रता स्त्री ने मुझे पुकारा और मैं जल्दी मे चला आया," वृद्ध महाशय ने कहा।

चेट्टियार हक्काबक्का रह गया। "ये सब व्यर्थ की बाते है, जरूर यह काग्रेसियो की कोई सभा है, नही तो ये सब के सब खद्दर क्यो पहने होते ?" मन मे यह सोच चेट्टियार धर्मपुत्र के पास गया जिनकी वेशभूषा से ही विश्वास की भावना उत्पन्न हो रही थी। उनके सामने साष्टाग पडकर उसने कहा—"श्रीमान्, आप सच्चे आदमी मालूम होते है, मुझे ठीक-ठीक बताइये कि यह सब क्या है ?"

"सब ठीक है, बेटा! चिन्ता या भय करने की कोई वात नही। जब हम इस पृथ्वी पर रहते थे तो हाथ के कते-बुने कपडे के सिवा कोई दूसरा कपडा जानते ही नही थे। तुम अब उसी कपडे को खद्दर कहते हो। हमारे पास दूसरी तरह का कोई कपडा नही था जिसे हम पहन सकते। उन दिनो भारत में कपडा बहुत था और बाहर से नही आता था, बल्कि हम ही यहाँ से बाहर कपडा भेजा करते थे। मिले न हमारे देश मे थी, न कही और। स्वर्ग मे तो हम लोग अब भी यही कपडा पहनते है। तुम भी ऐसा ही क्यो नही करते ? सुनता हूँ कि देश मे बडी गरीबी है। क्या यह बात सच है?"

सब को अच्छी तरह प्रणाम करने के बाद चेट्टियार मे काफी

साहस आ गया और उसने हरेक का कपडा अपने अँगूठे और तर्जनी के बीच रगडकर देखा। राम, बलराम, कृष्ण, परशुराम, भीष्म, अर्जुन, सभी ने शुद्ध खद्दर पहन रखा था।

"यह अजीब बात है! मै तो सोचता था कि केवल महात्मा गाधी ने हाल मे यह मजाक शुरू किया है और वही हरेक पर खद्दर पहनने के लिए जोर डाल रहे है। लेकिन इस समाज में तो सबने खद्दर पहन रखा है," चेट्टियार ने मन ही मन में सोचा और अपनी पत्नी की ओर देखा।

मीनाक्षी अभी उस स्वर्गीय आनन्द की मूर्च्छा से पूरी तरह जागी भी नही थी कि सबने एक साथ मिलकर कहा—"भगवान् तुम्हे सुखी रखें, अब हम जाते है," और चेट्टियार का बडा कमरा खाली हो गया।

यह बिलकुल सच है कि हमारे पुरखो के पास कोई दूसरी तरह का कपडा नही था। उसी कपडे को पहने-पहने वे स्वर्ग सिधार गये थे और स्वर्ग में अब भी उसे ही पहने हुए है। वही कपडा हम यहाँ भी क्यो न पहने? यह विश्वास किया जा सकता है कि ऐसा करने से हम अपनी पुरानी महानता को भी प्राप्त कर लेगे।

# अबोध बालक

"मा, जब मैं सफेद गाय के पास जाता हूँ तो वह मुझे सींग से डराती है, लेकिन करुप के सामने चुपचाप खडी रहती है; यह क्या बात है ?"

"वह उससे परच गई है, इसलिए उसके सामने चुपचाप खडी रहती है। तुमसे नही परची है, इसलिए तुम्हे मारती है।"

"मैं भी उसे परचा लूँ, मा ?"

"नही, नही, तुम्हे क्या करना है ? तुम खेलो-कूदो। वह तो अछूत है, इसलिए उसे गाय चरानी पडती है। आओ, केक खा लो।"

सुब्बु था तो चार साल का, लेकिन अपनी अवस्था के लिहाज से वह बहुत बढचढकर बाते किया करता था और उसके माता-पिता उसे बडा लाड-प्यार करते थे। उससे पहले उसके दो बहनें हो चुकी थी।

"मा, तुम ऐसे केक कैसे बनाती हो ?"

"चीनी, दाल और नारियल की गिरी मिलाकर। खाकर बताओ, अच्छा है या नही।"

"अछूत क्या होता है ? करुप घर के अदर क्यो नही आता ? और तो सब आते है !"

"वह अछूत जो है।"

"लेकिन अछूत क्या होता है ?"

"मैं बताऊँगी तो तुम्हारी समझ में नही आयगा। सवाल-जवाब छोडो और अपनी पोली खाओ।"

"मै नही खाता। करुप घर के अन्दर क्यो नही आता ?"

"बकवास बन्द करो और भाग जाओ। देखते नही, वह कितना मैला है। अगर वह घर में आयगा तो हम सब मैले हो जायँगे।"

"मैला किसे कहते है, मा ? गोबर को ?"

"गोबर मैला नही होता। उसका बदन बहुत मैला है, वह कभी नही नहाता, वह अछूत है।"

"तो मै करुप से अपने घर मे नहाने के लिए कह दूँ ?"

"क्यो बकवक करते हो ? भाग जाओ। उसके साथ मत खेलना।"

"मै तो उसी के साथ खेलूँगा और किसी के नही। उसे भी एक पोली दो।"

"नही, अछूत के लडके को पोली नही दी जाती। अगर मै उसे दे दूँगी तो घर मे रखी हुई सब पोली गन्दी हो जायगी। जाओ तुम्हे बाहर चाचा बुला रहे है। जाकर देखो वह क्या चाहते है।"

"पहले मुझे दूसरी पोली दो, मै उसे जरूर दूँगा। उसे भी एक पोली खाने दो।"

"नही, पहले यहाँ बैठकर इसे खालो तब जाना, लेकिन उसके पास मत फटकना।"

"तो मै नही लेता," वह बोला और पोली नीचे रखकर घर के पीछेवाले आँगन मे भाग गया।"

× × ×

"करुप, क्या तुम अछूत हो ?"

"हाँ।"

"क्या मैं भी अछूत हूँ ?"

"नही, नही, तुम तो ब्राह्मण हो। अछूत मैं हूँ।"

"तुम्हारे मा है ?"

"हाँ, मेरे मा है।"

"क्या वह मेरी मा-जैसी है ?"

"हाँ।"

"क्या वह तुम्हारे लिए पोली बनाती है ?"

"पोली ! नही हमारे घर में पोली नही होती," उसने हँसते हुए कहा।

"आज दीवाली है। आज हम सब तेल मलकर गरम पानी से नहाये है। क्या तुम भी नहाये हो ?"

"हमारा कुआँ सूख गया है और तेल खरीदने के लिए हमारे बाप के पास पैसा कहाँ से आया ?"

"हमारे घर में नहा लो।"

"राम-राम, क्या तुम्हारी मा मुझे अन्दर घुसने देगी ?"

"तुम मेरे साथ आओ। अगर तुम नहाकर साफ हो जाओगे तो वह तुम्हे घर के अन्दर जाने देगी।"

"नही जाने देंगी। ठोकर मारकर वह मुझे बाहर निकाल देगी।"

"नही, नही, मेरी मा तुम्हे कभी नही पीटेगी।"

वे बातें कर ही रहे थे कि कृष्णैयर चाचा आ गये।

"तुम यहाँ हो सुब्बु ! देखो यह पटाखो का पाकिट।"

"सुब्बु कूदकर चाचा के कधे पर चढ गया। कृष्णैयर ने उसे प्यार कर पटाखो का पाकिट दे दिया और कहा—"क्या तुम इन्हे सुलगाना जानते हो ?"

"हाँ, हाँ, जानता हूँ," उसने पाकिट खोलकर पटाखो को फैलाते हुए कहा। "इन्हे आधा-आधा कर दो और एक हिस्सा करुप को दे दो।"

"अछूत का लडका इनका क्या करेगा ? उसे छूना मत। आओ अन्दर चलें," चाचा ने कहा और अछूत के लडके की ओर देखकर धमकाया—"क्यो बे अछूत के बच्चे, इतनी बदतमीज़ी ? हमारे लडके के इतने पास मत आया कर। भाग यहाँ से।"

करुप भागकर कुछ दूर खडा हो गया, लेकिन उसकी आँखें पटाखो के पाकिट पर ही लगी रही।

सुब्बु की मा के आने पर कृष्णैयर ने कहा—"अपने लाडले बेटे को तो देखो, सावित्री ! चाहता है कि मैं अछूत छोकरे को पटाखे दे दूँ।" यह कहकर उन्होने सुब्बु को उठा कर प्यार किया।

"कितना अच्छा है यह ! क्या बताऊँ इसकी बातें ?" मा ने अभिमान के साथ कहा और उसे अपनी गोद में उठाकर छाती से चिपटा लिया।

सुब्बु की समझ मे कुछ नही आया। करुप गाय को बाहर निकालकर खेत पर चला गया।

इतने में सुब्बु की बहिन पार्वती भारती का एक गीत गाती हुई आई—

"परैया स्वतत्र होगे ! तीया स्वतंत्र होगे !

और पुलैया भी, पुलैया भी,

सब के लिए स्वतन्त्रता, सब के लिए स्वतत्रता !

"मा, क्या तुमने आज का अखबार पढा है ? उसमें लिखा है कि अछूतो के लिए सारे मन्दिर खोल दिये जायँगे," उसने मा से कहा।

"क्या जाने इन सब बातो का क्या नतीजा निकलेगा," सावित्री ने कहा।

"तुम्हें नही पता ? अब दुनिया उलट रही है," कृष्णैयर ने कहा।

---

# सीताराम

सब-कलक्टर सीताराम की तनख्वाह बारह सौ रुपया महीना थी। लेकिन वह अपने घर का खर्च बडी किफायत के साथ करते थे। शहर के दूसरे अफसर और उनकी पत्नियाँ उन्हे मक्खीचूस कहा करती थी।

सीताराम और उनकी पत्नी मे परस्पर बडा प्रेम था, फिर भी उनमे एक भेद की बात थी। हर महीने तनख्वाह मिलते ही सीताराम नौ सौ रुपये इगलैड भेज देते थे और उनकी पत्नी चेष्टा करने पर भी यह नही समझ पाई थी कि आखिर ये रुपया हर महीने क्यो भेजे जाते है। पहले वह समझती रही कि उनके पति रुपयाँ इगलैड के किसी बैक में जमा होने के लिए भेजते है और यह सोचकर उन्हे वडी प्रसन्नता होती थी। किन्तु बाद में उनकी समझ मे आया कि यह बात नही हो सकती। स्वय अपनी इच्छा से धन बचाने मे और विवशतावश किसी को रुपये देने मे बडा अन्तर होता है, जो कि हमारे दैनिक व्यवहारो मे और उसके कारण उत्पन्न होनेवाली मानसिक दशा द्वारा स्पष्ट दिखाई दे जाता है।

एक दिन सीताराम ने अपनी पत्नी से कहा–"जब मैं इगलैड मे पढ रहा था तो मुझ पर कर्ज हो गया था और उसी कर्ज को उतारने के लिए मै हर महीने रुपया भेजा करता हूँ।" लेकिन उनकी पत्नी की समझ में यह बात नही आई कि जब सारा खर्च ससुर करते रहे थे तो

फिर पति पर कर्ज कैसे हुआ। फिर भी पत्नी को न तो शका प्रकट करने की गुजाइश होती है और न बहुत-से प्रश्न करने की। कभी चर्चा छिडती भी तो सीताराम चुपचाप बात बदल देते और दूसरा प्रसग ले उठते। कभी-कभी उनकी पत्नी इगलैंड के जीवन के विषय मे सुनी हुई बातो का ध्यान कर उद्विग्न हो उठती, किंतु उनके प्रति सीताराम का प्रेमपूर्ण व्यवहार इन शकाओ को टिकने न देता। "मुझे चिंता करने की जरूरत ही क्या है," वह सोचती, "बात चाहे कुछ भी हो, मै समझूँगी कि उनकी तनख्वाह ३०० रुपये ही है।" ऐसी ही ऐसी बातो से वह अपने आप को तसल्ली देती, भारतीय नारियो के परम्परागत पतिव्रत की विशेषता और शक्ति होती ही ऐसी है।

सीताराम ससुर के रुपये से इगलैंड गये थे और वहाँ तीन वर्ष रह कर उन्होने आई सी एस् की परीक्षा पास की थी। जब वह इगलैंड के लिए रवाना हुए थे तो उनकी पत्नी सुन्दरी की अवस्था उन्नीस वर्ष की थी। वह बडी रूपवती थी, लेकिन गहने कपडे पुराने ढग के पहनती थी। वह समझती थी कि इस बात से उनके पति प्रसन्न होगे। उनका और उनकी मा दोनो का यह हार्दिक विश्वास था कि जितने ही अधिक गहने खरीदे और पहने जाते है उतनी ही अधिक सुन्दरता भी बढती है। इसके विपरीत, बेचारे सीताराम सोचते कि अगर मेरी पत्नी अपनी नाक से वह भद्दी नलकी और कान से वे बड़े-बडे बुदे निकालकर सिर्फ बारीक चूडियो का जोडा पहने रहे और पुराने ढग की चक्करदार साडी के बजाय हलकी साडी नए ढग से सफाई के साथ पहने तो कितनी सुन्दर लगे! इसी तरह रेशमी किनारी की कोहनी तक लटकती हुई भद्दे रग की आस्तीनें भी उन्हे बुरी लगती और वह सोचते कि आस्तीने तो बिलकुल होनी ही नही चाहिएँ।

लेकिन सच पूछिये तो वह स्वय भी पुराने विचारों के थे। उन्हे अपनी पत्नी को यह बताने मे बड़ा सकोच होता था कि पहनने-ओढने के बारे मे उनके अपने विचार क्या है। वह सोचते कि अगर मैं कहूँगा तब भी ये पुराने विचारवाले आदमी मेरी बात मानेगे नही और इस प्रकार वह असतोष के कीडे को अपना मस्तिष्क चाटने देते। वह सिनेमा जाते और वहाँ रूपवती स्त्रियाँ देखते--परदे पर दिखाई जानेवाली और सिनेमा देखने आनेवाली भी। "एक ये है जो अपने रूप का अच्छे से अच्छा उपयोग करना जानती है और एक मेरी स्त्री है जो कोरी बुद्धू है," वह अपने मन मे विचार करते और अपने दुर्भाग्य पर ठढी आह भरकर रह जाते। लेकिन फिर यह सोचकर कि अच्छा इगलैंड हो आऊँ तो सब बाते ठीक करूँगा, वह बात टाल देते और इससे उन्हे कुछ तसल्ली हो जाती।

सीताराम इगलैंड पहुँचे। जिधर भी उनकी दृष्टि गई उन्हे सुघडता-ही सुघडता दिखाई दी। उन्होने सोचा—"कैसा सुन्दर शरीर है! कैसे सुरुचिपूर्ण कपडे! मेल और अनुपात का कैसा सूक्ष्म विवेक! ये सुन्दर आचार-व्यवहार! ये चमकते हुए मुखडे! यह अनुकूल वातावरण! यह तो सचमुच स्वर्ग है, इससे अधिक मनुष्य और क्या चाह सकता है?"

कुछ दिनो तक इस स्वर्ग में अप्सराओ के बीच रहने के बाद एक अप्सरा उनसे अधिक आत्मीयता के साथ मिलने-जुलने लगी। "इस स्वर्गीय जीव से तो केवल बाते करने में इतना आनन्द आता है!" उन्होने सोचा कि जीवन को सुखी बनाने के लिए इसके अतिरिक्त और क्या चाहिए, न विवाह न बच्चे! ऐसा था वह सुख जो उन्हे उसके सग मात्र से मिलता था। उससे अलग होते ही वह उदास हो जाते। उन्हे अपनी

पत्नी सुन्दरी की याद आती जिसे वह गाँव मे छोड आये थे। धीरे-धीरे उसके लिए उनके मन में एक प्रकार की अरुचि-सी होने लगी।

एक दिन सीताराम के बुरे ग्रह पराकाष्ठा पर थे। उस अप्सरा ने अपना जाल बडी सफलता के साथ फैलाया था और अन्त मे सीताराम उसमें फँस ही गये। उन्होने उससे ब्याह करने का निश्चय कर लिया। बाते तै हुई और तीन सप्ताह के भीतर ही भीतर सब कुछ समाप्त हो गया। इगलैड मे ऐसा प्रबन्ध होता है कि यदि कोई चाहे तो आध घटे से भी कम मे ब्याह सम्पन्न हो जाय।

शुरू-शुरू मे बातें करते समय एक दिन सीताराम ने खुशी की एक गैर-जिम्मेदार भावना से प्रेरित हो उस स्त्री से कह दिया कि मै अभी तक क्वारा हूँ। स्वभावत उन्हे बाद में भी यह असत्य निभाना पडा। ऐसी भूलो को सुधारना बडा मुश्किल होता है।

बातें इसी आधार पर आगे बढती रही और अन्त में यह असत्य ब्याह के समय रजिस्टरी करनेवाले सरकारी अफसर के सामने दुहराया गया। ब्याह के समय इस प्रकार की घोषणा आवश्यक होती है, क्योकि इगलैड में पत्नी के जीवित रहते हुए कोई पुरुष दूसरी स्त्री के साथ ब्याह नही कर सकता। इस दृष्टिकोण से अँगरेजी कानून में स्त्री और पुरुष मे कोई अन्तर नही माना जाता।

सीताराम और उनकी अप्सरा ने विवाह के बाद फौरन ही पति-पत्नी की तरह जीवन बिताना आरम्भ नही किया। कुछ कठिनाइयाँ ऐसी थी जिनके कारण यह बात थोडे दिनो के लिए रोकनी पडी। सीताराम ने अपने घर पत्र लिखा और कुछ कारण बताकर अधिक रुपया मँगवाया। ससुर ने रुपया भेज दिया और उसके बाद सीताराम अपनी अँगरेज पत्नी के साथ रहने लगे।

सीताराम ने अनुभव किया कि उनकी अप्सरा का स्वभाव दिन पर दिन शीघ्रता के साथ बिगडता जा रहा है। जिस सुशीलता और सुघडता की पहले वह इतनी प्रशसा किया करते थे वह धीरे-धीरे कम होती दिखाई दी और अत मे बिलकुल लुप्त हो गई। उन्हे उसके स्वभाव मे सचमुच की कठोरता दिखाई देने लगी, यहाँ तक कि एक दिन उन्होने सोचा कि सुन्दरी निश्चय ही उससे ज्यादा अच्छी है।

जल्दी ही सीताराम को यह मालूम हो गया कि जिन सुन्दर होठो की मैं प्रशसा किया करता हूँ वे लिपस्टिक से बराबर रँगे रहने के कारण इतने भले मालूम पडते है और जब वे रँगे हुए नही होते तो सचमुच भद्दे दिखाई देते हैं। कभी-कभी वह सोचते कि उम्र के बारे में भी मैंने धोखा खाया है। तब उन्हे सुन्दरी के होठो और मुँह का ध्यान आता और वह इस नतीजे पर पहुँचते कि वे अँगरेज़ अप्सरा के होठो और मुँह से हजारगुने सुन्दर है।

एक दिन सीताराम को यह भी पता चला कि अँगरेज़ अप्सरा के सिर पर जो बाल है वे उसके अपने नही है। उस दिन उन्हे जो मानसिक पीडा हुई उसका वर्णन नही किया जा सकता, क्योकि नरक मे पडी हुई आत्माएँ ही उसे समझने मे समर्थ हो सकती है। अन्त मे यह बात भी स्पष्ट हो गई कि केवल बाल ही नही, भौहे भी रँगकर काली बनाई गई है। एक महीने बाद उन्होने यह भी देखा कि श्रीमती के मोती-जैसे सफेद दाँत एक डिब्बे के अन्दर दो कतारो मे हिफाजत से रखे हुए है। निस्सन्देह इन बातो की खबर उन्हे देर से लगी।

सीताराम अधिक सहन न कर सके। उन्होने गले में फाँसी डालकर इस कष्ट से छूटने का सकल्प किया।

वह कुरसी पर कमर लगाकर बैठ गये और अपने आपको कोसने

नक़ली दाँतों की पंक्तियाँ मखौल करती हुई बोलीं—
"मूर्ख, तू धोखा खा गया।"

लगे। उन्हे अपने गाँव और मन्दिर की याद आई। उन्ही का ध्यान करते हुए उन्होने आँखें बन्द कर ली और सोच में डूब गय। बचपन के दिनो की याद नदी की तरह उमड आई। मरी हुई माता का रूप उनको आँखो के सामन आ खडा हूआ। उन्होने देखा कि मा की आँखो में दया भरी हुई है। इसके बाद उन्हें अपनी पत्नी की सुध आई। उन्हे ऐसा लगा मानो भोली सुन्दरी उनके वापस आने की प्रतीक्षा कर रही है और उसके मुख पर तेज है, जैसा तपस्या के समय उमा के मुख पर था। आत्महत्या से पूर्व मनुष्यो को ऐसी ही मानसिक अनुभूतियाँ होती है और उन्हे ऐसे ही सपने दिखाई देते है। सीताराम की आँखो म आँसू भर आये।

तब एकाएक उन्हे डिब्बे में रखे हुए दाँतो का ध्यान आया। नकली दाँतो की दोनो पक्तियाँ उनके सामने सजीव बनकर खडी हो गई और उनका मखौल उडाती हुई बोली—"मूर्ख, तू धोखा खा गया।"

"तो क्या इस सडी हुई औरत के पीछे मै अपनी जान दे दूँ? नही, नही, कितनी बडी मूर्खता का काम करने जा रहा था मै!" सीताराम ने अपने मन में कहा और कुरसी से उठ वह कपडे पहनकर बाहर चले गये।

कुछ दिनो तक इधर-उधर मारे-मारे फिरने के बाद एक दिन सयोगवश उन्हे मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज के एक प्रोफेसर मिल गये। उन्होने अपनी शिक्षा उसी कॉलेज मे प्राप्त की थी। प्रोफेसर से उन्होने अपनी मूर्खता की सारी कहानी कह सुनाई और उनकी सहायता माँगी। प्रोफेसर को अपने पुराने शिष्य पर दया आ गई। वह उसे जाल से निकालने की चेष्टा करने लगे और अन्त में उस औरत को समझौते के लिए तैयार करने में सफल हो गए। सीताराम को इस बात के लिए राजी होना पडा कि जब वह इम्तहान पासकर इडियन सिविल सर्विस में ले लिये जायँगे तो अपनी तनख्वाह का, चाहे वह कितनी भी हो,

एक बड़ा हिस्सा हर महीने उस औरत को भेज दिया करेंगे। रकम तै कर दी गई और इकरारनामे पर हस्ताक्षर कर सीताराम ने सोचा—"बडे भाग्य जो इस जाल से छूटा, चाहे किसी भी शर्त पर सही !" व्याह करानेवाले अफसर के सामने झूठी घोषणा करने के कारण लम्बी जेल काटने, सदा के लिए अपमानित होने और किसी प्रकार की भी नौकरी न पाने का भय था।

उन्होने कसकर पढाई की और आई सी एस् की परीक्षा मे उत्तीर्ण हो वह भारत के लिए चल पडे। जहाज् से उतरकर भारत की भूमि पर पैर रखते ही उन्हे ऐसा लगा मानो वह अपनी मा की गोद में आ गये हो और उन्हे बडी प्रसन्नता हुई। विदेश से भारत लौटनेवाले सभी लोगो के हृदय मे ऐसी भावना उठती है, लेकिन सीताराम के साथ जो घटनाएँ घटी थी उनके कारण उन्हे यह अनुभूति और भी तीव्र रूप मे हुई। घर पहुँचकर जब उन्होंने सुन्दरी को देखा तो परम्परा का ध्यान जाता रहा और उन्होने सारी भीड के सामने उसे अपनी छाती से लगा लिया। उसके पुराने ढग के कपडे और गहने अब सचमुच सुन्दर दिखाई देने लगे, उसकी कोहनी तक पहुँचनेवाली आस्तीने, जिन्हे पहले वह घृणा की दृष्टि से देखते थे, अब सुरक्षा और हर्ष की भावना उत्पन्न करने लगी। डूबने से बचाये जाने पर जो भावना किसी व्यक्ति को सूखी भूमि पर खडे होने में होती है वही भावना सुन्दरी की पुराने ढग की चीजे देखकर सीताराम को हुई। सुन्दरी कितनी रूपवती और सुसस्कृत है, यह बात उनकी समझ में तब आई।

यह ज्ञान सीताराम को सचमुच बडा मँहगा पड़ा, लेकिन अब जिस प्रेम का उदय उनके हृदय में सारे ससार को जीवनदान देनेवाले सूर्य के समान हुआ, उसके लिए जो भी कीमत दी जाय वही कम।

---

# पटाखे

"बापू, मैं पटाखे लूँगा," वीर के लडके ने रोकर कहा। लेकिन बेचारा वीर पटाखे कहाँ से लाता ? ब्राह्मणो के मोहल्ले और जुलाहो की गली में दीवाली से तीन दिन पहले से ही बच्चे पटाखे छुटाने लगे थे। वीर का लडका दस गज़ दूर खडा-खडा तमाशा देख रहा था। जब कभी वह बिना जले हुए टुकडो को उठाने के लिए नीचे झुकता तभी झिडककर दूर हटा दिया जाता।

दूसरे दिन और भी बुरा हुआ। पटाखो के छूटने की आवाज़ हर जगह से आ रही थी। "क्या बात है कि सब के घर मे पटाखे है और हमारे घर मे नही," यह प्रश्न बच्चे के मन मे बराबर उठ रहा था, लेकिन उसका कोई समाधान नही हो पा रहा था। अपने बाप से पूछते हुए उसे डर लग रहा था।

उसे भूख लग रही थी, लेकिन अपने मोहल्ले में जाने का उसका मन नही कर रहा था। ब्राह्मणो की गली मे खडा-खडा वह बच्चो के पटाखे छुटाने का मजा ले रहा था।

"दूर खडा हो," एक आदमी ने सडक पर से निकलते हुए कहा। वीर का लडका डर से काँप उठा और भागकर एक गली मे दीवाल से सटकर खडा हो गया।

क्या वीर का लडका जानता था कि उसे इस तरह डरकर क्यो छिपना

पडा ? बच्चे क्या सोचते है, यह कौन समझ सकता है ? उसके पास ही एक छोटा-सा पिल्ला खडा था। उस बेचारे जानवर से उसे आत्मीयता मालूम हुई और जब तक वह ब्राह्मण चला नही गया तब तक वह उसे थपथपाता रहा। फिर वह गली से बाहर निकल आया और बहुत देर बाद अपने मोहल्ले में लौट गया।

"बापू मुझे पटाखे ला दो," उसने वीर से कहा। इस पर उसके बाप ने उसके गाल पर इतना कसकर तमाचा लगाया कि वह ज़मीन पर गिर पडा।

"नशे में चूर होकर घर आते हो और लगते हो बेचारे लडके को पीटने" वीर की स्त्री ने चिल्लाकर कहा। "शराब-ताडी मे जो रुपये फूँकते हो उसमे से क्या तुम एक पैसा भी बचाकर इसके लिए पटाखे नही खरीद सकते ? क्या वह माँग भी नही सकता ? इसके लिए क्या मार डालोगे उसे ?" मा लडके को उठाकर पुचकारने लगी।

"मा, मै पटाखे लूँगा" लडके ने फिर कहा।

"चुप रह, अछूत के लडके को पटाखो से क्या काम ?" यह कहकर वह रसोई बनाने चली गई।

"अगर तूने फिर पटाखो का नाम लिया तो मै तुझे जान से मार डालूँगा," वीर ने उसे धमकाते हुए कहा।

## २.

दोर स्वामी ऐयगर के घर बडी धूम मच रही थी। मद्रास से उनका दामाद मय बिस्तर और ट्रक के आया था। उनकी तीसरी लडकी का ब्याह शेल ऐयगर नाम के यूनीवर्सिटी के एक ग्रेजुएट से हाल मे ही हुआ था। चार हज़ार रुपयो से जितनी धूमधाम की जा सकती थी उतनी ब्याह मे की गई। ब्याह के बाद की यह पहली दीवाली थी और

शेल बहुत-सारी चीज़े लेकर आया था। अपने छोटे सालो के लिए वह बीस पाकिट पटाखो और फुलझडियो के लाया था। उन सब को बाँटकर वह अपनी सास के पास चला गया। उसके सालो, किट्टू और चीनू ने, जो क्रमश सात और चार वर्ष के थे, पटाखो को आपस मे बाँट लिया। चीनू चाहता था कि सारे पीले डिब्बे मे ही ले लूँ, लेकिन किट्टू ने देने के लिए मना कर दिया।

"बेबी को पीले डिब्बे दे दो," कमला ने कहा। कमला उस गर्वीली लडकी का नाम था जिसका हाल ही मे ब्याह हुआ था।

बच्चो का झगडा निबटाने के बाद उसने फिर कहा—"इन्हे अभी छुटाना मत, दीवाली तो कल है। कल जब तेल मलवाकर नहा लोगे तब ये पटाखे छुटाने को मिलेंगे।"

इसके बाद वह अपनी मा के पास चली गई।

× × ×

"मै तो अपने पटाखे अभी छुटाऊँगा," किट्टू ने कहा।

"मै नही छुटाता, मै तो अपने कल छुटाऊँगा," चीनू ने कहा।

"मै एक पाकिट आज छुटाऊँगा और बाकी कल के लिए रख दूँगा," किट्टू बोला।

वे दोनो अपने पटाखे लेकर मा के पास पहुँचे।

"मा, इन्हे अच्छी तरह रख दो," चीनू बोला और उसने अपने हिस्से के पटाखे मा की गोद में डाल दिये। दामाद के आने की प्रसन्नता में मा ने चीनू को छाती से चिपटा लिया और उसे प्यार करते हुए कहा—"तुम बडे राजा बेटा हो।" फिर पटाखो के डिब्बे को उस आलमारी मे रखकर जिसमे अक्सर चाँदी के बर्तन रखे रहते थे वह दामाद से बातें करने चली गई।

## ३.

दीवाली का दिन आया। "हाय, वह तो सब कुछ ले गया, एक हज़ार रुपये के चाँदी के बर्तन चले गये," दोरस्वामी की पत्नी सीता ने रोते-रोते कहा।

"उसने मेरा बटुआ भी चुरा लिया। बेंक से निकाले हुए सारे रुपये मैंने उसी में रख दिये थे," दोरस्वामी ने विलाप-सा करते हुए कहा।

"हमें जाकर पुलिस में खबर करनी चाहिए," दामाद ने कहा।

"तुम्हारा कितना रुपया था ?" सीता के छोटे भाई आरामुदु ने पूछा।

"मा, सारे पटाखे कहाँ हैं ?" चीनू बोला।

"शी···ी···ी, सारे पटाखे चोर ले गया," किट्टू ने चुपके-से उसके कान में कहा।

"चोर कौन होता है" ? चीनू ने पूछा।

"वह काला आदमी होता है और रात को सब के सो जाने पर घर में घुसकर सब चीज़े ले जाता है," किट्टू ने बताया।

"क्या वह कल यहाँ आया था ?" चीनू ने पूछा और किट्टू ने गर्दन हिलाकर स्वीकारात्मक संकेत किया।

"तो क्या वह सारे पटाखे ले गया ?" चीनू ने पूछा और वह रोने लगा।

"रो मत बेबी ! हम चोर को पकडकर मारेंगे," सीता ने कहा।

"कमबख्त चोर बच्चो के पटाखे तक ले गया," कमला बोली।

दोरस्वामी ऐयगर ने अपने बटुए को चारो ओर तलाश किया और न मिलने पर वह सिर पकडकर एक कोने में बैठ गये।

"जो जाना था, चला गया; अब वापस तो आ नही सकता। चलो, नहा लो," सीता ने अपने दामाद की ओर मुडकर कहा।

"नही, पहले हमें चावडियूर जाकर फौरन पुलिस को खबर करनी चाहिए। चाचा चलिये।" शेल ऐयगर ने कहा और वह चाचा कृष्ण ऐयगर को साथ लेकर चला गया।

"चोर ने चाँदी का एक भी तो बर्तन नही छोडा, मैं अपने दामाद का सत्कार कैसे करूँगी ?" सीता ने कहा।

४.

वीर का लडका पटाखे छुटा रहा था। मोहल्ले के दूसरे लडके चारो ओर खडे होकर तालियाँ पीट रहे थे और खूब खुश हो-होकर चिल्ला रहे थे।

उन्हे पटाखे कहाँ से मिले ?

किसी को नही पता। दीवाली के दिन वीर ने चार डिब्बे पटाखो के लाकर अपने लडके को दिये और कहा—"ले, इन्हे छुटा।" लडका खुशी से उछल पडा और 'पटाखे, पटाखे' चिल्लाता हुआ मा के पास भाग गया।

× × ×

दीवाली से अगले दिन दो आदमी आये और वीर को ले गये। जब वीर वापस नही लौटा तो उसकी पत्नी अपने लडके को लेकर स्कूल के मास्टर के पास गई और बोली—"हमारी ओर से एक अर्ज़ी लिख दीजिये।"

"वे पुलिस के आदमी थे। तुम्हारे आदमी पर ताला तोडकर मकान में घुसने और चोरी करने का इल्जाम लगाया गया है," अध्यापक महालिंग पिल्ल ने बताया।

"हाय, मैं तो बरबाद हो गई," औरत ने रोते हुए कहा और दोनो हाथो से अपना सिर पीट लिया।

ताड़ी की दूकान मे ख़बर मिलने पर पुलिसवाले सादे लिवास मे अछूतो के मोहल्ले मे गये और कुप को गिरफ्तार कर पुलिस चौकी पर ले गये। उसके बाद पूछताँछ करने के लिए वे फिर अछूतो के मोहल्ले मे गये। उन्हे कूडे में पटाखो के टुकडे मिले और पूछने पर मालूम हुआ कि पटाखे वीर के छोटे लडके ने छुटाये थे। पुलिसवाले सारे टुकडे इकट्ठे करके ले गये।

वीर को चावडियूर ले जाकर वे उससे अपने नियमित ढग से पूछताँछ करने लगे।

"मारिये मत, मै आपको सारी बाते बता दूँगा," वीर ने कहा।

दूसरे दिन तलैयूर के वेकट और चेन्नराय नाम के दो जरायम-पेशा जाति के आदमी गिरफ्तार किये गये। पुलिसवालो ने पडोस के गाँव मे कुप सुनार के घर की तलाशी ली और उससे सवाल-जवाब भी किये। अगले दिन उसके ससुर के घर की तलाशी ली गई और वहाँ से पाँच-सौ रुपये के नोट और चाँदी के वर्तन वरामद हुए।

५.

वीर का लड़का गवाहो के कटघरे मे खडा था।

"तुम्हारे बाप ने तुम्हे पटाखे दिये थे ?" उससे पूछा गया।

"हाँ हजूर, नही हजूर," लडके ने कहा।

"सच-सच बोलो, डरो मत," दारोगा ने सख्ती के साथ कहा।

"मैने बापू से पटाखे माँगे थे, लेकिन उसने मेरे मुँह पर थप्पड मारा और मुझे धक्का देकर नीचे गिरा दिया। मै कसम खाकर कहता हूँ कि मैने पटाखे नही छुटाये," लडके ने कहा।

"असली बात यही है, हजूर। दूसरा गवाह झूठ बोलता है। वे सब झूठे है," इजलास के एक कोने से एक औरत ने चिल्लाकर कहा।

"इसे गिरफ्तार कर लो," दारोगा ने डपटकर हुक्म दिया।

दो सिपाही फौरन आगे बढे और उन्होने वीर की स्त्री को ले जाकर मजिस्ट्रेट की मेज़ के पास खडा कर दिया।

"खबरदार! तू अदालत में गवाही देते वक्त अपने लडके को सिखाने-पढाने आई है?" मजिस्ट्रेट ने धमकाकर कहा और वीर की स्त्री ऐसी कांपने लगी मानो मूछित हो जायगी।

"इसे बाहर ले जाओ," मजिस्ट्रेट और दारोग़ा ने एक साथ आज्ञा दी।

मुकदमे की सुनवाई फिर शुरू हुई। वीर के लडके ने पटाखो के बारे में तीन तरह के बयान दिये।

"बस काफी है," मजिस्ट्रेट ने कहा। इसके बाद दारोगा ने अदालत के सामने एक लम्बा-चौडा भाषण दिया।

एक सप्ताह बाद मजिस्ट्रेट ने वीर और तलैयूर के कैदियो को रिहा कर दिया। दोनो सुनारो को सजा हो गई। तलैयूर के कैदियो के सबध में मजिस्ट्रेट ने अपने फैसले में कहा—"सिर्फ वीर के पुलिस के सामने दिये हुए बयान पर तलैयूर के दोनो कैदियो को सज़ा नही दी जा सकती।"

वीर के खिलाफ भी काफी शहादत नही थी। अछूतो के मोहल्ले में पटाखो के टुकडो का मिलना सन्देहजनक अवश्य था, लेकिन चूंकि इस बात का कोई पक्का सबूत नही था कि कूडे के ढेर में पाये गये टुकडे उन्ही पटाखो के थे जो दोरस्वामी ऐयगर के घर से चोरी गये थे, इसलिए मजिस्ट्रेट ने वीर पर से अभियोग उठाकर उसे मुक्त कर दिया।

## ६.

"वेंकट! पटाखो के पाकिट उस गधे के सिवा और किसी ने नही लिये होगे। उसी की वजह से यह सारी मुसीबत आई," चेन्नराय ने कहा।

"मैने तो उससे उसी वक्त कहा था कि कोई दूसरी चीज़ ले ले, लेकिन वह माना ही नही। जब वह सारे पटाखो को लेकर बाँध रहा था तभी घर मे किसी की आवाज़ आई और हमे फौरन भागना पडा," वेकट ने कहा।

"जो पेशा जिस जाति का नही होता उसे करने से यही नतीजा निकलता है। उस आदमी को साथ लेकर हमने भूल की," चेन्न-राय बोला।

चोरी का पेशा करनेवाले इन आदमियो को इस बात का बिलकुल पता नही था कि वीर का लडका पटाखो के लिए रोया था या वीर ने उसे मारा था।

वीर वापस आ गया। जल में उसे बराबर खाना मिलता रहा था, लेकिन उसके घर मे एक दाना भी नही था। उसकी स्त्री हँडिया लेकर किसानो के मोहल्ले मे दलिया माँगने गई। पति के घर लौटने पर उसे जो खुशी हुई उसे भूख भी नही दबा सकी।

वीर के लडके ने फिर कभी पटाखो के लिए जिद नही की। अगर वह किसी को पटाखे छुटाते देखता तो अनायास भाग खडा होता।

---

# जगदीश शास्त्री का सपना

बावन साल की उम्र मे जगदीश शास्त्री रगून से अपने जन्मस्थान तिरुविडैमरुदूर वापस लौटे। पहली बार वह रगून सुब्बैयर नामक बैरिस्टर के रसोइया बनकर गये, परन्तु जल्दी ही उन्होने भोजन बनाने का काम छोड दिया और वह वहाँ के बसे हुए ब्राह्मणो के धार्मिक सस्कार कराने का काम करने लगे। चूँकि उनका जन्म एक पुरोहित-कुल मे हुआ था इसलिए वह कुछ मत्र उच्चारित कर लेते थे। जिन मन्त्रो का उच्चारण वह नही जानते थे उन्हे वह एक छपी हुई पुस्तक से, जो उन्होने इसी काम के लिए अपने पास रख छोडी थी, पढकर सीख लेते थे।

रसोइया और पुरोहित का काम करके जगदीश शस्त्री ने जो रुपया कमाया उसे वह ब्याज पर चलाने लगे और जल्दी ही धनवान बन गये। अफवाह तो यहाँ तक थी कि उनके पास एक लाख रुपया नकद है।

रगून में रहते हुए जगदीश शास्त्री ने कई बार ब्याह करने की बात सोची, लेकिन उनकी इच्छा पूर्ण न हो सकी। बाद मे अवस्था अधिक हो जाने के कारण उन्होने यह विचार छोड दिया और निश्चय किया कि तिरुविडैमरुदूर में थोडी-सी जमीन खरीद ली जाय और स्वर्ग का रास्ता साफ करने के लिए एक बेटा गोद ले लिया जाय तथा शेष दिन शान्ति के साथ बिताये जायँ। परन्तु तिरुविडैमरुदूर लौटकर

जब वह कुम्भ पर, जो उसी साल बारह वर्ष बाद पडा था, स्नान के लिए कुम्भकोण जाकर ठहरे तो वहाँ एक ऐसी घटना घटी जिससे उनके जीवन का प्रवाह ही बदल गया।

वहाँ वह जिस मकान मे ठहरे थे उसमें नागेश्वरैयर नाम का एक दूसरा आदमी भी अपनी तीन लडकियो के साथ ठहरा हुआ था। वे भी स्नान के लिए ही आये थे। जगदीश शास्त्री को पता चला कि नागेश्वरैयर एक जौहरी है और किसी बीमा कम्पनी का ऐजन्ट भी। वह उत्तरी अरकाट ज़िले का रहनेवाला था, लेकिन बहुत दिनो तक आन्ध्र देश में रह चुका था और उसके बाद कुछ समय तक कलकत्ते मे भी रहा था। उसकी दो बडी लडकियो का ब्याह हो चुका था, परन्तु तीसरी अभी क्वारी थी। उसकी उम्र चौदह वर्ष की थी। वह रूपवती और वीणा बजाने मे बडी निपुण थी। जगदीश शास्त्री की आयु ५२ वर्ष की थी परन्तु थे वह अब भी हट्टेकट्टे। नागेश्वरैयर का कहना था कि कोई भी उन्हे देखकर चालीस वर्ष से अधिक का नही समझ सकता था।

जगदीश शास्त्री को पता चला कि नागेश्वरैयर के पास बीमा कम्पनी का जो रुपया था उसे उसने खर्च कर दिया है और अब उसको पूरा करने का उसे कोई साधन नही मिल रहा है। इसलिए तय हुआ कि जगदीश शास्त्री ६ हज़ार रुपया देकर नागेश्वरैयर को अपना ऋण चुकाने मे सहायता दें और शीघ्र ही तिरुपति में उनका नागेश्वरैयर की छोटी लडकी से चुपचाप ब्याह हो जाय। रुपया दे दिया गया और ब्याह भी हो गया। नागेश्वरैयर किसी आवश्यक कार्य से कलकत्ते लौट गया और जगदीश शास्त्री को बडा आश्चर्य हुआ जब उन्हे उसका कोई समाचार नही मिला। लेकिन इस बात पर ध्यान न देकर वह अपनी युवती पत्नी के साथ रगून चले गये।

२.

दो वर्ष भी न बीते होंगे कि जगदीश शास्त्री की पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया। जगदीश शास्त्री ने उसका बडे लाड-प्यार से लालन-पालन किया जैसा कि सभी बडे-बूढे अधिक आयु में पुत्र उत्पन्न होने पर करते है।

दो-तीन साल और बीतने पर उनकी पत्नी के चरित्र के विषय में इधर-उधर बदनामी की बातें कही जाने लगी। ये बाते शास्त्री के कानो में पडी, लेकिन इस विषय में उन्होने अपने को बिलकुल लाचार पाया। एक दिन घर लौटने पर उन्होने देखा कि उनकी पत्नी अपनी वीणा, गहने और कैशबक्स के सारे रुपये लेकर चम्पत हो गई है। इससे बूढे शास्त्री को बडा क्षोभ हुआ।

लडका अब सात साल का था और स्कूल में पढता था। उसकी शिक्षा और कुछ चुने हुए मित्रो के घर पुरोहिताई के काम में व्यस्त रह-कर शास्त्री अपना दु ख बहुत-कुछ भूल गये थे।

स्कूल की शिक्षा सफलतापूर्वक समाप्त कर रामचन्द्र विश्वविद्यालय मे भरती हुआ और उन्नीस वर्ष की उम्र में उसने बी० ए० की डिग्री ले ली। सन् १९३० ई० मे बाप-बेटा अपने देश लौट आये।

जगदीश शास्त्री के एक चचेरे भाई थे। उनका नाम सीतारामैयर था और वह एक बडे सफल वकील थे। वह अपने काम में इतने निपुण समझे जाते थे कि जगह खाली होने पर उनके एडवोकेट-जनरल बनने की आशा थी। स्वभावत जगदीश शास्त्री उन्ही के यहाँ आकर ठहरे और सीतारामैयर की पत्नी ने रामचन्द्र को अपनी लडकी पार्वती के लिए उपयुक्त वर समझा। "इससे अच्छा वर हमें और कहाँ मिल सकता है? बी० ए० तो वह कर हो चुका है, हम उसे आई० सी० एस० की

परीक्षा के लिए इगलैंड भेज सकते हैं," उसने अपने पति से कहा और सीतारामैयर ने भी इसका समर्थन किया। लेकिन बीच मे एक रुकावट थी—सारदा कानून। लडकी अभी ग्यारह साल की थी और कानून को बिना तोडे उसका ब्याह फौरन नही हो सकता था। किन्तु जिस व्यक्ति को एडवोकेट-जनरल बनने की आशा थी वह कानून के विरुद्ध कैसे काम कर सकता था ?

सीतारामैयर की पत्नी ब्याह को टालकर इतने अच्छे जामाता के हाथ से निकल जाने देने का खतरा मोल लेना नही चाहती थी। उन्होने इस बात पर ज़ोर दिया कि अगर ब्याह अभी नही किया जा सकता तो कम-से-कम दोनो ओर से पक्की लिखा-पढी हो जानी चाहिए। अत आपस मे लिखा-पढी हुई और तय हुआ कि लडके को आई० सी० एस्० के लिए इगलैंड भेजने का सारा खर्च सीतारामैयर करेंगे और तीन वर्ष बाद उसके वहाँ से लौटने पर ब्याह हो जायगा। लडकी काली थी इसलिए रामचन्द्र को उसके प्रति कोई अनुरक्ति नही थी। फिर भी अपने पिता की इच्छा को ध्यान मे रखकर और इगलैंड जाने की उत्सुकता के कारण उसने कोई आपत्ति नही की।

## ३.

रामचन्द्र के इगलैंड चले जाने के बाद जगदीश शास्त्री रगून वापस चले गये, लेकिन वहाँ बिना अपने बेटे के अकेले रहने के कारण उनका चित शात नही रहता था। अक्सर उन्हे अपनी स्वर्गीय पत्नी की याद आ जाती थी। इस मानसिक अशाति का प्रभाव उनके शरीर पर भी पडा और धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य गिरने लगा। इसे शारीरिक रोग समझकर उन्होने अपने को डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने विश्वास दिलाया कि आपके स्वास्थ्य मे कोई खराबी नही है,

लेकिन आपको अपने देश लौट जाना चाहिए। जगदीश शास्त्री को यह सलाह अच्छी लगी और वह रगून को सदा के लिए छोड़कर भारत चले आये।

स्टीमर मे एक अनहोनी घटना घटी। जगदीश शास्त्री ने सेकन्ड क्लास मे एक महिला को देखा जो उनकी खोई हुई पत्नी से मिलती-जुलती थी। थोडा-बहुत अन्तर तो अवश्य था, परन्तु उसे उन्हे छोड़कर गये भी तो पन्द्रह वर्ष से अधिक हो गये थे। स्टीमर के मद्रास पहुँचते-पहुँचते उन्हे इस बात का करीब-करीब पूरा विश्वास हो गया कि यह मेरी पत्नी ही है। बन्दरगाह पहुँचने पर जब वह महिला अपने असबाब के साथ उतरने लगी तो वह उसके सामने जाकर खडे हो गये। एक क्षण तक वे एक-दूसरे को देखते रहे। फिर उस महिला ने कहा—"मै अगप्पनायक गली मे ६१४ नम्बर के मकान मे ठहरी हुई हूँ, अगर आप बातचीत करना चाहते है तो वहाँ आकर मिल सकते है।" इस पर शास्त्री हँस पडे और बोले—"तो आखिर तुम्ही हो, मैने ठीक समझा था।"

"हाँ, मै ही हूँ," उसने भी हँसकर उत्तर दिया।

## ४.

दो दिन तक शास्त्री अपने सम्बन्धी सीतारामैयर के घर रहे और वहाँ उनकी बडी शान के साथ खातिरे हुई। उन दिनो दक्षिण में इस बात की चारो ओर चर्चा थी कि अछूतो को मदिर-प्रवेश की स्वतन्त्रता दी जानेवाली है। "सनातनधर्म नष्ट हो गया," सीतारामैयर के घर में सबने कहा। शास्त्री का भी यही विचार था।

"सारदा बिल के पेश होने पर आप लोग चुप क्यो बैठे रहे? यह उसी का फल है," सीतारामैयर की पत्नी ने कहा।

"बेकार की बातें मत करो, उस बात का इससे क्या सम्बध ?" सीतारामैय्यर बोले।

"नही, उनका कहना बिलकुल ठीक है," शास्त्री ने कहा। एक दूसरे वकील ने, जो सीतारामैयर के नीचे काम सीखा करता था, नम्रता के साथ कहा—"क्या आपको रगून जाने के लिए समुद्र पार नही करना पडा ? इस बात से भी मन्दिर-प्रवेश का मार्ग साफ ही होता है।"

"इन अललटप बातो का क्या मतलब ? क्या जीविका कमाने के लिए रगून जाना और पवित्र मन्दिरो को अछूतो के लिए खोल देना एक ही बात है ?" जगदीश शास्त्री ने अधीरता के साथ पूछा।

"शास्त्रो में केवल चार वर्णों का उल्लेख है। कोई पाँचवा वर्ण तो होता नही, अगर हम अछूतो की गिनती चौथे वर्ण में करले तो इससे नुकसान क्या होगा ?" छोटे वकील ने पूछा।

'आप लोग शास्त्रो के अनुवाद भर पढकर पूर्ण पडितो की तरह बाते करने लगते है। चार वर्ण तो आरम्भ में ईश्वर ने बनाये थे, लेकिन बाद में दो वर्णों के मिलने से नये अपवित्र वर्ण उत्पन्न हो गये। चाडाल इन्ही अनियमित विवाहो के फल है," जगदीश शास्त्री ने कहा।

"ऐसा मालूम होता है कि ब्रह्मा को अपने काम में सफलता नही मिली। क्या आपके कहने का मतलब यह है कि अछूत कही जानेवाली जाति के सभी लोग चरित्रहीन ब्राह्मणियो की सन्तान है ?" छोटे वकील ने पूछा।

"इन बातो की गहराई तक जाने से कोई लाभ नही। हम उन्हें पीढियो से चाडाल मानते आये है। हम अब उनकी पहचान के सबूत नही माँग सकते। हम ब्राह्मण है, इसी बात का क्या प्रमाण है ?" जगदीश शास्त्री ने उत्तर दिया।

कचहरी जाने का समय हो जाने के कारण सभा विसर्जित हो गई और जगदीश शास्त्री ६१४ अगप्पनायक गली के लिए चल पडे।

## ५.

उसी दिन शाम को जगदीश शास्त्री सेन्ट्रल स्टेशन पर बनारस का टिकट लेते हुए दिखाई दिये। सुबह की अपेक्षा उस समय उनकी आयु दस वर्ष अधिक मालूम हो रही थी।

"आप किसी रास्ते से जाना चाहते है, बाबा ?" टिकट बाबू ने पूछा।

"कोई भी रास्ता हो, लेकिन हो सबसे पास का। मुझे जल्दी-से-जल्दी गगाजी मे नहाकर अपने पाप धोने है," जगदीश शास्त्री ने कहा।

जगदीश शास्त्री के इस वैराग्य का कारण वे बातें थी जो उन्हे ६१४ अगप्पनायक गली में अपनी पत्नी से मालूम हुई थी। जगदीश शास्त्री का ससुर न तो ब्राह्मण था न जौहरी। उसका असली नाम परियारी नायक था। एसिस्टेंट एकाउटेन्ट-जनरल त्यागराजैयर उसे अपने साथ कलकत्ते ले गये थे, जहाँ उसकी बाल काटने की एक दूकान थी। इस पुश्तैनी पेशे में लगे-लगे ही उसने एक अनाथ विधवा को घर में पत्नी के रूप मे रख लिया था और जगदीश शास्त्री की पत्नी उसीसे जन्मी थी। अपनी लडकी के ब्याह के बाद वह किसी फौजदारी के षडयन्त्र मे फँस गया और उसे सात साल की जेल हो गई। वह अब भी लाहौर की जेल में बद था।

जगदीश शास्त्री की पत्नी उन्हे रगून में छोडने के बाद इधर-उधर घूमती फिरी और अन्त मे वह एक सिनेमा कम्पनी मे भरती हो गई और वहाँ उसने खूब धन कमाया। उसने शास्त्री को बताया कि मुझे अब

किसी बात की कमी नही, मै खूब खुश हूँ और आपसे किसी तरह की सहायता लेना नही चाहती।

"मैने और मेरे पिता ने मिलकर आपको ठगने का जाल रचा था ; हमें केवल भगवान् ही क्षमा कर सकता है," उसने कहा।

इन सब बातो के होते हुए भी जगदीश शास्त्री अपनी पत्नी की प्रशसा किये बिना नही रह सके। उसके प्रति उनके मन में पहले से भी अधिक प्रेम उमड पड़ा और वह बच्चे की तरह रोने लगे।

फिर उन्होने कहा—"पता नही यह जात-पाँत बनाई किसने ? भगवान् ने ऐसा कभी नही किया होगा। चलो, पिछली बातो को भूलकर रगून चलें और वहाँ आनन्द से रहे।"

"ऐसी बातें कहने से कोई लाभ नही। मै तो आपको स्पर्श करने योग्य भी नही हूँ। मेरा पाप तो सात पीढियो तक नही धुल सकता। जाइये, गगाजी नहाकर मुझसे ब्याह करने का पाप धो आइये," शास्त्री की पत्नी ने कहा। जब शास्त्री घर से बाहर निकले तो उन्हे बडा भय मालूम हुआ। उन्हे अपने लडके का ध्यान आया जो उस समय इगलैड में पढ रहा था और कुछ ही महीनो में वापस आनेवाला था। "उसका ब्याह होना है, अगर किसीको पता चल गया कि वह इस कुलटा का लडका है तब ? इस औरत की जाति क्या है ? और इस लडके की जाति क्या है ? सीतारामैयर और उनकी पत्नी क्या कहेंगे ?" शास्त्री का सिर चकराने लगा। वह लडखडाते हुए बडी कठिनाई से स्टेशन तक पहुँचे।

रेल-यात्रा की दूसरी रात को शास्त्री के साथवाले यात्रियो ने उन्हे बूढा और कमज़ोर समझ तरस खाकर लेटने की जगह

दे दी। वह थके हुए थे और जल्दी ही गहरी नींद में सो गये। सोते-सोते उन्हे एक भयानक सपना दिखाई दिया।

"रामचद्र इगलैंड से वापस आ गया है। अब वह एक सुन्दर ब्राह्मण का लडका नही लगता। शापग्रस्त त्रिशकु की तरह वह कुरूप होकर घर आया है और पूरी तरह से एक अछूत का लडका बन गया है। वह आई० सी० एस्० नही बल्कि सिर्फ एक कुली है। परन्तु शास्त्री उसे अब पहले से भी अधिक प्रेम करने लगे है।"

उन्होने देखा कि सीतारामैयर और उनकी पत्नी ने उन्हे घर से बाहर निकाल दिया है। माली, ड्राइवर और भगी सब उन्हे झिडकियाँ दे-देकर वहाँ से भगा रहे हैं। गली में भीड इकट्ठी हो गई, जिसमे से शास्त्री अपने लडके के साथ किसी तरह निकल भागे।

अब शास्त्री अपने गाँव में पहुँच गये, लेकिन वहाँ सबको पता लग गया कि उन्होने एक अछूत लड़के को अपने घर में शरण दे रखी है। लोगो की भीड इकट्ठी हो गई और उन्होने उन्हे खदेडकर ब्राह्मणो की गली से बाहर भगा दिया।

शास्त्री अपने बेटे के साथ फिर मद्रास पहुँचे। दोनो एक बस में चढे। चढ़ते ही कडक्टर ने पूछा—"यह लडका किस जाति का है?" गले में माला पहने हुए एक बूढे आदमी ने चिल्लाकर कहा—"यह लड़का चाडाल है, अछूत है।" "इसे बाहर फेंक दो," बस में बैठे हुए सब आदमियो ने चिल्लाकर कहा। बसवाले ने शास्त्री को घसीटकर बाहर खीचा और बाप-बेटा एक-साथ नीचे कूदे। इस अपमान को सह न सकने के कारण वे एक गली में जा छिपे।

इसके बाद दृश्य बदला। वे मैलापुर में सीतारामैयर के घर

पहुँचे। "क्या आप मेरे लडके को अपने दफतर मे क्लर्क नही रख सकते ?" शास्त्री ने सीतारामैयर से हाथ जोडकर कहा।

"यह कैसे हो सकता है ? मेरी पत्नी को आपत्ति होगी," सीता-रामैयर ने कहा और उसी समय उनकी पत्नी भी अन्दर से आ गई। जगदीश शास्त्री भय से काँपने लगे।

"हमारे दफतर मे अछूत बैठकर काम करे ? क्या ही अच्छा विचार है आपका ! हमे उसकी ज़रूरत नही। हमारा रुपया फौरन वापस करो," सीतारामैयर की पत्नी ने कहा और एक दस्तावेज़ दिखाया। यह वही कागज़ था जिसपर रामचन्द्र के ब्याह का इकरारनामा लिखा गया था। सीतारामैयर रामचन्द्र के लिए पन्द्रह हज़ार रुपये खर्च कर चुके थे। उन्होने शास्त्री से यह रकम वापस करने को कहा।

दृश्य फिर बदला। पीले वस्त्र पहने और हाथ में त्रिशूल लिए एक महन्त मृगछाला पर बैठे दिखाई दिये। "स्वामी जी ! क्या आप मेरे लडके की शुद्धि कर उसे ब्राह्मण बना सकते है ?" शास्त्री ने उनसे पूछा।

"असम्भव, एक जन्मजात चाडाल की शुद्धि की कोई आशा नही," स्वामी ने मधुर वाणी मे कहा। "उसकी जाति तो उसी समय मिट सकती है जब उसका शरीर जलकर भस्म हो जाय। यदि वह इस जन्म मे अपनी जाति के धर्म का पूर्ण रूप से पालन करे तो दूसरे जन्म मे वह उच्च जाति में जन्म लेगा। फिर भी ब्राह्मण का जन्म पाने से पहले तो उसे कई जन्म लेने पडेगे।"

"बदमाश ! बडा सन्यासी बना है ? क्या तू उस विश्वासघात के मामले को भूल गया जिसमे तुझे दण्ड मिला था ? क्या तूने झूठी दर-ख्वास्तें नही दी थी ? क्या तूने किराये पर ली हुई चीज़े नही बेच

डाली थी ? तुझे तो जेल होनी चाहिए थी, लेकिन तू जुर्माना देकर ही छूट गया था। क्या इन बातो में कोई पाप नही है ?" शास्त्री ने चीखते हुए कहा।

सन्यासी की आँखें गुस्से से लाल हो गई। 'अछूत कही का, मैं तुझे श्राप देता हूँ। तूने मेरी निन्दा की है और एक सन्यासी को उसके जीवन की पहली बातें याद दिला दी है," सन्यासी चिल्लाकर बोला और डडा लेकर मारने को दौडा। शास्त्री भागे और उनका सिर गली के फाटक से टकराया।

रेल की गद्दी से लुढककर नीचे गिरने से बूढे शास्त्री की आँखें खुल गई और उनका सपना टूट गया।

दूसरी रात को शास्त्री को अपने लडके के बारे में और भी स्वप्न दिखाई दिये। आँखें बद करते ही उनका ताँता-सा लग गया।

शास्त्री अपने बेटे के साथ फिर इधर-उधर मारे-मारे फिर रहे थे। दोनो को भूख लगी और वे एक कॉफी-घर मे घुसे। बैरा ने उनके सामने दो पत्तो पर चावल के केक परस दिये। वे खाना शुरू ही करने-वाले थे कि पास में बैठे हुए एक आदमी ने पूछा—"यह लडका कौन है ?" शास्त्री ने डर के मारे कोई उत्तर नही दिया। इतने मे एक आवाज आई— 'यह चाडाल है" और तब सब के सब एक-साथ चिल्ला उठे—"यह अछूत है, इसे बाहर निकाल दो।" बैरे ने लडके से चावल का केक छीनकर कूडे के बर्त्तन में फेंक दिया और लडके को धक्का देकर बाहर निकाल दिया। शास्त्री उसके पीछे "मेरे बेटे, मेरे बच्चे" कहते हुए भागे।

कुम्भकोण के रायबहादुर नरसिंहाचारियर दिल्ली असेम्बली के मेम्बर थे। शास्त्री ने उनसे कहा—"जब आप दिल्ली जायँ तो कृपा

कर मेरे लड़के को अपना क्लर्क बनाकर ले जायें। वह बी० ए० पास कर चुका है, परन्तु मेरे पाप के कारण वह अचानक अछूत बन गया है।"

"नही शास्त्री ! यह ठीक है कि दिल्ली में हम जातपाँत अधिक नही मानते। लेकिन एक अछूत को हम अपने घर मे कैसे रख सकते हैं ? अगर वह शूद्र होता तब भी कोई बात नही थी," नरसिंहाचारियर ने कहा।

"तो क्या आप उसे शुद्धकर शूद्र बना सकते है ?" शास्त्री ने उत्सुकता से पूछा।

"मै शूद्र कैसे बन सकता हूँ ? आप तो कह रहे थे कि मै अपवित्र जाति का हूँ," लड़के ने कहा।

"हाँ, यह सच है। क्या इन शास्त्रो को जलाया नही जा सकता ?" शास्त्री ने चिल्लाकर कहा।

'कोई बात नही पिता जी, मै रेल का कुली बन जाऊँगा, वहाँ किसी को आपत्ति नही होगी," रामचन्द्र बोला।

"यह भी कोशिश कर देखो," शास्त्री ने दुखी होकर कहा।

रामचन्द्र फौरन रेल का कुली बन गया। पहली बार के असबाब ढोने मे उसे चार आने पैसे मिले। लेकिन दूसरे दिन जब वह किसी आदमी का ट्रक और बिस्तर उठाकर अपने सिर पर रखनेवाला था तभी एक दूसरा लडका दौडता हुआ आया और चिल्लाया—"साहब, साहब, यह अछूत का लडका है।"

उस ट्रक और बिस्तर का मालिक एक ब्राह्मण अफसर था। उसने कहा—"क्यो बे, तूने मेरे असबाब को छूने की कैसे हिम्मत की ?" और अपनी छतरी की नोक से लडके की कमर खोदी। रामचन्द्र ट्रक और बिस्तर को नीचे डालकर अपराधी की तरह भाग खड़ा हुआ।

आकाश से 'चाडाल, चाडाल' की ध्वनि आ रही थी

अपने अभिशापित लडके को लेकर शास्त्री फिर चले। आकाश के किसी भाग से "चाडाल, चाडाल" की ध्वनि बराबर आ रही थी। जब वृक्षो की पत्तियाँ खडखडाती तो उनमे से भी वही ध्वनि सुनाई देती थी। बूढे शास्त्री थककर चूर हो गये, उनकी टाँगो में दर्द होने लगा और प्यास के मारे उनका हलक सूख गया। लेकिन पास में कोई तालाब या कुआँ दिखाई नही दिया।

"मैं बहुत प्यासा हूँ बेटा, थोडा सा पानी ले आओ," शास्त्री ने कहा।

"मुझे पानी कौन देगा, पिता जी ?" रामचन्द्र ने कहा।

"ठीक है, मेरे बच्चे। न तो कोई हमे पानी देगा, न कही से लेने ही देगा। हमें तो मरना ही पडेगा।"

"हम मरेंगे क्यो ? उठिये, पिता जी, हम इगलैड चलेंगे। वहाँ जातपात या छुआछूत का कोई झगडा नही।"

"हम इगलैड कैसे जा सकते है ? अभी तो हम वृदाचल में ही है," शास्त्री ने कहा।

"देखिये, सामने एक सीढियोवाला कुआँ है। चलिये हम वहाँ उतर-कर पानी पियें," यह कहकर लडका अपने पिता को उस ओर ले चला। भय से काँपते हुए वे सीढियो से नीचे उतरे। वहाँ कोई नही था, इस-लिए दोनो ने जीभरकर प्यास बुझाई। ऊपर चढते समय उन्हे एक बूढी औरत मिली। उन्हें देखकर वह चिल्लाई—"जल्दी आओ, जल्दी आओ; किसी चाडाल ने आकर हमारे गाँव का कुआँ अपवित्र कर दिया। दुष्ट कही का !"

फौरन भीड जमा हो गई। गुस्से में भरकर सब लोग लडके पर टूट पडे। शास्त्री लडके का हाथ पकडकर एक दूर के मन्दिर की ओर भागे।

"हे भगवान् !" हमारी रक्षा तुम्ही कर सकते हो, उन्होने चिल्लाकर कहा। लेकिन जब वह मन्दिर के पास पहुँचे तो उनके मन में एक शका हुई और वह रुक गये।

"भगवान् ! सब कहते है कि मेरा लडका चाडाल है। क्या हम तुम्हारे मन्दिर में भी नही आ सकते ? तुम्हारे सिवा और कौन हमें शरण दे सकता है ?" उन्होने रोकर कहा।

"तुम बिना किसी डर के अन्दर आ सकते हो, मै सबका माता पिता हूँ। मै कोई भेदभाव नही करता," अन्दर से एक आवाज़ आती हुई नाई दी। शास्त्री अपने लडके के साथ अन्दर चले गये। "तो आखिर हमे शरण और रक्षा की जगह मिल ही गई," उन्होने कहा।

उसी समय एक पुरोहित चिल्लाता हुआ आया—"हे भगवान् ! देवता के घर में चाडाल घुस आया।" बहुत-से दूसरे आदमी भी आ पहुँचे और बाप-बेटे के चारो ओर तुरन्त ही भीड इकट्ठी हो गई।

"इस अछूत लडके को ढिठाई तो देखो ! मारो इसे ठोकर लगाओ," वे चिल्लाये।

"यह चाडाल नही है, यह मेरा बेटा है," शास्त्री ने चिल्लाकर कहा।

उसी समय कही से शास्त्री की पत्नी आ पहुँची। "यह झूठ है, बूढे का विश्वास मत करो, वह मेरा बेटा है, दोगला है, चाडाल है," उसने चिल्लाकर कहा।

"चुडैल ! विश्वासघातिनी ! बदजात !" शास्त्री ने मद स्वर मे कहा। फिर वह भीड की तरफ मुँह करके खडे हुए और बोले—"भगवान् ने स्वय अपने श्रीमुख से हमे अन्दर आने की अनुमति दी है, क्या आपने नही सुना ?"